लाटरी गाइड



देहाती पुस्तक भंडार
चावड़ी बाजार दिल्ली-६

॥ कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

आपकी लाटरी कब निकलेगी

आपकी भी लाटरी निकल सकती है

लाटरी गाइड

भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न पौरुषम

अर्थ—सब जगह भाग्य ही फलता है। विद्या और पुरुषार्थ भाग्य के बिना नहीं फलते।

सर नविश्ते मा बदस्ते खुद नविश्त।
खुशनवीस अस्तो नः साहब बदनविश्त॥

गर रवद सर बर ना गर्दद सर नविश्त।
ई सखुन बायद बा आबे जर नविश्त॥

"हे भगवान्! मेरे मस्तक की भाग्य रेखा में तुमही स्वयं अपने हाथ से लिखो क्योंकि तुम सुन्दर लिखने वाले हो और तुम्हारे हाथों से खराब लिखा ही नहीं गया।

"सर रहे या न रहे किन्तु सर का लिखा मिटता नहीं है। यह प्रवचन सोने के पानी से लिखने योग्य है।"

सकल पदारथ हैं जग माहीं।
भाग्य हीन नर पावत नाहीं॥

आपकी लाटरी कब खुलेगी ?

१—यदि आपकी जन्मकुण्डली में पंचम भाव में चन्द्रमा विराजमान हो और उसे शुक्र देखता हो तो आपको लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होगा।

२—यदि आपकी जन्मकुण्डली में गुरु पंचम भाव में विराजमान हो तथा जन्म-कुण्डली में लग्न का स्वामी बलवान हो तो आपको लाटरी आदि से आक-स्मिक धन प्राप्त होगा।

३—यदि आपकी जन्मकुण्डली में धनेश व लग्नेश चतुर्थ भाव में विराजमान हों और चतुर्थ भाव का स्वामी शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से युक्त अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो आपको लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होगा।

४—यदि आपकी जन्मकुण्डली में धन भाव का स्वामी बलवान हो एवं आठवें भाव में विराजमान हो तो आपको निश्चय लाटरी आदि से आकस्मिक धन मिलेगा।

५—यदि आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह धन भाव में विराजमान हो तो जमीन में गड़ा धन अथवा लाटरी द्वारा आकस्मिक धन प्राप्त होगा।

नोट—इससे अधिक विशेष जानकारी के लिए लाटरी मिलेगी या नहीं, मिलेगी तो कब और किस प्रदेश की मिलेगी—इसके लिए अपनी जन्म पत्री ३१) इक्कतीस रुपये दक्षिणा सहित भेजें।

पता—पंचांगकर्त्ता पं० रामगोपाल शास्त्री
मु० पो०—पैंगांव जिला मथुरा (उ० प्र०)

लाटरी का प्रथम पुरस्कार आपका भी निकल सकता है।

आपकी लाटरी कब निकलेगी ?

लाटरी गाइड (लाटरी विज्ञान)

आपकी या आपकी धर्मपत्नी की लाटरी कब निकलेगी—यह सोच आपको हर समय लगा रहता होगा। आपने किसी भी प्रान्त (Province) की लाटरी का टिकट क्यों न खरीदा हो, लाटरी आपके नाम निकल सकती है। आशा और विश्वास पर दुनिया कायम है। इस पुस्तक में ऐसे-ऐसे उपाय बताये गए हैं जिनसे भगवान चाहेगा तो भाग्य का पासा पलट कर आप लखपतियों की गिनती में आ सकते हैं और शान के साथ जीवन व्यतीत कर सकते हैं। कमी आप में भी कोई नहीं है। कौन नहीं चाहता कि मेरे पास इस नये युग की समस्त आराम देने वाली चीजें न हों। पुस्तक खरीदिये और अपने भाग्य को चमकाइये।

●

लेखक

ज्यो० भू० पंचांगकर्ता पं० रामगोपाल शर्मा शास्त्री

मु० पो०—पैगांव, जि० मथुरा (उ० प्र०)

1936 में स्थापित, विश्वविख्यात, चिर-परिचित, पुराना प्रकाशक,

पुराना ही नाम

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

फोन : 261030

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)
चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला,
दिल्ली-110006 फोन : 261030

लेखक :
पं० रामगोपाल शास्त्री

Latest Revised Edition

मूल्य :
स्वदेश में : 25/-
विदेश में : £ 4 (चार पौंड) या
$ 8 (आठ डालर)

आप बड़े भाग्यवान हैं

आइये किस्मत आजमाइये और लाखों रुपये की लाटरी का पहला इनाम प्राप्त कीजिये ।

भाग्य के लिए पग बढ़ाइये । प्रतिदिन आप न्यूजपेपरों में पढ़ते हैं कि उक्त जगह का पंडित, लाला, चौधरी, पनवाड़ी, धोबी, तेली, हरिजन, रिक्शा वाला, तांगेवाला, किसान, वैद्य, टीचर, लिपिक या चपरासी लाटरी के टिकट से लखपती बन गया।आपको भी यह सोच विचार हर समय रहता होगा कि मेरी अथवा मेरे परिवार की या मेरे मित्र, सम्बन्धी की लाटरी कब खुलेगी अर्थात् मुझे लाटरी का इनाम कब प्राप्त होगा, काम धंधे में भी मन नहीं लगता है और यह संशय बराबर बना रहता है । घबराइये नहीं, आप भी लाटरी के अधिकारी हैं । मगर आपके भाग्य में कहीं कुछ कमी है । क्या कारण है कि आपसे एक नम्बर पहले का तथा एक नम्बर बाद का लाटरी का इनाम प्राप्त कर गया और आप देखते ही रह गये । भाइयो आपके भाग्य में सब कुछ है चाहे आप कहीं पर रहते हों, देहात हो या शहर उस परम पिता परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखो रातों रात वारे न्यारे कर देगा । क्या आप नहीं चाहते कि मेरे पास नये रंगीन जमाने की सभी चीजें हों खूब सूरत बंगला हो, फीयेट गाड़ी हो, टेलीवीजन आदि नव युग की सभी आवश्यकीय एवं आरामदायक वस्तुएं हों । यदि हम आपकी यह अभिलाषा पूरी कर दें तो आपको आज के हजार वर्ष पूर्व पौराणिक, सात्विक एवं धार्मिक विचार रखने होंगे । हम तो सिर्फ परामर्श ही दे सकते हैं बाकी सब ईश्वराधीन है । पुस्तक मंगाने से पूर्व अपने इष्ट देव की आराधना अवश्य करें चाहे पांच मिनट ही करें ।

विनम्र निवेदन

इस असार संसार सागर में सभी मनुष्य सुख चाहते हैं और अपनी शक्ति के अनुसार सुख का साधन बनाते हैं। वह सुख का साधन बिना लक्ष्मी के बनना असम्भव होता है। सबकी कामना यही रहती है कि मेरे पास लक्ष्मी का अटल भंडार रहे और लक्ष्मी अपने भाग्य के अनुसार ही मिलती है। जैसा कि प्रमाण है "यद्धाला निज भाल पट्ट लिखित जनमांजितो क; फलम् कि जो ब्रह्मा ने आपके भाग्य में लिख दिया है; इसे मिटाने की शक्ति किसी में नहीं है। जिसके भाग्य में लक्ष्मी का चामत्कारिक सुख होता है वह उसी के पास जाती है और उसी का सितारा चमकता है। वह सितारा जीवन में कब और कैसे चमकेगा—यह जानने के लिए ज्योतिष शास्त्र का सहारा लिया जाता है। किसी का किसी अवस्था में, खेती के व्यवसाय द्वारा तथा किसी अन्य अवस्था में किसी व्यापार और दूसरे व्यवसाय द्वारा सितारा चमक उठता है। किसी का लाटरी द्वारा तथा किसी का शेयर आदि किसी अन्य अवस्था में चमक उठता है। प्रस्तुत पुस्तक में लाटरी आदि द्वारा भाग्य का सितारा कब चमकेगा यह लिखने का प्रयास किया गया है। प्राचीन आचार्यों ने जिसे हम आज लाटरी जुआ, रेस आदि कहते हैं, उसे आकस्मिक धन प्राप्त होने की संज्ञा दी है। इसी से प्रस्तुत पुस्तक में अधिकतर आकस्मिक धन का प्रयोग किया है। आकस्मिक धन का अर्थ है अचानक धन लाभ होना। लाटरी द्वारा अचानक ही धन-लाभ होता है इसी से लाटरी को आकस्मिक धन-लाभ होने की संज्ञा दी गई है। प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष शास्त्र के आधार पर लाटरी से धन मिलने की दिशा व धन मिलने के योग जन्मकुण्डली व प्रश्न कुण्डली द्वारा लिखे गए हैं, जिन पर ध्यान देकर पाठकगण अपनी इच्छा पूर्ति में कहा तक सफल या असफल रहेंगे—जानकारी कर सकते हैं।

पुस्तक में आकस्मिक धन प्राप्त होगा, होगा या नहीं, होगा तो कब तक, जन्मकुण्डली द्वारा आकस्मिक धन प्राप्ति के योग, धनवान योग, दृष्टि योग आदि विषय दिया गया है। अपनी राशि द्वारा प्रश्न काल के साथ लाटरी आदि द्वारा धन-प्राप्ति होगी या नहीं—जानना तथा लाटरी आदि द्वारा धन प्राप्ति के अनेक तांत्रिक तथा अन्य उपाय दिये गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सभी को समान रूप से सहायक सिद्ध होगी—ऐसी आशा करना हमारा सर्वथा उचित है। यदि इससे पाठकों ने थोड़ा भी लाभ उठाया तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा

प्रस्तुत पुस्तक में प्रमादवश या अज्ञानवश कहीं त्रुटि रह गई हो तो विद्वजन क्षमा करें।

पं० रामगोपाल शास्त्री

प्रकाशकीय निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक 'लाटरी गाइड' का यह तृतीय संस्करण पाठकों के हाथों में है। पुस्तक कहां तक सफल रही इसके सम्बन्ध में हमें सिर्फ इतना ही कहना है कि आशा के विपरीत प्रथम संस्करण हाथों हाथ समाप्त हो गया और पाठकों के अनुरोध पर हम द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने को विवश हो गए। साथ ही पाठकों की इच्छा को दृष्टिगत रखते हुए इस तृतीय संस्करण को संशोधित एवं परिवर्धित कर दिया गया है। पुस्तक आपके समक्ष है, इसलिए पुस्तक के सम्बन्ध में हम कुछ और न कहकर एक पाठक का पत्र नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है पाठकगण प्रथम संस्करण की भांति तृतीय संस्करण को भी अपनाकर हमें प्रोत्साहित करेंगे।

प्रकाशक—

श्रीमान शास्त्री जी!

सादर अभिवादन!!

निवेदन है कि मैंने आपके द्वारा लिखित 'लाटरी-गाइड' देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली से मंगवाई थी जो कि वास्तव में बड़ी अच्छी पुस्तक है और हर लाटरी प्रेमियों के लिए अमूल्य वरदान है।

गुलाब राय
अत्तर्रा, जिला बांदा

असली प्राचीन हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ

1. असली प्राचीन हस्तलिखित भृगुसंहिता महाशास्त्र (भा०टी०) पुराण साइज (20 × 30/6) पत्राकार, हस्तलिखित पृष्ठ 1410, संपूर्ण 14 खण्ड न्योछावर **501/-** (पाँच सौ एक रु०) डाकखर्च पृथक्।
2. असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् मन्त्र महार्णव (भा० टी०) 20 × 30/6 (पुराण साइज), हस्तलिखित 360 पृष्ठ का अभूतपूर्व ग्रन्थ। न्योछावर **171/-** रुपये। डाकखर्च पृथक्।
3. असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् यन्त्र महार्णव भेंट **171/-**
4. असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् तन्त्र महार्णव भेंट **171/-**
5. वृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान— मूल्य **163.60** रुपये
6. असली प्राचीन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शिरोमणि— न्योछावर **321/-** रु०
7. अ. प्रा. यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र महाशास्त्र (दोनों भाग) न्योछावर **201/-**
8. असली प्राचीन हस्तलिखित भृगुसंहिता कुण्डली रहस्य
   विक्रमी संवत् **1940** से संवत् **2041** अर्थात् अब से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व जन्मे तथा **5** वर्ष आगे जन्म लेने वाले स्त्री-पुरुषों की कुण्डलियों का विस्तृत विवरण। साथ ही दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा की जानकारी, जीवन में घटने वाली विशेष घटनायें तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान का शास्त्रीय विवेचन इस हस्तलिखित ग्रन्थ में दिया है। 20 × 30/6 (पुराण साइज), हस्तलिखित लगभग 1000 पृष्ठ। भेंट **1001/-** रुपये
9. असली प्राचीन हस्तलिखित रावण संहिता - भेंट **1011/-** रुपये
10. अ० प्रा० हस्तलिखित वृहद् यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र महार्णव भेंट **511/-**
11. असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् मन्त्र महोदधि—भेंट **111/-** रु०
12. असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् संहिता— भेंट **501/-** रुपये
13. अ० प्रा० हस्तलिखित सूर्य्य संहिता महाशास्त्र— भेंट **511/-** रु.
14. असली प्रचीन हस्तलिखित शिव संहिता— भेंट **101/-** रुपये
15. असली प्राचीन हस्तलिखित वाशिष्ठ संहिता—भेंट **451/-** रुपये
16. असली प्राचीन हस्तलिखित नारद संहिता— भेंट **371/-** रुपये
17. वृहद् हनुमत् सिद्धि (सैकड़ों चित्र, स्क्रीन बाइंड) मूल्य **71/-** रुपये
18. प्राचीन डामर तन्त्र— मूल्य **21/-** नोट :- सभी पर डाक खर्च पृथक्

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

।। श्री गणेशाय नमः ।।



आपकी लाटरी कब खुलेगी

अर्थात्

लाटरी गाइड देखने की विधि

"लाटरी" यह शब्द पढ़ते या सुनते ही मन हजारों या लाखों की गिनती गिनने लगता है और सोचता है कि क्या हमारा परिवार भी कभी लाटरी के द्वारा सहस्राधीश या लक्षाधीश बन सकता है? क्या आधुनिक युग की दुनिया मे हमारा परिवार भी नवीन उपकरणों द्वारा सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है? यही सोचता हुआ मन भाग्य की ओर दौड़ने लगता है और सोचता है कि जो भाग्य में लिखा होता है, वही मिलता है। किसी की उक्ति भी है कि "भाग्य फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्";

इसी उधड़-बुन में पड़े हुए मन में विचार उठता है कि क्या भाग्य भी बनाया जा सकता है या भाग्य बनाने का भी कोई उपाय है? रामायण में दी गई इस चौपाई में "मंत्र महामणी विषय व्याल के, मेंटत कठिन कुअंक भाल के" कहा तक सत्यता है और भाग्य में क्या लिखा है, क्या यह भी देखा जा सकता है?

फिर विचार उठता है, हमारे शास्त्रकारों ने सभी के उपाय बतलाए हैं। क्या इसका कोई उपाय नहीं है और यदि कोई उपाय है, तो वह क्या है?

इसी विचार में "ज्योतिष शास्त्र" का विचार मन में उत्पन्न हो जाता है, मन ज्योतिष शास्त्र की सत्यता के विषय में सोचने लगता है। क्या ज्योतिष शास्त्र सत्य है या दुनियां को बहकाने का एक अनूठा ढंग है, जिसमें पड़कर यह दुनियां भ्रमजाल में पड़ी हुई है। अपने को ज्योतिष शास्त्रवेत्ता मानने वाले ज्योतिषी जी की क्या प्रत्येक बात सत्य उतरती है?

इसी ऊहापोह में विचार आता है कि ज्योतिष शास्त्र सत्य है। हो सकता है कभी ज्योतिष शास्त्रवेत्ता के द्वारा ज्योतिष शास्त्र के सभी अंगों के पूर्ण विचार न करने के कारण कोई बात असत्य निकल गई हो, परन्तु ज्योतिष शास्त्र सर्वथा सत्य है, नहीं तो ज्योतिष शास्त्र के द्वारा वर्षों पहले लिखे गए सूर्य-चन्द्रमा के ग्रहण आकाश में प्रत्यक्ष देखने में कैसे आते? इस समय १०० वर्ष तक के पंचांग बन चुके हैं और उनकी गणित प्रत्यक्ष रूप से आकाश में इस समय मिल रही है। भारतीय विद्वानों का यह विश्व में पहला प्रयत्न है। इससे यही सिद्ध होता है कि ज्योतिष शास्त्र सर्वथा सत्य है और उसी के आधार पर यह जाना जा सकता है कि हमारा परिवार सहस्राधीश या लक्षाधीश बन सकता है या नहीं और बन सकता है, तो कब और किस दिशा से या किस प्रदेश से?

इसी मन की ऊहापोह में विचारमग्न व्यक्ति ज्योतिषी के पास जाता है या फिर कोई ऐसी पुस्तक खोजता है, जिसमें इन सभी बातों का उत्तर मिल सके।

इसी आधार पर प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है, जिसमें मुख्यतया तीन प्रकार से लाटरी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देखने की विधि लिखी गई है।

१—अपने जन्म लग्न से या मन में जिस दिन, जिस समय विचार आया हो, उसे ही प्रश्न लग्न मानकर प्रश्न लग्न से।

२—अपनी-अपनी राशि से।

३—अंक-ज्योतिष से।

तीन प्रकार से लिखने का कारण यह है कि जिनके पास जन्म-समय है या अपनी जन्मकुंडली है, वे अपने योगों को मिलाने में पूर्णतया समर्थ होंगे; परंतु जिनके पास न तो जन्म समय है और न जन्म कुंडली है, वे अपने नाम के प्रथमाक्षर से अपनी राशि जानकर प्रस्तुत पुस्तक के द्वितीय भाग में देख सकेंगे और जिनको राशि में भी संतुष्टि न हो, वे अङ्क-ज्योतिष के आधार पर अपना भाग्यांक निकालकर देख सकेंगे।

सर्वप्रथम जन्मकुंडली या प्रश्नलग्न से देखने की विधि उदाहरण देकर पाठकों की जानकारी के लिए लिख रहे हैं।

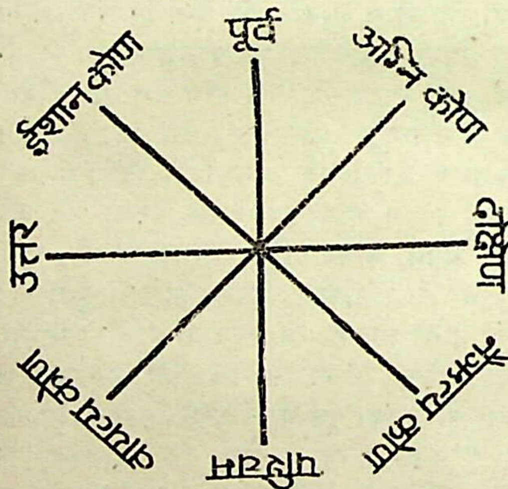
कहां का लाटरी टिकट खरीदें

प्राय: इस समय सभी प्रदेशों की लाटरी निकल रही है, इसलिए सर्वप्रथम अपनी जन्मकुंडली या प्रश्नलग्न से यह निश्चय करें कि हमें किस प्रदेश की लाटरी से आकस्मिक धन प्राप्त होना संभव है। यह देखने के लिए अपनी जन्मकुंडली या प्रश्नलग्न, जो भी हो, उसे अपने सामने रख लें और उसमें देखें कि जन्मलग्न या प्रश्नलग्न कौन-सा है। माना कि जन्मलग्न या प्रश्नलग्न उसमें तुला है, तो देखो 'लाटरी गाइड' में सर्वप्रथम 'आकस्मिक धन किस दिशा से प्राप्त होगा' इस हैडिंग से कुंडली नं० १ से प्रारम्भ करके कुंडली नं० १२ तक लिखा गया है। आप अपनी जन्मलग्न या प्रश्नलग्न की कुंडली को इनमें मिलाओ। माना कि आपकी ऊपर लिखे अनुसार जन्मलग्न या प्रश्नलग्न तुला है तो आपकी जन्मकुंडली या प्रश्नलग्न कुंडली नं० १ से मिल गई, जिसके ऊपर लिखा है कि 'जिनकी जन्मकुंडली में जन्मलग्न तुला हो उनको पूर्व या दक्षिण दिशा से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है'। इससे जाना गया कि आपकी जन्मलग्न* या प्रश्नलग्न* तुला होने से आपको पूर्व या दक्षिण दिशा के प्रदेशों से लाटरी द्वारा धन-प्राप्ति का योग है।

*जन्म समय या प्रश्न समय से जन्मलग्न या प्रश्नलग्न निकालने की विधि भी आगे दी गई है।

यहां पर सोचना यह है कि यदि आप जन्मलग्न से देख रहे हैं तो आपका जन्म जहां हुआ है, वहां से पूर्व या दक्षिण दिशा लगाएं। यदि आप प्रश्नलग्न से देख रहे हैं तो वर्तमान समय में आप जहां भी निवास कर रहे हों वहां से लगाएं। यहां यह भी स्पष्ट कर देना संगत होगा कि आप जहां जिस प्रदेश में रह रहे हैं और वहां की राजधानी आपसे पूर्व या दक्षिण में हो तो अपने प्रदेश की लाटरी से भी आपको आकस्मिक धन मिलना संभव होगा। इसी प्रकार से सभी को अपनी जन्मलग्न या प्रश्नलग्न से कुंडली नं० १ से कुंडली नं० १२ तक अपनी जन्मलग्न या प्रश्नलग्न मिलाकर यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हमें किस दिशा से आकस्मिक धन-प्राप्ति होना संभव है।

दिशा ज्ञान चक्र



अब प्रश्न उठता है कि एक दिशा में कई प्रदेश हैं, अतः कौन-से प्रदेश की खरीदें—इसे देखने के लिए 'आकस्मिक धन किस नाम के देश, प्रदेश तथा व्यक्ति से प्राप्त होना संभव है' इस हैडिंग से देखना

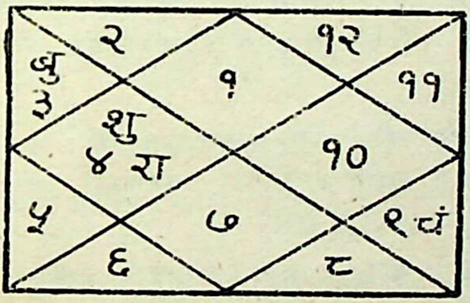
लिखा है, जिसका उदाहरण भी स्पष्ट रूप से उसके नीचे ही दे दिया गया है। इसलिए यहां दुबारा उसको लिखना उचित नहीं है।

इस दिशा-ज्ञान-चक्र से दिशाओं का ज्ञान अच्छी तरह से कर लेना चाहिए, क्योंकि दिशा की भूल से सम्पूर्ण मन के सोचे कार्य में विघ्न पड़ जाएगा, अतः प्रत्येक शहर, प्रांत आदि की दिशा का ज्ञान अपने यहां से कर लेना चाहिए।

लाटरी से धन मिलेगा या नहीं

इसके लिए प्रस्तुत पुस्तक में जन्मकुंडली मिलाने के योग दिए हैं तथा धनवान् व धन-नाश के योग भी हैं। जिनकी जन्मकुंडली में धनवान् के योग होंगे, वे ही धन का सुख भोग सकेंगे और जिनकी जन्मकुंडली में धन-नाश के योग होंगे, उन्हें धन का सुख मिलना कैसे संभव हो सकता है? नीचे एक जन्मकुंडली का मिलान करके निश्चय करना दिखाया जा रहा है।

आप अपनी जन्मलग्न या प्रश्नलग्न मिलानी चाहो तो जन्म-लग्न या प्रश्नलग्न माना यह है—



इस अपनी जन्मलग्न की कुण्डली को 'लाटरी आदि से धन प्राप्ति के योग' इस हैडिंग से दी गई कुण्डलियों में से अथवा 'धनवान् योग' इस हैडिंग से दी गई कुण्डलियों में से तथा 'धननाश योग'

इस हैडिंग से दी गई कुण्डलियों में से मिलाओ। इसके अलावा 'अन्य योग', 'महाधनी योग', 'दरिद्री योग' इत्यादि से दिये गए योगों को भी अपनी कुण्डली में मिलाओ।

इन सभी योगों में मिलाने पर जानकारी मिली कि आपकी जन्म-लग्न कुण्डलो 'लाटरी आदि से धन प्राप्ति योग' इस हैडिंग की कुण्डली नं० ३ मे मिल रही है। इसका फल 'लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होता है', यह कुण्डली नं० ३ के फल में लिखा मिला। इससे निश्चय हो गया कि लाटरी आदि से धन लाभ होना आपको संभव है।

लाटरी आदि से धन कब मिलेगा ?

उपरोक्त कुण्डली के अनुसार जब यह जान लिया कि लाटरी आदि से आकस्मिक धन मिल सकेगा, तब स्वाभाविक ही यह जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है कि जीवन में किस वर्ष में धन मिलेगा।

यह तो सर्वविदित है कि बिना भाग्य के कोई भी कार्य जीवन में नहीं बन सकता। जब भी मनुष्य का भाग्योदय होगा तभी उसे प्रत्येक कार्य में सफलता पाना संभव होता है और जब भाग्य का उदय होता है तभी लाटरी आदि से आकस्मिक धन-लाभ होना भी संभव होता है।

इसकी जानकारी के लिए प्रस्तुत पुस्तक में 'लाटरी आदि के द्वारा किस अवस्था में भाग्य का सितारा चमकेगा' इस हैडिंग से अपनी जन्मलग्न या प्रश्नलग्न से देखिये।

उदाहरण के तौर पर माना कि आपकी जन्मलग्न या प्रश्नलग्न ९ (धन) लग्न है, तो इस उपरोक्त हैडिंग द्वारा दिये गए विवरण में कुण्डली नं० १ से आपकी कुण्डली मिलेगी तो इससे यह जाना गया कि २२ वर्ष की अवस्था में आपके भाग्य का सितारा चमकेगा। अर्थात् लाटरी आदि से धन-लाभ होना संभव होगा। इसी प्रकार से

अन्य सभी को अपनी-अपनी जन्मलग्न या प्रश्नलग्न से जानकारी करनी चाहिए।

इसके अलावा प्रस्तुत पुस्तक के द्वितीय भाग में आपकी राशि में फल देखते समय भी आपको अपने भाग्योदय के वर्ष मिलेंगे, जिनमें आपको लाटरी आदि से आकस्मिक धन-लाभ होना संभव होगा।

अङ्क-ज्योतिष के अनुसार भी वर्ष अङ्कगणित के अनुसार निकालना सम्भव होता है जिसका निकालना वहीं पर दिया गया है।

इस प्रकार आप जन्मलग्न या प्रश्नलग्न से लाटरी आदि से धन मिलेगा या नहीं, मिलेगा तो किस दिशा के किस प्रान्त में तथा जीवन में कब मिलेगा—यह जानकारी प्राप्त करने में समर्थ होंगे परन्तु अब प्रश्न यह उठता है कि जिनके पास जन्म समय है वे जन्मलग्न किस प्रकार निकालें जिससे कि वे अपने सभी विचार देख सकें या जिनके पास जन्म समय भी नहीं है वे अपने प्रश्न समय से प्रश्नलग्न किस प्रकार निकालकर विचार कर देखें।

इसके लिए यहां पर जन्म समय से जन्मलग्न निकालना तथा प्रश्न समय से प्रश्नलग्न निकालना लिखते हैं। जन्मलग्न या प्रश्नलग्न निकालने से पहले जन्म समय का इष्ट या प्रश्न समय का इष्ट निकालना पड़ता है, जिसकी क्रिया निम्न है—

जन्म समय या प्रश्न समय का इष्ट निकालना

जिस दिन का जन्म समय का इष्ट निकालना है, उस दिन का पंचांग लेकर अपने सामने रख लो और जिस दिन का जन्म समय का इष्ट निकालना है उस दिन के सामने पंचांग में दिनमान देखो। यदि दिन का जन्म है तो दिनमान का आधा करो, वह दिन के १२ बजे का इष्ट होगा। यहां यह ध्यान रखना परम आवश्यक है कि पंचांग में दिनमान के जो अङ्क मिलेंगे वे घड़ी-पलों में होंगे, जिसकी परिभाषा यह है कि ढाई घड़ी का १ घण्टा होता है और ढाई पल का

एक मिनट होता है। इसी परिभाषा के अनुसार आगे जहां भी काम पड़े वहां घण्टों-मिनटों की घड़ी-पल बनावें।

अब यदि १२ बजे से पहले का इष्ट निकालना है तो १२ बजे के इष्ट में से घटाओ तो तत्काल समय का इष्ट निकलेगा। यदि १२ बजे के बाद का इष्ट निकालना है तो १२ बजे के इष्ट में जोड़ो, तत्काल समय का इष्ट होगा।

यदि रात्रि का जन्म है तो दिन के १२ बजे के इष्ट में ३० घड़ी और जोड़ दो, रात्रि के १२ बजे के समय का इष्ट होगा। उपरोक्त प्रकार से यदि रात्रि के १२ बजे से पहले का इष्ट है तो रात्रि के १२ बजे के इष्ट में से घटाने पर और यदि रात्रि के १२ बजे से बाद का इष्ट है तो रात्रि के १२ बजे के इष्ट में जोडने पर तत्काल समय का अपना इष्ट निकलेगा।

उदाहरण—माना कि किसी का जन्म बैसाख कृष्ण पक्ष १ प्रतिपदा बुधवार सं० २०२७ वि० तदनुसार ता० २२ अप्रैल १९७० ई० के समय प्रात: १० बजे का है। तो इसके लिए पहले उस साल का पंचांग लेकर उस दिन को निकाला और उसके सामने दिनमान देखा तो ३२ घड़ी १२ पल मिला। इसका आधा किया तो १६ घड़ी ६ पल हुआ, यह दिन के १२ बजे का इष्ट हुआ। अब इष्ट १० बजे का निकालना है इसलिए १२ घंटों में से १० घंटों को घटाया तो १२—१०=२ घण्टे शेष रहे। अब पहले दी गई परिभाषा के अनुसार शेष रहे २ घण्टों के घड़ी-पल बनायें तो २×२½=५ घड़ी-पल आया। दिन के १२ बजे से पहले का इष्ट होने के कारण दिन के १२ बजे के इष्ट १६ घड़ी ६ पल में से ५ घड़ी ० पल को घटाया क्योंकि १२ बजे का इष्ट तत्काल समय के इष्ट से २ घण्टा आगे है, इसलिए २ घण्टा के घड़ी-पल बनाकर उनको घटाया अत:

१६।।६
५।।०
———
११।।६

अर्थात् ११ घड़ी ६ पल यह प्रात: १० बजे का इष्ट निकला।

माना कि इसी दिन के ३ बजकर ५ मिनट का इष्ट निकालना है तो दिन क १२ वजे से आगे का इष्ट निकालना है इसलिए दिन के १२ वजे के इष्ट में जुड़ेगा।

पहले ३ घण्टा ५ मिनट के घड़ी-पल बनाये तो ३ × २½ = ७½ घड़ी तथा ५ × २½ = १२½ पल इनको इस प्रकार जोड़ो —

घ० प० वि०
७॥ ३०
  १२॥३०
———————
७। ४२॥ ३० तो ७ घड़ी ४२ पल ३० विपल निकला। यह दिन के ३ घण्टा ५ मिनट के घड़ी-पल हैं। इनको दिन के १२ बजे के इष्ट १६ घड़ी ६ पल में जोड़ा तो १६।६
७।४२॥३०
———————
२३।४८॥३० तत्काल समय ३ बजकर ५ मिनट का इष्ट २३ घड़ी ४८ पल ३० विपल रहा।

इसी प्रकार रात्रि के समय का इष्ट निकालना चाहिए। माना कि इसी दिन रात्रि के ९ वजे का जन्म है तो सबसे पहले दिन के १२ बजे के इष्ट १६ घड़ी ६ पल में ३० घड़ी जोड़ो तो रात्रि के १२ बजे का इष्ट होगा। जैसे दिन के १२ वजे के इष्ट ११ ॥ ६ में ३० घड़ी को जोड़ा तो ११ ॥ ६
३० ॥ ०
———————
४१ ॥ ६ योगफल ४१ घड़ो ६ पल आया। यह रात्रि के १२ वजे का इष्ट होगा। अब रात्रि के ९ वजे का इष्ट निकालना है तो १२ में से ९ घटाया तो शेष ३ घण्टा रहे। जाना गया कि ३ घण्टा आगे का इष्ट ४१ ॥ ६ पल है। अब ३ घण्टा के घड़ी-पल बनाये तो ३ × २½ = ७½ यह आये अर्थात् ७ घड़ी ३० पल हुए। इनको १२

———————

१—**परिभाषा**—६० पल की १ घड़ी और ६० विपल का एक पल होता है।

बजे रात्रि के इष्ट ४१ घड़ी ६ पल से घटाया तो ४१ ॥ ६

७ ॥ ३०

३३ ॥ ३६

३३ घड़ी ३६ पल शेष रहा। यह तत्काल समय ६ बजे रात्रि का इष्ट होगा।

इसी प्रकार से जिस दिन जिस समय प्रश्न देखने की भावना मन में उठे, उसी समय को नोट करो और पंचांग लेकर उसी समय का ऊपर लिखे प्रकार से इष्ट निकालो। वह तत्काल समय के प्रश्न का इष्ट होगा।

जन्मलग्न या प्रश्नलग्न निकालना

जन्म समय का या प्रश्न समय का इष्ट जो भी निकला है उसे अलग रख लें और पंचांग में देखें कि जिस दिन के जिस समय की लग्न निकाल रहे हैं उस दिन सूर्य के किस राशि के कितने अंश गए हैं। जो भी गए हों उनके मुताबिक आगे दी गई लग्न सारिणी से उस राशि के सामने उतने ही अंशों के नीचे जो अंक लिखे हों उनको इष्ट में जोड़ दे। जो योगफल आवे उसे लग्न सारिणी में देखे। जिस राशि के सामने वे अंक मिलें वही जन्मलग्न या प्रश्नलग्न होगी।

उदाहरण—माना कि बैसाख कृष्ण पक्ष १ बुधवार सं० २०२७ वि० तदनुसार ता० २२ अप्रैल १९७० ई० के प्रातःकाल का ऊपर दिये गए इष्ट निकालने के उदाहरण के अनुसार इष्ट ११ घड़ी ६ पल है। उसी दिन प्रातः रवि स्पष्ट के कालम में देखा तो ० राशि के ८ अंश मिले। इसके अनुसार लग्न सारिणी में देखा तो ० राशि के ८ अंश के नीचे अंक ३॥४६ मिला। इसको इष्ट के घड़ी-पलों जोड़ा तो

११ ॥ ६

३ ॥ ४६

१४ ॥ ५२ यह योगफल आया। इसे लग्न सारिणी में देखा तो मिथुन राशि के १८ अंश के नीचे १४॥५७ मिला। इससे जाना गया कि लग्न

मिथुन के १८ अंश गए हैं। अर्थात् तत्काल समय को लग्न मिथुन होगी। इसी प्रकार से प्रश्न लग्न भी निकाल लेनी चाहिए

लग्न निकालने की सारिणी

लग्न सारिणी

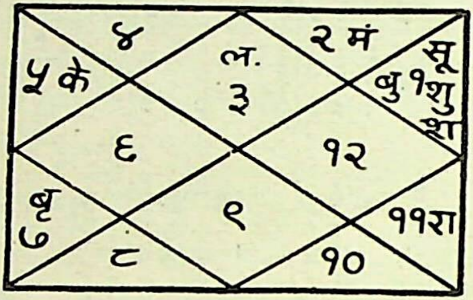
अथ लग्नपत्रं सूक्ष्म अयनांशाः २३....चरखण्डानि ६०।४८।२० अक्षप्रभा ६।०

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष. ०	२ ४७	२ ५४	३ १	३ ८	३ १६	३ २३	३ ३०	३ ३८	३ ४६	३ ५४	४ ३	४ ११	४ १९	४ २८	४ ३६
वृषभ. १	६ ५०	६ ५८	७ ७	७ १५	७ २३	७ ३२	७ ४०	७ ४९	७ ५९	८ ९	८ १९	८ २९	८ ३९	८ ४९	८ ५९
मिथुन. २	११ ४१	११ ५१	१२ १	१२ ११	१२ २१	१२ ३१	१२ ४२	१२ ५२	१३ ३	१३ १४	१३ २६	१३ ३७	१३ ४९	१४ ०	१४ ११
कर्क. ३	१७ १४	१७ २६	१७ ३७	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३५	१८ ४६	१८ ५८	१९ ९	१९ २१	१९ ३२	१९ ४४	१९ ५५
सिंह. ४	२३ १	२३ १२	२३ २४	२३ ३५	२३ ४७	२३ ५८	२४ १०	२४ २२	२४ ३३	२४ ४४	२४ ५५	२५ ६	२५ १८	२५ २९	२५ ४०
कन्या. ५	२८ ४१	२८ ५२	२९ ३	२९ १४	२९ २६	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३३	३० ४५	३० ५६	३१ ७	३१ १८
तुला. ६	३४ १८	३४ ३०	३४ ४१	३४ ५२	३५ ४	३५ १५	३५ २६	३५ ३८	३५ ४९	३६ १	३६ १२	३६ २४	३६ ३५	३६ ४७	३६ ५८
वृश्चिक ७	४० ४	४० १५	४० २७	४० ३८	४० ५०	४१ १	४१ १३	४१ २५	४१ ३६	४१ ४७	४१ ५८	४२ १०	४२ २२	४२ ३३	४२ ४५
धनु. ८	४५ ४७	४५ ५९	४६ १०	४६ २२	४६ ३३	४६ ४५	४६ ५६	४७ ८	४७ १८	४७ २८	४७ ३८	४७ ४९	४७ ५९	४८ ८	४८ १८
मकर. ९	५१ ०	५१ १०	५१ २०	५१ ३०	५१ ४०	५१ ५०	५२ ०	५२ १०	५२ १९	५२ २७	५२ ३६	५२ ४४	५२ ५२	५३ १	५३ ९
कुम्भ. १०	५५ २३	५५ ३१	५५ ४०	५५ ४८	५५ ५६	५६ ५	५६ १३	५६ २१	५६ २९	५६ ३६	५६ ४३	५६ ५१	५६ ५८	५७ ५	५७ १२
मीन. ११	५९ ९	५९ १६	५९ २३	५९ ३०	५९ ३८	५९ ४५	५९ ५२	० ०	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५०

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष. ०	४ ४४	४ ५२	५ १	५ १०	५ १८	५ २६	५ ३५	५ ४३	५ ५१	६ ०	६ ८	६ १६	६ २५	६ ३३	६ ४२
वृषभ. १	९ ९	९ १९	९ ३०	९ ४०	९ ५०	१० ०	१० १०	१० २०	१० ३०	१० ४०	१० ५०	११ ०	११ ११	११ २१	११ ३१
मिथुन. २	१४ २३	१४ ३४	१४ ४६	१४ ५७	१५ ९	१५ २०	१५ ३१	१५ ४३	१५ ५४	१६ ६	१६ १७	१६ २९	१६ ४०	१६ ५२	१७ ३
कर्क. ३	२० ६	२० १८	२० ३०	२० ४२	२० ५३	२१ ५	२१ १६	२१ २८	२१ ४०	२१ ५१	२२ ३	२२ १४	२२ २६	२२ ३७	२२ ४९
सिंह. ४	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३७	२६ ४८	२६ ५९	२७ ११	२७ २२	२७ ३३	२७ ४४	२७ ५६	२८ ७	२८ १८	२८ २९
कन्या. ५	३१ ३०	३१ ४१	३१ ५२	३२ ३	३२ १५	३२ २६	३२ ३७	३२ ४९	३३ ०	३३ ११	३३ २२	३३ ३४	३३ ४५	३३ ५६	३४ ७
तुला. ६	३७ १०	३७ २२	३७ ३३	३७ ४५	३७ ५६	३८ ८	३८ १९	३८ ३१	३८ ४३	३८ ५४	३९ ६	३९ १७	३९ २९	३९ ४०	३९ ५२
वृश्चिक ७	४२ ५६	४३ ७	४३ १९	४३ ३०	४३ ४२	४३ ५३	४४ ५	४४ १६	४४ २७	४४ ३९	४४ ५०	४५ १	४५ १३	४५ २५	४५ ३६
धनु. ८	४८ २८	४८ ३८	४८ ४८	४८ ५९	४९ ९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	४९ ५९	५० ९	५० १९	५० ३०	५० ४०	५० ५०
मकर. ९	५३ १८	५३ २६	५३ ३४	५३ ४३	५३ ५१	५४ ०	५४ ८	५४ १६	५४ २४	५४ ३३	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ६	५५ १५
कुम्भ. १०	५७ २०	५७ २७	५७ ३४	५७ ४१	५७ ४८	५७ ५६	५८ ३	५८ ११	५८ १८	५८ २५	५८ ३२	५८ ४०	५८ ४७	५८ ५४	५९ १
मीन. ११	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २७	१ ३४	१ ४१	१ ४९	१ ५६	२ ३	२ १०	२ १८	२ २५	२ ३२	२ ३९

लग्न में ग्रह लगाना

पीछे लिखे प्रकार से मिथुन लग्न आई है, अतः मिथुन लग्न की कुंडली इस प्रकार से बनावें—



जन्मलग्न या प्रश्नलग्न कुंडली

पंचांग में ग्रह स्पष्ट दिये जाते हैं, जिन्हें अवधि या पंक्ति कहते हैं। जिस दिन की लग्न देख रहे हो उस दिन से जो भी अवधि या ग्रह स्पष्ट समीप की पड़ती हो उसी से ग्रह लगाएं। यह अवधि या पंक्ति प्रायः पंचांगों में आठ-आठ दिन के अंतर से लगी रहती है। उपरोक्त उदाहरण के दिन वैसाख कृष्णपक्ष १ बुधवार सं० २०२७ से ग्रह स्पष्ट की पंक्ति चैत्र शुक्लपक्ष १५ मंगलवार सं० २०२७ वि० की है, उससे ग्रह लगाए। ग्रह लगाते समय यह भी ध्यान रखें कि ग्रह स्पष्ट में १ राशि कम लिखी रहती है इसलिए १ राशि बढ़ाकर लग्न में लगावें। उसमें सूर्य ० राशि के हैं, इससे १ पर सूर्य लगा दो। मंगल १ राशि के, बुध ० राशि के, बृहस्पति ६ राशि के, शुक्र ० राशि के, शनि ० राशि के, राहु १० राशि के तथा केतु ४ राशि के हैं। इसी में १ राशि बढ़ाकर लग्न कुंडली में मंगल २ पर, बुध १ पर, बृहस्पति ७ पर, शुक्र १ पर, शनि १ पर, राहु ११ पर तथा केतु ५ पर लगा दो।

इस प्रकार से आपकी जन्मलग्न कुंडली या प्रश्नलग्न कुंडली बनकर तैयार हो जाएगी। इसी जन्मलग्न कुंडली या प्रश्नलग्न कुंडली से पहले लिखे गए योगायोग प्रस्तुत पुस्तक से देखकर मिलाएं और इस प्रकार से निश्चय कर लें कि लाटरी आदि से आकस्मिक धन मिलेगा या नहीं, मिलेगा तो कब और किस दिशा से मिलेगा।

यहां पर लिखी इस विधि को देखकर पाठक सोचेंगे कि यह तो बहुत ही कठिन क्रिया है, यह नहीं हो पावेगी। प्रिय पाठकगण ! बिना कठिनता के कुछ भी नहीं होता। और बार-बार अभ्यास करने से सभी कार्य सरलता की ओर बढ़ने लगते हैं। इसमें यदि आपकी लगन रही तो यह कार्य भी आपको उतना ही सरल हो जाएगा, जिस प्रकार गोपद का पार करना। फिर भी सरलता से जन्मलग्न या प्रश्नलग्न देखना लिखते हैं।

सरलता से जन्मलग्न या प्रश्नलग्न देखना

आजकल बहुत-से पंचांगों में दैनिक लग्न सारिणी दी जाती हैं और लग्न के प्रारंभ होने का समय घंटा-मिनटों में दिया जाता है, दैनिक लग्न सारिणी अलग-अलग पंचांगों में अलग-अलग प्रकार से लिखी जाती है। किसी में तिथि के आगे, किसी में प्रविष्टा तारीख के आगे और किसी में अंग्रेजी तारीख के आगे लिखी जाती है। आजकल स्टैण्डर्ड टाइम में घंटा-मिनट का समय अधिक प्रसिद्ध है और जनवरी, फरवरी आदि अंग्रेजी महीना तथा तारीख व सन् भी अधिक प्रचलित है। अतः जिस पंचांग में अंग्रेजी तारीख व अंग्रेजी महीनों के अनुसार लग्न का भोग काल स्टैण्डर्ड टाइम के घंटा-मिनटों में दिया गया हो, वही अत्युपयोगी दैनिक लग्न सारिणी रहेगी। उस दैनिक लग्न सारिणी से आप तत्काल प्रश्न समय तथा जन्म समय को लग्न सरलता पूर्वक देखने में समर्थ होंगे। इसके अलावा जिनके यहां जो पंचांग प्रचलित हों और उनमें जिसमें भी दैनिक लग्न सारिणी

दी गई हो, उससे सुविधानुसार जन्म लग्न या प्रश्न लग्न जान लें और उससे योगायोग मिला लें।

अपनी राशि से लाटरी से संबंधित प्रश्नों का उत्तर जानना

अपनी राशि से लाटरी संबंधित प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए सबसे पहले अपने नाम की राशि देखना परमावश्यक है। यदि अपने नाम की राशि देखने में भूल हो गई तो सब उल्टा हो जाएगा, इसलिए सबसे पहले अपने नाम की राशि निश्चय करनी चाहिए।

राशि देखने के लिए अपने नाम के पहले अक्षर को लिख लें और उस अक्षर को सामने दिये गए राशिचक्र में देखें, जिस राशि के नीचे चक्र में वह अक्षर मिले वही आपकी राशि होगी।

उदाहरण—माना कि आपका नाम 'मुकट बिहारी' है। आपके नाम का पहला अक्षर 'मु' है तो 'मु' को सामने दिये गए राशि-ज्ञान-चक्र में देखा तो सिंह राशि के नीचे 'मु' अक्षर मिला। इससे निश्चय हो गया कि आपको राशि सिंह है।

इस प्रकार से राशि ज्ञान हो जाने पर आप अपनी राशि से ही प्रश्न का उत्तर पा सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के द्वितीय भाग में राशियों से फल लिखा गया है। वहां भी ऊपर मोटे अक्षरों में राशि का नाम तथा नीचे उस राशि के अक्षर दिये गए हैं। अर्थात् यदि उन अक्षरों में आपके नाम का अक्षर हो तो आपकी राशि वही रहेगी, उसी से फल जानें।

राशि के नीचे उस राशि के भाग्यांक दिये गए हैं। जिस राशि के नीचे जो भाग्यांक दिये हैं, वे अंक उनको भाग्यशाली बनाने में सहायक होंगे। सप्ताह के वारों में से शुभ सूचक वार भी लिखे हैं, प्रायः प्रत्येक कार्य उसी वार में करें। जिन राशि वालों से नुकसान रहेगा वह भी लिखा गया है, अतः उन राशि वालों से बचें। मणि आदि धारण करना भी लिखा है, वह भी धारण करें तथा उपाय भी

राशि ज्ञान-चक्र

मेष		बृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धन		मकर		कुम्भ		मीन	
नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर
अ०	चू	२	इ	३	का	४	हि	म	मा	२	टो	३	रा	४	तो	मू	ये	२	भो	३	गु	१	दि
२	चे	३	उ	४	की	पुष्य	हू	२	मि	३	पा	४	रि	अनु	ना	२	यो	३	जा	४	गे	उभा	दू
३	चो	४	ए	आर्द्रा	कु	२	हे	३	मु	४	पि	स्वा०	रु	२	नि	३	भा	४	जि	श०	गो	२	थ
४	ला	रो	ओ	२	घ	३	हो	४	मे	ह	पु	२	रे	३	नु	४	भि	अभि २	जु जे	२	सा	३	झ
भ	ली	२	वा	३	ङ	४	डा	पू० फा०	मो	२	ष	३	रो	४	ने	पू० षा०	भू	३ ४	जो खा	३	सि	४	ञ
२	लू	३	वि	४	छ	अश्ले	डी	२	टा	३	ण	४	ता	ज्ये	नो	२	धा	श्र २	खि खु	४ पू०	सु	रे	दे
३	ले	४	वु	पुन	के	२	डू	३	टि	४	ठ	वि	ति	२	य	३	फ	३	खे	भा०	से	२	दो
४	लो	मृ	वे	२	को	३	डे	४ उ०	टू	चि	पे	२	तु	३	यि	४ उ०	ढ	४ ध	खो गा	२	सो	३	च
कृ	अ	२	वो	३	हा	४	डो	फा०	टे	२	पो	३	ते	४	यु	षा०	भे	२	गि	३	दा	४	चि

लिखे गए हैं। आप उन उपायों को भी काम में लावें। इससे आपको भाग्यशाली होना संभव हो सकता है। भाग्योदय एवं नुकसान के वर्ष भी लिखे गए हैं, उन वर्षों को ध्यान पूर्वक नोट करें।

उदाहरण—माना कि ऊपर लिखे उदाहरण के अनुसार 'मुकट बिहारी' को अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना है तो इस प्रकार करें—

ऊपर लिखे प्रकार से यह निश्चय हो गया कि 'मुकट बिहारी' की सिंह राशि है, तो पुस्तक के द्वितीय भाग में लिखित सिंह राशि के पेज को निकाला, जिसके ऊपर मोटे अक्षरों में लिखा है 'सिंह'। उसके नीचे छोटे अक्षरों में—मा, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टु, टे—ये अक्षर लिखे हैं। इसका तात्पर्य यह है कि इन अक्षरों से जिनके नाम बनते हैं, उनकी सिंह राशि है। अतः मुकट बिहारी की सिंह राशि होना निश्चय हो गया।

इसके नीचे फलित देखा तो मिला कि मेष, मिथुन तथा धन राशि वालों से लाभ रहेगा। इसका तात्पर्य है कि इन राशि वालों के सहारे आपको लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होना संभव है। इससे आप इन राशि वालों से लाटरी से संबंधित कार्य कराए या इनसे ही संभव हो तो टिकट आदि खरीदें। कर्क, वृश्चिक, मकर, मीन राशि वालों से नुकसान है, अतः इन राशि वालों से अपने सम्पर्क न बढ़ाएं। आगे लिखा है माणिक, पुखराज, सोने की अंगूठी पहनना लाभदायी रहेगा, बेल की जड़ धारण करने से आपके भाग्य का सितारा चमकेगा। इसका तात्पर्य यह है कि आप उपरोक्त माणिक आदि धारण करें, आपको अपने लक्ष्य में सफलता पाना संभव होगा। रविवार में प्रत्येक कार्य करना आपके लिए शुभ है। इस लिखने का तात्पर्य यह है कि आप जो भी कार्य करें, चाहे लाटरी से संबंधित हो, चाहे अन्य अपने और कार्य, सभी को रविवार के दिन ही प्रारंभ करें तो बहुत ही अच्छा फल मिलने की संभावना बनी रहेगी। आपके

भाग्यांक १, २, ३, ४, ७, ८ हैं। इसके लिखने का तात्पर्य यह है कि ये अंक आपको जीवन में भाग्यशाली बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं, अतः इन अंकों पर ध्यान देकर ही अंकों से संबंधित कार्य करें।

यह आपकी राशि का साधारणतया फलित है। अब आप देखना चाहते हैं कि मुझे किस वर्ष में अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी या अपने लक्ष्य में सफलता मिलना संभव भी है या नहीं, तो इसके लिए राशि-अंक के फलित के नीचे भाग्यचक्र दिया गया है, उसमें ९ कोठे हैं। आप स्वच्छतापूर्वक श्रद्धा एवं विश्वास के साथ भगवान शंकर का नाम लेकर उन ९ कोठों में से किसी भी एक कोठे में अंगुली रख दें। आपने जिस कोठे में अंगुली रक्खी है और उसमें जो चरण लिखा है, उसी चरण का फल उसी राशि के चरण गत दिये गए फल में देखें, उसमें आपको पूर्ण विवरण मिल जाएगा।

माना कि मुकट विहारी ने भाग्यचक्र में तृतीय चरण पर अंगुली रक्खी तो 'सिंह' राशि के तृतीय चरण का फल' इस शीर्षक से दिये गए फल में अपने प्रश्नों का उत्तर देख लो, जिसमें आपको भाग्योदय के वर्ष तथा उपाय एवं कार्य सिद्ध होने न होने के विषय में फलित मिल जाएगा।

इस प्रकार इस विधि से पूर्णरूपेण परिचित होकर अपनी लक्ष्य सिद्धि के लिए अपने प्रश्नों का उत्तर जानना चाहिए।

अंक-ज्योतिष से लाटरी से संबंधित प्रश्नों का उत्तर जानना

प्रस्तुत पुस्तक में 'अपने नाम के अंक जोड़कर अपना भविष्य मालूम कीजिए' इस शीर्षक से पुस्तक के चतुर्थ भाग में अंक विद्या से प्रश्नों का उत्तर जानना लिखा गया है, जिसकी विधि वहां पर

सविस्तार दी गई है। पाठकगण! उसका मनन करके अपने प्रश्नों का उत्तर पाने का प्रयत्न करें।

अंक-विद्या में अंकों का ही चमत्कार है। इसलिए अंकों को सावधानी पूर्वक प्रयोग में लाना चाहिए अन्यथा कार्य में सफलता पाना कठिन होगा। इसी में 'ताश के पत्तों में आपका जीवन और लाटरी' इस शीर्षक से ताश के पत्तों द्वारा प्रश्नों का उत्तर लिखा है। उसकी विधि भी वहीं पर सविस्तार दी गई है, देखें और उत्तर प्राप्त करें।

इस प्रकार की विधियों द्वारा प्रस्तुत पुस्तक में लाटरी आदि से आकस्मिक धन मिलने, न मिलने का पूर्ण विवेचन करने का प्रयत्न किया गया है। आगे दैव गति बलवान् है और श्री चक्र बिहारी ही मालिक हैं।

लाटरी व आकस्मिक धन प्राप्त करने का यंत्र

इस यंत्र को अनार की कलम और लाल चन्दन से ग्रहण वाले दिन या दीपावली की रात्रि को लिखना आरम्भ करें। जब तक ३१००० (इकतीस हजार) पूरा न हो तब तक ब्रह्मचर्य तथा संयम से रहें। किसी के घर का खाना न खाएं, फिर इन यंत्रों को श्री लक्ष्मीजी

60	67	2	7
6	3	64	63
66	61	8	1
4	5	62	65

का ध्यान करके बहते हुए गंगा जल या यमुना में बहा दें। छोटी लड़कियों व लड़कों को मीठा खाना खिलाएं। उसके पश्चात् यंत्र शुदी पक्ष में स्वाति नक्षत्र में नहा-धोकर अनार की नई कलम से भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिखे और अष्ट धातु के ताबीज में रखकर दाहने बाजू में बांध ले तो लाटरी व आकस्मिक धन प्राप्ति के कार्यों में सफलता मिले और लाभ हो।

नोट—इस यंत्र को बाजू से उतार कर कभी जमीन पर न रखें और न ही इसे अपवित्र होने दें। प्रात: उठकर धूप, गूगल, अगर, फूल आदि से प्रतिदिन इसकी पूजा अवश्य कर लेनी चाहिए।

प्रश्न देखने के आवश्यक नियम

१. प्रश्नकर्त्ता को प्रश्न देखने से पहले शुद्ध चित्त होकर प्रश्न देखना चाहिए और यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रश्न बिना दक्षिणा-द्रव्य, फल-फूल आदि के न देखें। यदि दैवज्ञ के पास जाकर प्रश्न दिखावे तो दैवज्ञ के लिए सादर शुद्ध चित्त से फल-फूल तथा दक्षिणा-द्रव्य समर्पित करें और यदि स्वयं ही प्रश्न देख रहे हों तो भी यथा-साध्य दक्षिणा, द्रव्य, फल-फूल सादर प्रथम अपने इष्टदेव का नाम स्मरण कर पुस्तक पर अर्पित करे। दक्षिणा-द्रव्य के जो पैसे हों उन्हें देवालय में चढ़ा दें।

२. प्रश्न करते समय हृदय को पवित्र रखें और शुद्ध विचार रक्खें, क्योंकि बुरे विचारों में जो प्रश्न किया जाता है वह फलदायी नहीं होता है।

३. श्रद्धा एवं विश्वास मन में रखकर तथा अपने इष्टदेव का स्मरण कर प्रश्न करना फलदायी होता है। जो श्रद्धा एवं विश्वास के साथ अपने इष्टदेव का स्मरण न कर प्रश्न करता है उसका प्रश्न कभी फलदायी नहीं होता है।

४. प्रश्नोत्तर में बताए गये शांति प्रयत्नों से लाभ मिलेगा परन्तु सभी उपाय श्रद्धा व विश्वास के साथ नेकनियती से विधिपूर्वक करना चाहिए।

श्री गणेशाय नमः

आपकी लाटरी कब खुलेगी

(लाटरी गाइड)

प्रथम भाग

मंगलाचरणम्

लम्बोदरं परम सुन्दर मेकदन्तम्,
पीताम्बरं त्रिनयनं परम पवित्रम्।
उच्चद्दिवाकर निभोज्वलकान्ति कान्तम्,
विघ्नेश्वरं सकल विघ्नहरं नमामि ।।१।।
शिवतनय वरिष्ठं सर्वकल्याण मूर्तिम्,
परशु कमल हस्तं शोभितं मोदकेन।
अरुण कुसुम मालं काल यज्ञोपवीतम्,
ममहृदय निवासं श्री गणेशं नमामि ।।२।।
सर्व स्थूल तनुं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरम्,
विघ्नेशं मधु गन्ध लुब्धम् धूपकालोल गंड स्थलम्।
दंताघात विदारिताऽहितजनं सिन्दूर शोभा करम्,
वन्दे शैल सुता सुतं गणपति सिद्धिप्रद कामदम् ।।३।।
गजाननं भूतगणादि सेवितम्,
कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाश कारकम्
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम् ।।४।।

विषय-प्रवेश

वर्तमान समय में जिसे लाटरी, सट्टा आदि की संज्ञा दी गई है पुरातन समय में उसे आकस्मिक धन प्राप्त करना लिखा गया है। यह

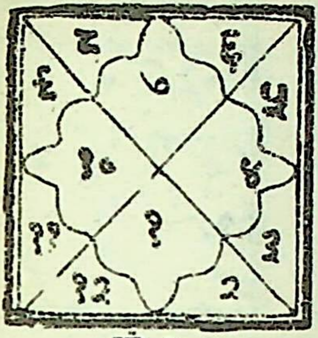
आकस्मिक धन उसी को प्राप्त हो सकता है जिसने कि पहले जन्म में गुप्तदान अचानक किया हो। प्रस्तुत पुस्तक में आकस्मिक धन-प्राप्ति के योग लिखे गये हैं, जिनको जन्मकुंडली में आगे दिये हुए योग मिलें उनको आकस्मिक धन (लाटरी आदि के द्वारा धन) प्राप्ति का योग लिखा गया है तथा यह भी लिखा गया है कि वह धन किस दिशा से प्राप्त होगा। इसके अलावा धनीयोग तथा कुछ दरिद्री योग भी दिये हैं जिनसे कि यह जाना जा सके कि यह कुंडली धनी बनायेगी या दरिद्री। यदि दोनों ही योग किसी कुंडली में हों तो वह कुंडली साधारण रीति से कभी अच्छा फल देने वाली तथा कभी बुरा फल देने वाली होती है। सहस्त्र, लक्ष, दो लक्ष के धनी होने के योग भी साथ ही दिये गए हैं। जिनकी जन्मकुंडली नहीं है उनके लिए राशि द्वारा फल लिखा है। प्रत्येक राशि के नीचे उस राशि में जितने अक्षर आते हैं वे लिखे गये हैं। आपके नाम का जो पहला अक्षर हो वह जिस राशि के नीचे मिले वही आपको अपनी राशि जाननी चाहिए। वैसे जन्मकुंडली वालों को भी अपनी राशि द्वारा फल बताये गए क्रम से मालूम कर लेना चाहिए। यहां यह जान लेना अति आवश्यक है कि प्रस्तुत पुस्तक में आकस्मिक धन लाटरी आदि से धन प्राप्त होना जानना चाहिए अर्थात् जहां "आकस्मिक धन" लिखा गया है वहां लाटरी आदि के द्वारा धन प्राप्त होना आदि जानना चाहिए।

आकस्मिक धन किस दिशा से प्राप्त होगा

विशेष नोट—जहां कहीं भी इस पुस्तक में कुंडली नं० १ की तरह अन्य कुंडलियां दी गई हैं उन सभी को अपनी जन्मकुंडली से मिला लें।

जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न तुला हो उनको पूर्व व दक्षिण दिशा से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है। कारण उनके लाभ-भवन का स्वामी सूर्य होता है और सूर्य पूर्व दिशा का स्वामी है।

जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न कन्या हो उनको वायु कोण से आकस्मिक धन की प्राप्ति होगी। कारण कि उनके लाभ-भवन का



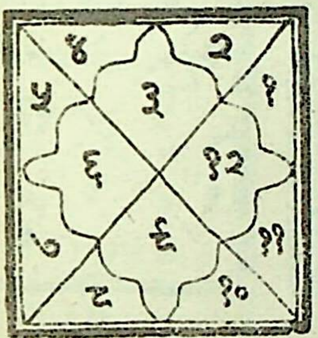
नं० १ ✓



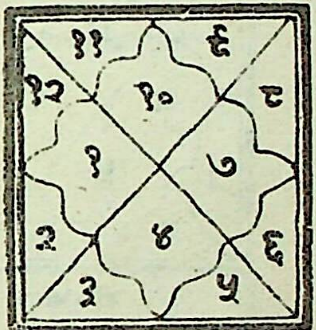
नं० २ ✓

स्वामी चन्द्र होता है और चन्द्रमा वायु कोण का स्वामी है।

जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न मिथुन या मकर हो उनको दक्षिण दिशा से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है। कारण कि उनके



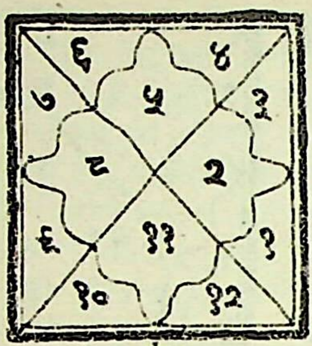
नं० ३ ✓



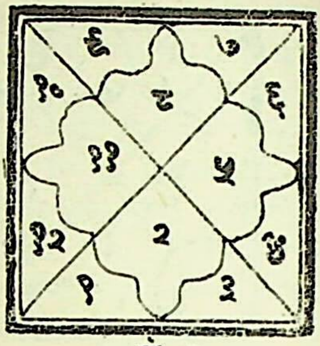
नं० ४ ✓

लाभ-भवन का स्वामी मंगल होता है और मंगल दक्षिण दिशा का स्वामी है।

जिनकी जन्मकुडली में जन्म लग्न सिंह या वृश्चिक हो उनको उत्तर दिशा से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है। कारण कि उनके

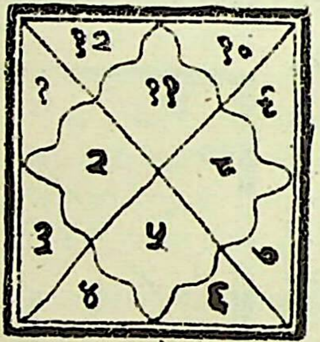


नं० ५

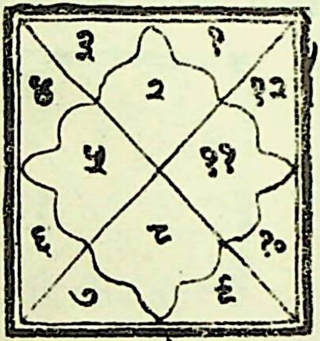


नं० ६

लाभ-भवन का स्वामी बुध होता है और बुध उत्तर दिशा का स्वामी है।



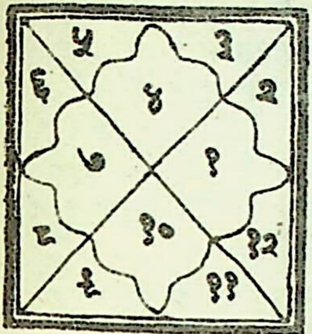
नं० ७



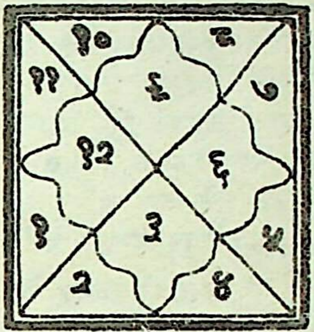
नं० ८

जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न कुंभ या वृष हो उनको ईशान कोण से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है। कारण कि उनके लाभ-भवन का स्वामी बृहस्पति ईशान कोण का स्वामी है।

जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न कर्क या धनु हो उनको अग्नि कोण से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है। कारण कि उनके लाभ-भवन का स्वामी शुक्र अग्नि कोण का स्वामी है।

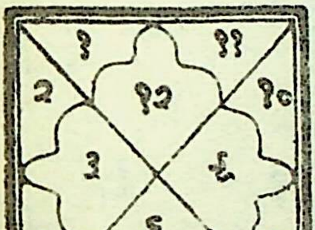


नं० ९ ८



नं० १० ८

जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न मीन या मेष हो उनको पश्चिम दिशा से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है। कारण कि उनके लाभ-भवन का स्वामी शनि पश्चिम दिशा का स्वामी है।



नं० ११ ८



नं० १२ ८

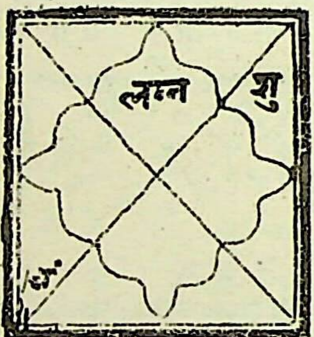
अन्य प्रकार से आकस्मिक धन-प्राप्ति की दिशा

जिनकी जन्मकुंडली में लाभ-भवन में मेष या वृष राशि हो तो पूर्व दिशा से, मिथुन राशि हो तो अग्नि कोण से, कर्क, सिंह राशि हो तो दक्षिण दिशा से, कन्या राशि हो तो नैऋत्य कोण से, तुला,

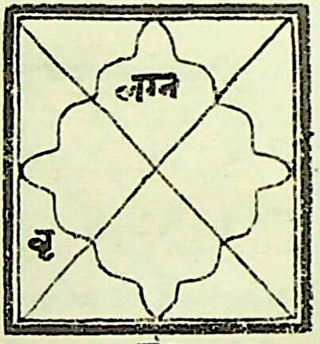
वृश्चिक राशि हो तो पश्चिम दिशा से, धनु राशि हो तो वायु कोण से, मकर या कुंभ राशि हो तो उत्तर दिशा से तथा मीन राशि हो तो ईशान कोण से आकस्मिक धन प्राप्त होता है। कई आचार्य यह मानते हैं कि जिनको जन्मकुंडली मे लाभ-भवन में मेष, सिंह तथा धनु राशि हो उनको पूर्व दिशा से, वृष, कन्या तथा मकर राशि हो उनको दक्षिण दिशा से, मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशि हो उनको पश्चिम दिशा से, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि हो तो उनको उत्तर दिशा से आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है।

लाटरी आदि से धन-प्राप्ति के योग

जिनकी जन्मकुंडली में पंचम भाव में चन्द्र विराजमान हो और उसे शुक्र देखता हो तो उनको लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होता है।



नं. १

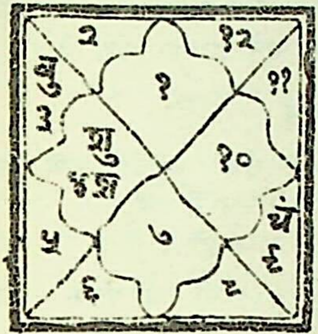


नं. २

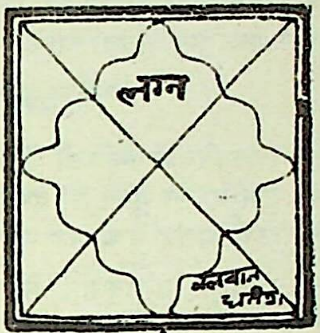
जिनकी जन्मकुंडली में बृहस्पति पंचम भाव में विराजमान हो तथा जन्मकुंडली में लग्न का स्वामी बलवान हो तो उनको लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होता है।

जिनकी जन्मकुंडली में धनेश व लाभेश चतुर्थ भाव में विराजमान हों और चतुर्थ भाव का स्वामी शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से

युक्त अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उनको लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होता है।



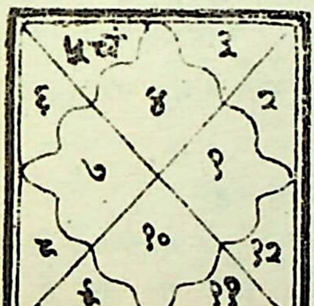
नं० ३



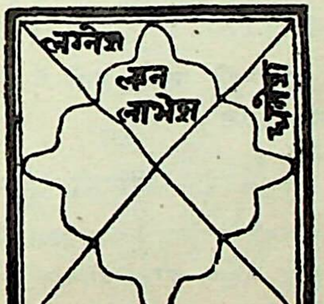
नं० ४

जिनकी जन्मकुंडली में धन-भाव का स्वामी बलवान् होगा, आठवें भाव में विराजमान हो तो उनको लाटरी आदि द्वारा आकस्मिक धन प्राप्त होता है।

जिनकी जन्मकुंडली में लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह धन-भाव में विराजमान हो तो उनको जमीन में गड़ा धन अथवा लाटरी आदि द्वारा अकस्मिक धन प्राप्त होता है।



नं० ५ =



नं० ६ =

जिनकी जन्मकुंडली में लग्न का स्वामी दूसरे भाव में विराजमान हो और दूसरे भाव का स्वामी ग्यारहवें भाव में विराजमान हो तथा ग्यारहवें भाव का स्वामी लग्न में विराजमान हो तो उनको जमीन से गड़ा धन अथवा आकस्मिक धन प्राप्त होता है।

अन्य योग

१—जिनकी जन्मकुंडली द्वितीयेश तथा चतुर्थेश शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो उनको जमीन से गड़ा धन अथवा लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होता है।

२—जिनकी जन्मकुंडली में लग्न के स्वामी तथा पंचम भाव के स्वामी का सम्बन्ध हो उनको लाटरी आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होता है।

३—जिनकी जन्मकुंडली में लाभेश धन-भाव में तथा धनेश लाभ-भाव में विराजमान हों उनको उत्तम धन प्राप्त होता है।

४—जिनकी जन्मकुंडली में लाभ-भवन का स्वामी लग्न, चतुर्थ पचम, सप्तम, नवम, दशम भाव में विराजमान हो तथा व्यय भाव में पापग्रह विराजमान हो तो उत्तम धन प्राप्त होता है।

५—जिनकी जन्मकुंडली में दूसरे तथा ग्यारहवें भाव के स्वामी केन्द्र स्थान (१, ४, ७, १०) में स्थित हों तो उत्तम धन प्राप्त होता है।

६—जिनकी जन्मकुंडली में आठवें भाव में शुभ ग्रह गये हों तो उत्तम धन प्राप्त होता है।

लाटरी खुलेगी या नहीं

प्रश्नकर्ता ने जिस समय प्रश्न किया है, उस समय की तत्काल तिथि, वार, नक्षत्र और प्रश्नकर्ता का जिस दिशा को मुख हो उस दिशा की संख्या तथा प्रहर (पहर) इन सबको इकट्ठा करके जोड़ें। योगफल में ८ का भाग दें। यदि १ या ५ शेष बचे तो निकलने की

आशा है। यदि ० (शून्य) या २ शेष बचें तो सम्भव नहीं है अर्थात् नहीं निकलेगी। यदि ३ या ७ बचे तो अभी प्रतीक्षा करो समय नहीं है। यदि ४ या ८ शेष बचें तो कुछ थोड़े दिन के बाद निकलना संभव है।

लाटरी कब तक खुलेगी

प्रश्नकर्ता ने जिस समय प्रश्न किया है उस समय की तत्काल तिथि, वार, नक्षत्र, पहर तथा प्रश्नकर्ता के नाम के अक्षर सबको जोड़कर ३ का भाग दें। यदि शेष १ बचे तो लाटरी शीघ्र ही निकलना सम्भव है। यदि शेष २ बचें तो कुछ देरी से निकलना सम्भव है और यदि शेष ० (शून्य) रहे तो अभी निकलना संभव नहीं है।

आकस्मिक धन किस नाम के देश, प्रदेश तथा व्यक्ति से प्राप्त होना संभव है

स्वरों से लेकर व्यंजनों तक को ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ८ वर्गों में विभाजित किया गया है, जिसका चक्र नीचे दिया जा रहा है।

वर्ग-ज्ञान-चक्र

संख्या	वर्ग	अक्षर	वर्ग नाम
१	अवर्ग	अ, इ, उ, ए,	गरुड़
२	कवर्ग	क, ख, ग, घ, ङ,	बिडाल (बिलाव)
३	चवर्ग	च, छ, ज, झ, ञ,	सिंह
४	टवर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण,	श्वान (कुत्ता)
५	तवर्ग	त, थ, द, ध, न,	सर्प (सांप)
६	पवर्ग	प, फ, ब, भ, म,	मूषक (चूहा)
७	यवर्ग	य, र, ल, व,	मृग
८	शवर्ग	श, ष, स, ह,	मेष (मेंढा)

इस चक्र के द्वारा पहले अपने नाम के पहले अक्षर से अपना वर्ग देखें और उसकी संख्या देखें। जो संख्या अपने वर्ग की हो, उसको दूना करें। इसके पश्चात् जिस देश, प्रदेश तथा व्यक्ति से धन-लाभ करना चाहते हो उसके नाम के पहले अक्षर से वर्ग देखें और उसकी संख्या देखें जो संख्या आवे उसको उस अपने की दूनी की हुई संख्या में जोड़ दें। जो योगफल आवे उसमें आठ का भाग दें। जो शेष रहे उस संख्या को अलग रख लेना। इसके पश्चात् उस देश, प्रदेश तथा व्यक्ति के नाम की वर्ग की संख्या का दूना करें और उसमें अपने वर्ग की संख्या जोड़कर योगफल में ८ का भाग दें। जो शेष रहे उस संख्या को भी अलग रख लेना। अब दोनों जो शेष संख्यायें हैं उनको देखें। यदि अपने वर्ग वाली शेष संख्या दूसरे के वर्ग वाली शेष संख्या से कम है तो उस देश, प्रदेश तथा व्यक्ति से लाभ मिलना संभव है और यदि अपने वर्ग से दूसरे के वर्ग की संख्या कम है तो लाभ प्राप्त होना संभव नहीं है।

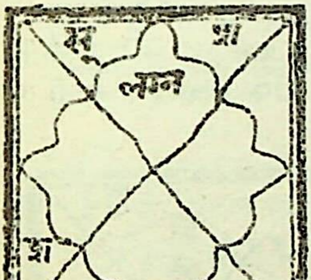
उदाहरण--माना कि राजपाल नाम के व्यक्ति को यह देखना है कि मुझे भगवान् सिंह नाम के व्यक्ति से लाभ होगा या नहीं। तो पहले राजपाल का वर्ग देखा तो य वर्ग मिला। य वर्ग की संख्या ७ है। इसको दूना किया ७×२=१४ यह संख्या आई। अब भगवान सिंह नाम के व्यक्ति का वर्ग देखा तो प वर्ग मिला, प वर्ग की संख्या ६ है। इसको राजपाल के वर्ग की दूनी संख्या १४ में जोड़ा तो १४+६=२० योगफल आया। इसमें ८ का भाग दिया २०÷८ तो शेष ४ रहा इसको अलग लिखा। अब भगवान सिंह की वर्ग की संख्या ६ को दूना किया तो६×२ =१२संख्या आई। इसमें राजपाल की वर्ग संख्या ७ को जोड़ा तो १२+७=१९ योगफल आया। इसमें ८ का भाग दिया तो १९÷८ तो शेष ३ रहा। इसको भी अलग लिख लिया। अब दोनों से फल देखा तो राजपाल की शेष संख्या ४ है और भगवान सिंह की शेष संख्या ३ है तो फल यह आया कि राजपाल को भगवान सिंह से धन-लाभ होना सम्भव नहीं है।

धनवान योग

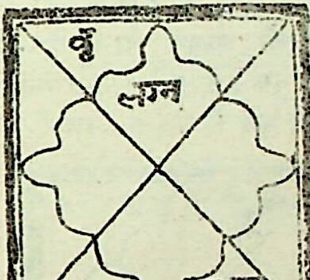
यहां यह लिखना आवश्यक है कि जिनको जन्मकुंडली में धनवान योग होता है, उन्हें ही अपने जीवन में धन प्राप्त होना सम्भव होता है। यदि धन-प्राप्ति का योग कुंडली मे नहीं है तो धन प्राप्त होना संभव नहीं होता है। इसके अलावा जिनकी कुंडली में धन नाश योग अधिक होता है उनको भी लाभ प्राप्त होना सम्भव नहीं है। इसके लिए कुछ योग नीचे दिये जा रहे हैं, जिनसे निर्णय करें। विशेष के लिए 'आपकी आर्थिक पोजीशन' पुस्तक मंगावें।

मंगाने का पता; देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार देहली-६

जिनकी जन्मकुंडली में धन-भाव में सूर्य विराजमान हो और उसे शनि देखता हो तो उनको धनवान योग होता है। अपनी जन्म-कुंडली से कुंडली नं० १ मिलायें।



नं० १



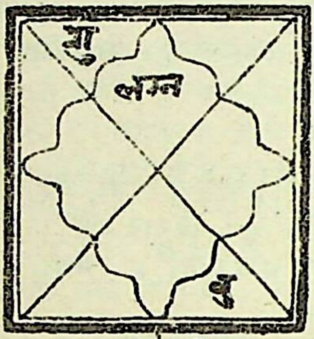
नं० २

जिनकी जन्मकुंडली में वृहस्पति धन भाव में विराजमान हों और उसको शुभ ग्रह देखते हों तो उनको धनवान योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली न० २ मिलायें।

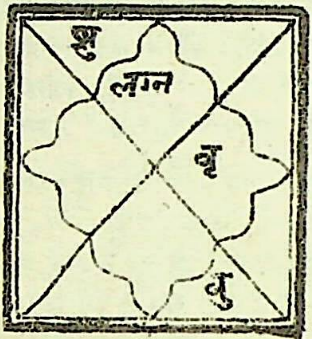
जिनकी जन्मकुंडली में धन-भाव में शुक्र विराजमान हो और

उनको बुध देखता हो तो उनको धन की प्राप्ति होती है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० ३ मिलायें

जिनकी जन्म कुंडली में धन-भाव में शुक्र विराजमान हो और सभी शुभ ग्रह देखते हों तो उनको अधिक धन-प्राप्ति का योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० ४ मिलायें।

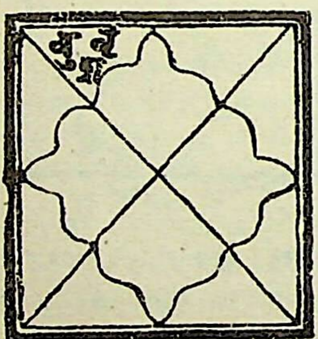


नं० ३ +



नं० ४ +

जिनकी जन्मकुंडली में धन-भाव में शुभ ग्रह विराजमान हों तो उनको अनेक प्रकार से धन-प्राप्ति का योग होता है। अपनी जन्म-कुंडली से कुंडली नं० ५ मिलायें।



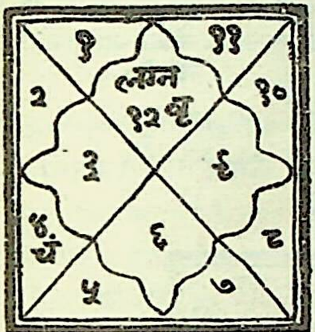
नं० ५ +



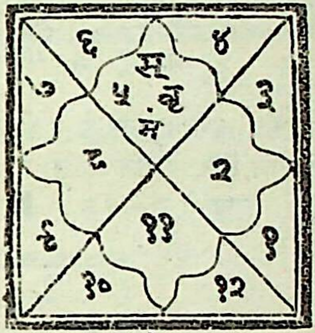
नं० ६ +

जिनकी जन्मकुंडली में चन्द्रमा से ३, ६, १०, ११ स्थान में से किसी भी स्थान में शुभ ग्रह विराजमान हो तो उनको शीघ्र ही धनवान होने का योग होता है। अपनी जन्मकंडली से कुंडली नं० ६ मिलायें।

जिनकी जन्मकुंडली में मीन तथा धनु राशि का बृहस्पति हो और पंचम भाव में चन्द्रमा विराजमान हो तो उनको महाधनी योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० ७ मिलायें।



नं० ७ +

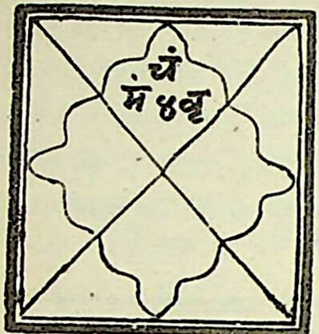


नं० ८ +

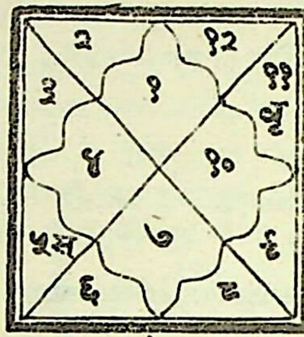
जिनकी जन्मकुंडली में बृहस्पति तथा मंगल से युक्त होकर सिंह लग्न में सूर्य विराजमान हो तो उनको महाधनी योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० ८ मिलायें।

जिनकी जन्मकुंडली में बृहस्पति तथा मंगल से युक्त कर्क राशि का चंद्रमा लग्न में विराजमान हो तो उनको महाधनी योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० ६ मिलाएं।

जिनकी जन्मकुंडली में ग्यारहवें भाव में बृहस्पति विराजमान हो और सूर्य पंचम भाव में स्वराशि का हो तो उनको महाधनी योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० १० मिलायें।

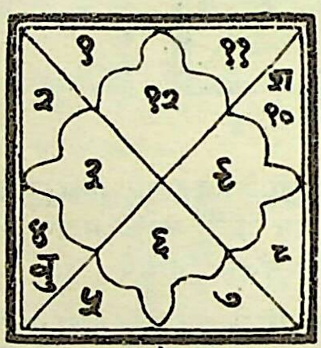


नं० ९ +



नं० १० +

जिनकी जन्मकुंडली में कर्क राशि का बुध हो तथा ग्यारहवें भाव में शनि विराजमान हो तो महाधनी योग होता है। अपनी जन्म-कुण्डली से कुण्डली नं० ११ A मिलायें।

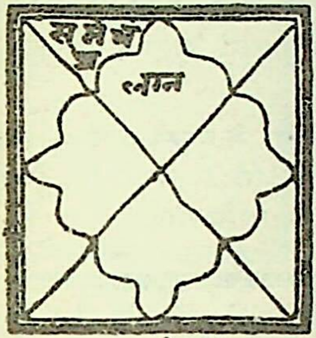


नं० ११ A +

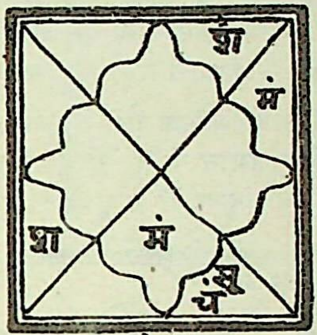
धन-नाश योग

जिनकी जन्मकुंडली में धन भाव में सूर्य, मंगल तथा शनि विराजमान हैं अथवा धन भाव पर इनकी दृष्टि हो तो उनको धन नाश योग होता है। यदि धन भाव में क्षीण चन्द्रमा विराजमान

हो अथवा क्षीण चन्द्रमा की दृष्टि हो तो यह योग और प्रवल होता है। अपनी जन्मकुण्डली से कुण्डली नं० ११ B व १२ मिलायें।

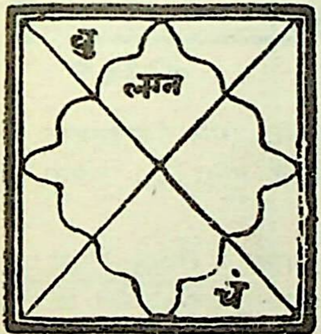


नं० ११ B+

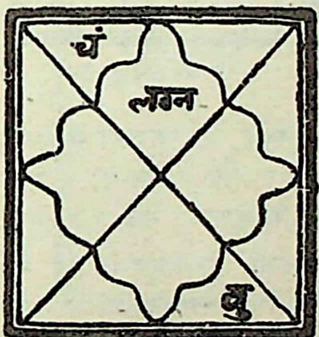


नं० १२+

जिनकी जन्मकुंडली में धन भाव में बुध विराजमान हो और चन्द्रमा की दृष्टि होय तो उनको धन नाश योग होता है। अपनी जन्मकुण्डली से कुण्डली नं० १३ मिलायें।



नं० १३+



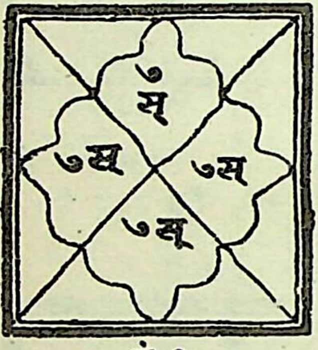
नं० १४+

जिनकी जन्मकुंडली में धन भाव में क्षीण चन्द्रमा विराजमान होय, उस पर बुध की दृष्टि होय तो पहले संचित धन को नाश करता

है और आगे धन की आमदनी को रोकता है। अपनी जन्मकुण्डली से कुण्डली नं० १४ मिलायें।

जिनकी जन्मकुंडली में नीच राशि का सूर्य केन्द्र स्थान (१-४-७ १०) मे विराजमान हो तो उनको धन नाश होता है। अपनी जन्म-कुण्डली से कुण्डली नं० १५ मिलायें।

जिनकी जन्मकुंडली में बारहवें भाव में बृहस्पति, शुक्र, चन्द्र या बुध विराजमान हो तो उनका धन नाश धर्म के कार्यों में होता है। अपनी जन्मकुण्डली से कुण्डली नं० १६ से मिलाएं।



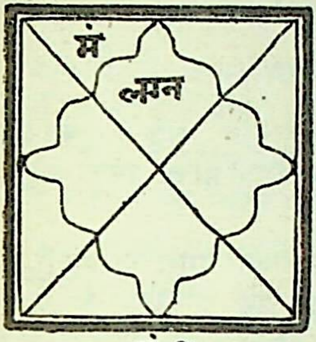
नं०१५+



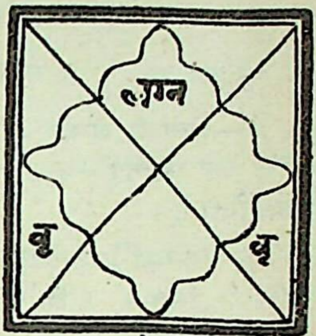
नं०१६+

जिनकी जन्मकुंडली में धन भाव में मंगल विराजमान हो तो उनका धन नाश अग्नि या चोर आदि से होता है। अपनी जन्म-कुण्डली से कुण्डली नं० १७ मिलाएं।

जिनकी जन्मकुंडली में नवम भाव में अथवा पंचम भाव में बृहस्पति विराजमान होय तो उनको भोजन करने-कराने के काम में धन नाश योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० १८ मिलायें।

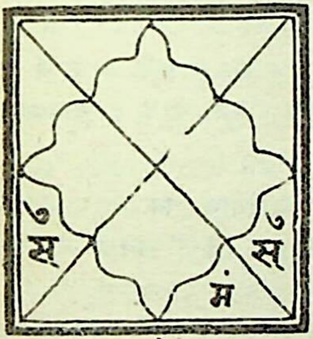


नं० १७ +

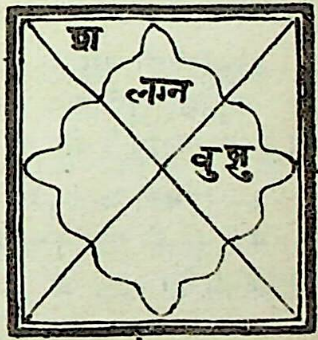


नं० १८ +

जिनको जन्मकुंडली में नीच राशि का सूर्य पंचम भाव में या नवम भाव में विराजमान हो और आठवें भाव में मंगल विराजमान हो तो उनको दरिद्री योग होता है। अपनी जन्मकुंडली से कुंडली नं० १९ मिलायें।



नं० १९ +



नं० २० +

जिनकी जन्मकुंडली में धन भाव में पाप ग्रह हो और दशम भाव में शुभ ग्रह होय तो उनको दरिद्र योग होता है। अपनी जन्म-कुंडली से कुंडली नं० २० मिलायें।

अन्य योग

महाधनी योग

१—जिनकी जन्मकुंडली में बुध, बृहस्पति, शुक्र से युक्त होकर धनेश केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) में विराजमान हो तो उनको महाधनी योग होता है।

२—जिनकी जन्मकुंडली में लग्नेश अपनी राशि का अपनी उच्च राशि का, मित्र की राशि का अथवा शुभ ग्रह की राशि का हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो उनको महाधनी योग होता है।

३—जिनकी जन्मकुंडली में बृहस्पति लग्नेश के साथ १-२-४-५-७-६-१० के भाव में विराजमान हो तो उनको महाधनी योग होता है।

४—जिनकी जन्मकुंडली में पंचम भाव में तथा ग्यारहवें भाव में सम्पूर्ण शुभग्रह विराजमान हों तो उनको महाधनी योग होता है।

५—जिनकी जन्मकुंडली में नवम भाव का स्वामी लग्न में हो और चतुर्थेश चतुर्थ भाव को तथा नवमेष नवम भाव को देखता हो तो उनको महाधनी योग होता है।

६—जिनकी जन्मकुंडली में लग्नेश बलवान होकर शुभ ग्रहों के वर्ग में स्थित हो और केन्द्र के स्वामी से युक्त हो तो उनको महाधनी योग होता है।

धन-सुख भोग योग

१—जिनकी जन्मकुंडली में दशम भाव का स्वामी तथा लाभ भाव का स्वामी एक स्थान में स्थित हों तो उनको धन का सुख भोगने का योग होता है।

२—जिनको जन्मकुंडली में धनेश तथा पंचमेश का योग हो तो उनको धन-सुख भोगने का योग होता है।

३—जिनकी जन्मकुंडली में धनेश तथा लाभेश का योग होय तो उनको धन का सुख भोगने का योग होता है।

४—जिनकी जन्मकुंडली में लग्नेश तथा लाभेश का योग हो तो उनको धन का सुख भोगने का योग होता है।

५—जिनकी जन्मकुंडली में लग्न के स्वामी तथा धनेश का योग हो तो उनको धन का सुख भोगने को होता है।

६—जिनकी जन्मकुंडली में लाभेश पंचमेश से युक्त हो उनको धन का सुख भोगने का योग होता है।

दरिद्री योग

१—जिनकी जन्मकुंडलो में छठे भाव का स्वामी तथा भाग्य भवन 'के स्वामी साथ-साथ हों तो उनको दरिद्री योग होता है।

२—जिनकी जन्मकुंडली में धनेश तथा व्ययेश का योग हो तो उनको दरिद्री योग होता है।

३—जिनकी जन्मकुंडली में छठे भाव के स्वामो तथा तृतीय भाव के स्वामी साथ-साथ हों तो उनको दरिद्री योग होता है।

४—जिनकी जन्मकुंडली में षष्टेश तथा सप्तमेश का योग हो तो उनको दरिद्री योग होता है।

५—जिनकी जन्मकुंडली में लग्नेश अष्टम भाव में तथा अष्टमेश लग्न में दूसरे तथा सप्तम भाव के स्वामी से युक्त हो तो उनको दरिद्री योग होता है।

६—जिनकी जन्मकुंडली से छठे भाव का स्वामी लग्न में तथा लग्न का स्वामी छठे भाव में दूसरे तथा सप्तम भाव के स्वामी से युक्त हो तो उनको दरिद्रो योग होता है।

७—जिनको जन्मकुंडली में धन कारक (बृहस्पति) से दूसरे, चौथे और पंचम भाव में पापग्रह स्थित हो तो उनको दरिद्री योग होता है।

८—जिनकी जन्मकुंडली में धनकारक (बृहस्पति) से तीसरे, छठे भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो उनको दरिद्री योग होता है।

९—जिनकी जन्मकुंडली में चन्द्र, मंगल, बुध, शनि ये चारों ग्रह नीच राशि के हों और मकर राशि का शुक्र हो तो दरिद्री योग होता है।

१०—जिनकी जन्मकुंडली में नवम भाव का स्वामी बारहवें भाव में, बारहवें भाव का स्वामी धन भाव में तथा तीसरे भाव में दो या तीन ग्रह स्थित हो तो उनको दरिद्री योग होता है।

यहां कुछ योग धनवान् तथा दरिद्री योग लिखे गये हैं। यदि किन्हीं की कुंडली में ये योग न मिलें तो उन्हें धन से रहित तथा धनवान नहीं जान लेना चाहिए, क्योंकि इसके अलावा और भी धनवान तथा दरिद्री योग हैं। सुविधा हेतु कुछ योग कुंडली सहित तथा कुछ योग बिना कुंडली के आवश्यकीय जगह दिए हैं। उन पर विचार करके पूर्ण रीति से जानना उपयुक्त रहेगा।

कौन व्यक्ति किस चीज के व्यापार से धनी होगा

जन्मकुंडली की ग्रहस्थिति के आधार पर यहां अनुभव सिद्ध कुछ योग दे रहे हैं, इनके अनुसार आप यह निर्णय सरलता से कर सकते हैं कि—इस व्यक्ति को किस चीज के व्यापार से अथवा कैसे धन की प्राप्ति होगी। नीचे बतलाये गए इन योगों वाली कुण्डलियों में नवमेश और धनेश यदि पर्याप्त बली (नीचांश आदि में न होकर अपनी उच्चादि राशियों में) हों तो जातक महाधनी होता है।

(१) जन्म लग्न और चन्द्रमा दोनों मे तीसरे, छठे, दसवें, ग्यारहवें भाव में सब शुभ ग्रह पड़े हों तो शेयर, लाटरी, सट्टा और अन्य सभी प्रकार के व्यापार से जातक धनी होता है।

(२) दूसरे भाव में वृष या मीन का नीचांश रहित शुक्र हो तो रुई, सूत, कलई, चांदी के व्यापार एवं कारखानों से धनी होगा।

(३) चतुर्थ भाव में वृष, कर्क, तुला के बुध, शुक्र, शनि हों तो विदेशी व्यापार व रुई, फीचर मे व्यक्ति एकाएक धनी बन जायेगा।

(४) पञ्चम भाव में मेष, कर्क, सिंह या धनु राशि में सूर्य, गुरु का सम्बन्ध हो तो भूमिगत (गड़े हुए) धन या लाटरी आदि से व्यक्ति अकस्मात् धनी होगा।

(५) आठवें भाव में वृष, कर्क, कन्या, मीन राशि के पाप-रहित गुरु, शुक्र, बुध वा पूर्ण चन्द्र हों तो सट्टे आदि से एकाएक धनी होगा। यहां गुरु, शुक्र, बुध अस्त नहीं होने चाहिए।

(६) नवम भाव में कर्क, कन्या व मीन राशि के बुध, शुक्र, गुरु हों तो सूत, वस्त्र व्यापार व मशीनरी से धनाढ्य होगा।

(७) दशम भाव में तुला या मकर का बली शनि हो तो अलसी तोरिया,सरसों, एरण्डी के व्यापार से व्यक्ति को महा धन लाभ होगा।

(८) ग्यारहवें भाव में तुला या कुम्भ का बलवान् शनि हो तो लाटरी, सट्टा, शेयरों के द्वारा बिना श्रम के उत्तम धनी होगा। यदि यहां ११वें वृष, कन्या, तुला के पूर्ण चन्द्र, बुध, शनि, हों तो मशीनरी या आढ़त से धनी होगा।

(९) दूसरे या ग्यारहवें भाव में कर्क या मीन के गुरु, शुक्र हों तो धातु, वस्त्र या ठेकेदारी से धनी होता है।

(१०) कर्क राशि का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में गुरु, मंगल से युक्त हो तो सट्टा, लाटरी या रत्नों के व्यापार से धनी हो।

(११) शुभ ग्रह लग्नेश धन स्थान में स्थित हो और धनेश व चतुर्थेश बली हों तो कृषि कर्म (खेती) व भूतिगत (गड़े हुए) धन से व्यक्ति धनी होगा।

नोट—विशेष जानकारी के लिए **सुगम ज्योतिष** मूल्य **24/-** मंगाए।

लाटरी या सट्टे के द्वारा द्रव्य-प्राप्ति ग्रह योग

(१) जिस मनुष्य की जन्मकुण्डली में दूसरे स्थान पर २ या १२ की राशि हो और शुक्र धन में बैठा हो तो चांदी, रुई, वस्त्र, कपास, सूत, सिल्क के व्यापार द्वारा अथवा मिल, कल-कारखानों द्वारा करोड़पति बन जाता है।

(२) जिस जन्मकुंडली के चतुर्थ स्थान में २-४-७ का अंक हो, सूर्य बुध, शुक्र, शनि इनमें से कोई ग्रह बैठा हो तो रुई, फीचर, सट्टा, फाटक, जुआ, लाटरी अथवा विदेश से द्रव्य की प्राप्ति अनायास होती रहती है।

(३) जन्मकुण्डली के पंचम स्थान में १-४-५-६ अंक हो, सूर्य गुरु बैठे हों तो घोड़ों की रेस, लाटरी, पृथ्वी में गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है।

(४) अष्टम स्थान में जिसके २-४-६-१२ चन्द्र, गुरु, बुध, शुक्र इनमें से कोई ग्रह बैठा हो तो अचानक सट्टा, वायदा व्यापार से द्रव्य प्राप्त होता है।

(५) नवम स्थान में ४-६-१२ का अंक हो, बुध, गुरु, शुक्र इनमे से कोई ग्रह हो तो शेयर मार्केट अथवा सरसों, गुवार, गुड़ के व्यापार से धनवान बनता है।

(६) जिस पुरुष की जन्मकुण्डली के दशम स्थान में ७-१० का अंक हो और शनिश्चर बैठा हो उस पुरुष को शेयर, आइरन, मशीनरी, लोहे का सामान, तिल, तेल, सरसों, अलसी, मूंगफली, खोपड़ा, बुरड़ी, कम्बल,ऊन,बकरी, भैंस इत्यादि के व्यापार द्वारा द्रव्य प्राप्त होता है।

(७) ग्यारहवें स्थान पर २-६-७ का अंक हो और चन्द्र, बुध, शनि इनमें से कोई ग्रह आ जावें तो मनुष्य बड़ा मालदार होता है, बडे-बड़े कल-कारखानों का स्वामी बनता है। अनायास द्रव्य प्राप्त होता है। रेल, मोटर, मिल्स, कपड़ा, जवाहरात, स्टीमर, वायुयान,

कम्पनियों का स्वामी बन जाता है अथवा गड़ा हुआ धन मिलता है। लाटरी, शेयर, टाटा डिफर्ट, आइरन द्वारा द्रव्य मिलता है। सारांश यह है कि लक्ष्मी उसके घर में वास करती है।

(८) दूसरे घर का स्वामी बुध होकर यदि लाभ स्थान में आता है तब सट्टे से लाभ होता है।

(९) लग्न का मालिक, दूसरे स्थान का स्वामी, आठवें स्थान का मालिक—ये तीनों ग्रह यदि एकादश स्थान में आ जाते हैं, तब सट्टे से लाभ होता होता है।

(१०) चन्द्रमा आठवें स्थान में २-१२ के अंक पर आ जावे और क्रूर ग्रहों की दृष्टि न हो तो अमेरिका अङ्क द्वारा या वायदा मार्केट से द्रव्य प्राप्त होता है।

(११) गुरु मीन राशि का होकर दूसरे, सातवें, ग्यारहवें स्थान में कहीं पर बैठा हो तो सट्टे से लाभ होता है।

(१२) एकादश स्थान में तीन का अङ्क हो और वहां पर रवि गुरु, बुध में से कोई ग्रह बैठा होवे तो शेयर, सरसों, सन, स्वर्ण अलसी, रुई का व्यापार करने वाला होता है।

(१३) वृष राशि पर मंगल १-४-७-१० इनमें से किसी भी स्थान पर होवे तो सट्टे के व्यापार द्वारा अच्छा लाभ होता है और लक्षाधीश बनता है।

(१४) लग्न में ९ का अङ्क हो, गुरु वहां पर बैठा होवे तो स्वर्ण के व्यापार से लाभ होगा।

(१५) अष्टम स्थान में कर्क राशि का चन्द्रमा हो तो चांदी के व्यापार से लाभ होगा।

(१६) एकादश स्थान में तुला राशि पर शुक्र बैठा हो तो चांदी-सोना दोनों के व्यापार द्वारा लाभ होगा।

(१७) दूसरे स्थान में अथवा दसवें स्थान पर बुध, कन्या राशि पर हो तो व्यापार द्वारा करोड़पति बन जाता है।

(१८) यदि सप्तम स्थान में ३-६ का अङ्क हो और वहां बुध बैठा हो तो रुई, चांदी, शेयर के सट्टे से लखपति बन जाता है तथा लाटरी आदि से भी धन मिलना संभव होता है।

(१९) मीन का शुक्र चतुर्थ स्थान में हो तो गड़ा हुआ धन या लाटरी द्वारा करोड़पति बन जाता है।

(२०) वृष का मंगल छठे स्थान पर हो तो गड़ा हुआ धन मिलता है।

(२१) मकर व कर्क राशि पर गुरु छठें स्थान पर जिसकी कुंडली में हो तो गड़ा हुआ धन या लाटरी आदि से आकस्मिक धन मिलता है।

(२२) चतुर्थ स्थान में यदि वृष राशि का शुक्र हो तो उसमें जमीन-जायदाद स्वतः हो जाती है।

(२३) कर्क लग्न में सूर्य तुला राशि पर बैठा हो, शनि चतुर्थ स्थान पर बुध, शुक्र ५-६ अङ्क के दूसरे अथवा तीसरे स्थान पर बैठा हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही करोड़ों का स्वामी होता है तथा लाटरी आदि से आकस्मिक धन लाभ करता है।

लाटरी या सट्टा से धन मिलेगा या नहीं

लाटरी या सट्टा से अनायास ही धन प्राप्त करने की इच्छा वाले व्यक्तियों को अपनी जन्मकुंडली में सामने लिखे योग मिलाकर पहले यह निश्चय कर लेना चाहिए कि जीवन में कभी लाटरी या सट्टा से धन मिलने का योग है या नहीं। यदि योग है तो जिस ग्रह से योग बन रहा है उसके शुभ सम्बन्ध की दशा या गोचर भ्रमण वश जब भी

धन-लाभ का समय जीवन में बन रहा हो उसी समय लाटरी या सट्टे का काम करना चाहिए, ताकि लाभ मिल सके अन्यथा हानि ही उठानी पड़ेगी।

१—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न या चंद्र लग्न से ३, ६, १०, ११ स्थान में शुभ ग्रह हों और भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो वह ३० वर्ष की अवस्था तक लखपति बन जाता है।

२—धनेश, लग्नेश या धनेश, लाभेश या भाग्येश, दशमेश या धुनेश, पंचमेश का योग नीच या नीचांश रहित १, २, ५, ६, १०, ११ स्थान मे हो तो उसे लाटरी या सट्टा के लाभ से योग के बलानुसार १० हजार से ५० हजार तक अनायास ही धन-लाभ होता है।

३—मीन लग्न हो, पांचवें बुध व ग्यारहवें शनि हो तो ४० हजार का लाभ होता है।

४—केन्द्र स्थान १, ४, ७, १० स्थान में शुभ ग्रह बली हो तो ६० हजार का लाभ होता है।

५—मेष लग्न में गुरु और पांचवें सूर्य हो या मेष लग्न से चतुर्थ गुरु, सप्तम शनि, अष्टम शुक्र हो या मेष लग्न से नवम गुरु, दशम मंगल, पांचवें चन्द्र हो तो ६० हजार से २ लाख तक अनायास ही धन-लाभ होता है।

६—अष्टम स्थान में कुम्भ राशि में बुध-शुक्र हों और शुभ स्थान में चंद्र-मंगल की युति हो तो ४० हजार का लाभ होता है।

७—लग्न से सभी ग्रह १, २, ५, ७, ८, १०, ११ स्थान में हों और किसी भी स्थान में दो से अधिक ग्रह न हों तो अनायास हो महाधनी होता है।

८—पंचम भाव में चंद्रमा और उसे शुक्र देख रहा हो तो अनायास धनी होता है।

९—पंचम भाव में बृहस्पति हो और लग्नेश बलवान हो तो अनायास ही धनी होता है।

१०—मकर का सूर्य रहित चंद्रमा लग्न में हो, चौथे या सातवें स्थान में गुरु हो तथा अस्त नीच और नीचांश रहित शनि शुभ स्थान में हो तो अनायास ही धनी होता है।

११—लग्न सिंह हो और उसमें चंद्रमा विराजमान हो तथा सप्तम भाव में शनि, ग्यारहवें भाव में गुरु, मंगल का योग हो तो अनायास ही धनी होता है।

१२—लग्नेश बली हो और राहु बुध कारक हो तो अनायास ही धनी होता है।

१३—पंचमेश और लग्नेश का योग हो तो अनायास ही धनी होता है।

१४—धनेश और लाभेश चतुर्थ में हों और चतुर्थेश शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो अनायास ही धनी होता है।

नोट—दो ग्रहों का एक राशि में योग ५ अंश से जितना कम हो वही उत्तम योग होता है।

लाटरी व सट्टा से धन-लाभ का समय

यदि जन्मकुंडली में लाटरी या सट्टा से धन-लाभ के योग बन रहे हों तो लाभकर्ता ग्रहों में से जो ग्रह बली हो उसकी या उसके सम्बन्धी की दशा अन्तर्दशा में प्रायः लाभ होता है या जन्मकुंडली में सम्पत्तिदायक १, २, ४, ५, ७, ९, १०, ११ भाव के स्वामी गोचर में स्वगृही होकर अपने-अपने स्थान में आवे या सम्पत्तिदायक स्थान के स्वामियों की किसी भी सम्पत्तिदायक स्थान में युति होय तो उस समय में लाटरी या सट्टा से अनायास ही धन-लाभ होता है।

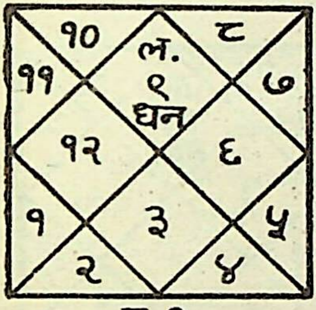
विशेष नोट—उपरोक्त योग जन्मकुंडली से देखें। जिनकी जन्म-कुडली न हो उनको प्रश्न लग्न से देखना चाहिए। जिस समय यह प्रश्न देखना चाहें उसी समय की लग्न बनाकर योग देखें। विशेष के लिए पंचांगकर्ता को २१) रु० व जन्मकुंडली, यदि जन्मकुंडली न

हो तो पत्र लिखने का समय भेजकर लाटरी के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करें।

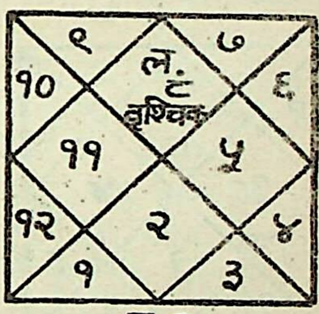
पता—पंचांगकर्ता पं० रामगोपाल शास्त्री, मु०, पो०—पैंगांव (वाया छाता) जि० मथुरा उ० प्र०, (भारत)।

लाटरी आदि के द्वारा किस अवस्था में भाग्य का सितारा चमकेगा

१—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न ९ (धन) हो उनका २२ वर्ष की अवस्था में लाटरी आदि के द्वारा भाग्य का सितारा चमकता है। अपनी जन्मकुंडली कुंडली नं० १ से मिलायें।



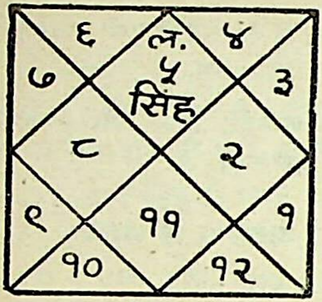
नं. १



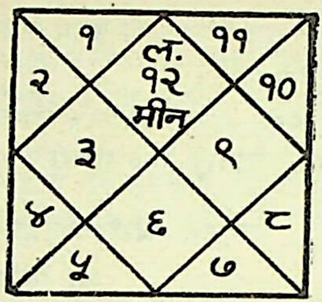
नं. २

२—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न वृश्चिक हो उनका २४ वर्ष की अवस्था में लाटरी आदि से भाग्य का उदय होता है। अपनी जन्मकुंडली कुंडली नं० २ से मिलायें।

३—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न सिंह या मीन हो उनका २८ वर्ष की अवस्था में लाटरी आदि से भाग्योदय होता है। अपनी जन्मकुंडली कुंडली नं० ३ व ४ से मिलायें।

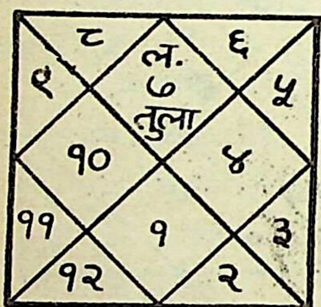


न. ३

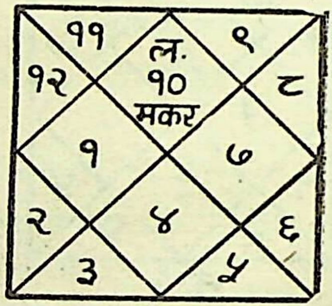


न. ४

४—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न तुला या मकर हो उनका ३२ वर्ष की अवस्था में लाटरी आदि से भाग्योदय होता है। अपनी जन्मकुंडली कुंडली नं० ५ व ६ से मिलायें।



न. ५

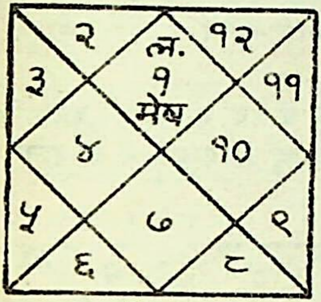


न. ६

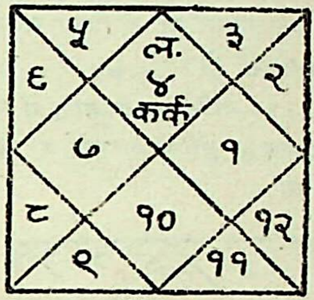
५—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न मेष या कर्क लग्न हो उनका १६ वर्ष की अवस्था में लाटरी आदि से भाग्योदय होता है। अपनी जन्मकुंडली कुंडली नं० ७ व ८ से मिलायें।

६—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न कन्या या कुंभ हो उनका २५ वर्ष की अवस्था में भाग्य का उदय होता है। अपनी जन्मकुंडली कुंडली नं० ९ व १० से मिलायें।

७—जिनकी जन्मकुंडली में जन्म लग्न वृष या मिथुन हो उनका ३६ वर्ष की अवस्था में लाटरी आदि से भाग्य का उदय होता है अपनी जन्मकुंडली कुंडली नं० ११ व १२ से मिलायें।



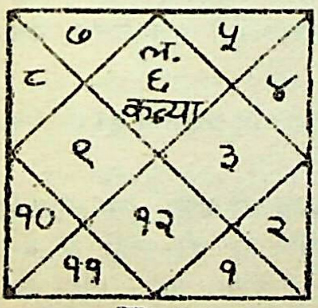
नं. ७



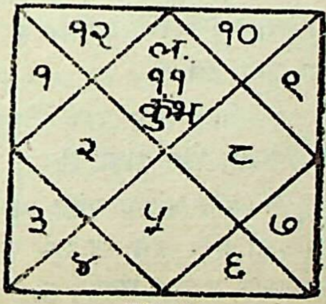
नं. ८

८—अपनी जन्मकुंडली में सप्तम भाव का स्वामी अथवा शुक्र ३, ६, ७, १०, ११ इन स्थानों में विराजमान हो तो विवाह के पश्चात् लाटरी आदि से भाग्य का उदय होता है।

९—यदि जन्मकुंडली में नवमभाव में रवि, चंद्र, मंगल, बुध ये चारों ग्रह विराजमान हों तो विद्वान, यदि रवि, चंद्र, मंगल, शुक्र ये ग्रह विराजमान हों तो निंदनीय कार्य करने वाला, यदि रवि, मंगल,



नं. ९

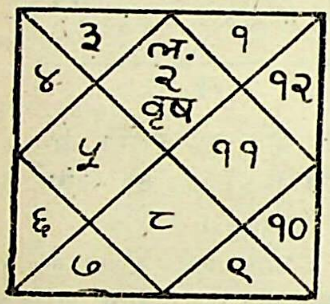


नं. १०

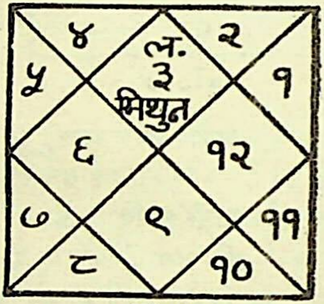
बुध, बृहस्पति ये ग्रह विराजमान हों तो उत्तम भाग्य वाला समझना चाहिए ।

१०—यदि जन्मकुंडली में रवि, मंगल, बुध, शुक्र ये नवम भाव में विराजमान हों तो पैतृक सम्पत्ति को नाश करने वाला तथा पर-स्त्री-गामी होता है ।

११—यदि जन्मकुंडली में नवम भाव में चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति विराज़मान हों तो जातक की माता की मृत्यु बाल्यकाल में ही जाननी चाहिए ।



न. ११



न. १२

१२—यदि जन्मकुण्डली में नवम भाव में चंद्र, बुध, शुक्र, शनि विराजमान हों तो लोकनीति का जानकार, क्रोधी तथा उत्तम भाग्यशाली होता है ।

१३—यदि नवम भाव में सूर्य, बृहस्पति विराजमान हों तो लख-पति होने का योग होता है ।

१४—यदि जन्मकुण्डली में नवम भाव में उच्च का बृहस्पति या शुक्र हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो इन्हीं की दशा अन्तर्दशा में जातक अवश्य ही प्रधान न्यायाधीश, एम०, एल० ए०, एम० पी० अथवा शासन कार्य में उच्च अधिकारी के पद पर स्थित होता है ।

१५—यदि जन्मकुण्डली में नवम भाव में बृहस्पति हो और उस पर मंगल, बुध की पूर्ण दृष्टि हो तो भूमि सम्बन्धी कार्यों से जातक लखपति बनता है। यदि मंगल, शनि की दृष्टि हो तो धन-धान्य से पूर्ण होता है।

यदि सूर्य, बुध की दृष्टि हो तो जातक सम्पादक, संशोधक या पूर्ण विद्वान बनता है।

यदि चंद्र, मंगल की दृष्टि हो तो जातक सेना या पुलिस में नौकरी करने वाला होता है।

यदि चंद्र, शुक्र की दृष्टि होय तो संतानहीन और कुटुम्ब से दुखी बना देता है।

यदि शुक्र की दृष्टि होय तो जातक अनेक प्रकार के वाहनों से युक्त होता है और इन्हीं दशा अन्तर्दशा में वाहन योग बनता है।

विशेष—लाटरी आदि से भाग्य का उदय देखने से पूर्व निम्न बातें अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए—

१—अपनी जन्मकुण्डली का नवम स्थान तथा उसका अन्य स्थानों से सम्बन्ध।

२—अपनी जन्मकुण्डली में भाग्येश और राज्येश, भाग्येश और लाभेश, भाग्येश और लग्नेश तथा भाग्येश और पंचमेश का सम्बन्ध।

३—अपनी जन्मकुण्डली में नवम भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

४—दशा, अन्तदशा तथा प्रत्यन्तर्दशा।

५—जन्मकुण्डली में नवम भाव को ही भाग्य भवन कहते हैं। इसे लग्न से या चंद्रमा से देखना चाहिए, जिससे कि बली बने उसी से देखना चाहिए।

६—ग्रहों में बृहस्पति का नवम भाव से विशेष सम्बन्ध माना गया है, क्योंकि बृहस्पति भाग्य, प्रभाव, धर्म, तप और शुभ आदि कार्यों के सूचक हैं।





॥ अथ चमत्कारिक केरल सिद्ध प्रश्नावली ॥

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्नद्यःरात्रौतु देवतां वदेत् ॥१॥

अष्टवर्गाः	ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
प्रश्नाक्षराणि	स्वर अ.इउएओ	कवर्ग कखगघङ	चवर्ग चछजझञ	टवर्ग टठडढण	तवर्ग तथदधन	पवर्ग पफबभम	यवर्ग यरलव	शवर्ग शषसह
प्रश्ननिर्णयः	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति
मूकप्रश्नः	धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव
आयुप्रश्न	१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	४५ वर्ष	७८ वर्ष	१६ वर्ष
सुखदुःख प्रश्न	सुख	दुःख	सुख	दुःख	सुख	दुःख	सुख	दुःख
स्त्रीलाभप्रश्न	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि
पुत्रकन्या प्रश्न	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या
विद्याप्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति
कार्यसिद्धि प्रश्न	स्थिर	न सिद्धि	शीघ्रसिद्धि	अतिविलंब	शीघ्र	अतिविलंब	स्थिर	न सिद्धि
व्यवहारप्रश्न	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह
व्यापार लाभहानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि
रोगी प्रश्न	आरोग्य	संकट	सुख	कष्ट	आरोग्य	कष्ट	सुख	दुःख
कष्ट दिन	७ दिन	२ मास	१५ दिन	१ मास	११ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास
प्रवासी प्रश्न	कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी
प्रवासीर स्थिर	समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत
प्रवासीगमागम	समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत
शत्रुगमागमौ	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम
जयपराजय प्रश्न	जय	पराजय	जय	पराजय	जय	पराजय	अजय	पराजय
वृष्टिप्रश्न	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	न वर्षा

वृष्टिदिनानि	१७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०
धनलाभप्रश्न	प्राप्ति	व्यय	प्राप्ति	हानि	लाभ	व्यय	प्राप्ति	हानि
मुष्टिप्रश्न	पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प
मुष्टिवर्ण	कौसुम्भ	श्वेत	लोहितांग कृष्ण	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र
धान्यज्ञान	गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव
नष्टवस्तुलाभ प्रश्न	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि
नष्टदिशा ज्ञान	पूर्व	आग्नेयकोण	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
चौर जाति	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	भील	नाई
नष्ट वस्तु स्थान	उखलमें	भोजनालयमें	वनमें	अन्तरिक्षमें	बरतनमें	काष्ठ पात्रमें,	घर में	पृथ्वीके भीतर
परीक्षोतीर्ण प्रश्न	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
भाग्योदयविचार	उत्तम	नेष्ट	उत्तम	नेष्ट	उत्तम	नेष्ट	उत्तम	नेष्ट
उच्चपदप्राप्ति प्रश्न	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति
बन्दीमोक्ष प्रश्न	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष
सर्व कार्यावधि ज्ञान	७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	५ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष
देवपूजा	कुलदेव	दुर्गा	सूर्य	हनुमत	शिव	सरस्वती	गणपति	पितृदेव

❁ उपरोक्त प्रश्नावलीके प्रश्न देखनेकी सरल विधिः—

यदि प्रश्नकर्ता प्रातःकाल सूर्योदय से ११ बजे तक प्रश्न करे तो पूर्वोत्तर दिशामें प्रश्नकर्ता का मुख रखा कर उनके इष्टदेव तथा प्रश्नको ध्यान कराते हुये किसी भी पुष्पका नाम मुखसे बोलाना, मध्याह्न में (११ बजेसे ३ बजे तक) फल का नाम, सायंकाल (३ बजेसे सूर्यास्तपर्यंत) नदी का नाम एवं रात्रिमें किसी देवताका नाम उच्चारण करवाना चाहिये। पुष्प, फल, नदी, देवता इनका पहिला अक्षर ग्रहण करके वो वर्ण अष्टवर्गोंमें जहां हो उस वर्गमें नीचे एवं प्रश्न कोष्ठक के बायें ओर जहां पर दोनोंका सम्मेलन हुआ है वही प्रश्नका फल जानना।

उदाहरणः—जैसे किसीने दिनके ५ बजे आकर प्रश्न पूछा कि मुकदमे में मेरी जीत होगी ? तब सायंकाल होनेसे प्रश्नकर्ताके मुखसे नदी का नाम उच्चारण करवाया तो उसने "नर्मदा" नदीका नाम कहा—इसका पहिला अक्षर 'न' है यह रूप वर्ग के तवर्ग में है, अतः इसके नीचे और जय पराजय प्रश्न कोष्ठक के बांई ओर दोनों के सम्मिलन में 'जय' फल लिखा है। अतएव प्रश्नकर्ता की इस मुकदमें में निश्चय रूपसे विजय होगी। इसी तरह सम्पूर्ण प्रश्नोंका फल समझना।

॥ अथ ग्रहाणां स्वक्षेत्र मित्रशत्रूच्चराश्यादि बोधक चक्रमिदम् ॥

ग्रहाणांनाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शुभपापग्रहाः	पाप	शुभ	पाप	शुभ.	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
राशिनाम	मेष वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह कन्या	तुला	वृश्चिक धन	मकर कुम्भ	मीन	०
ग्र.स्वक्षेत्राणि	सिंह.	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धन मीन	वृषभ तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मीन
मित्रग्रहाः	चं. म गु.	सू. बु.	सू.गु.चं.	सू. रा. शु.	सू.चं.मं.	बु रा. श.	बु. रा. शु.	बु.श.शु.	बु.
समग्रहाः	बु	मं. शु गु. श	शु. श.	मं.श.गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु	०
शत्रुग्रहाः	श. रा. शु.	राहु	बु. रा.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू चं.मं.	सू.चं.मं.	०
उच्चराशयः परमोच्चांशाः	मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन ०	०
नीचराशयः नीचांशाः	तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धन ०	०
ग्रहाणाम् एकपाददृष्टिः	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०१	३।१०	३।१०

द्विपाददृष्टिः	५।९	५।९	५।९	५।९	००	५।९	५।९	५।९	५।०
त्रिपाददृष्टिः	४।८	४।८	००	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।६
सम्पूर्णदृष्टिः	७	७	४।८।७	७	५।९।७	७	३।१०।७	७	७
विंशोतरीदशाप्रदनक्षत्राणि	कृ उफा. उषा.	रो.ह.श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन वि. पू.भा.	भ.पूफा. पूषा.	पुष्य अनु उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म.मू. अश्वि.
विंशोतरीदशा वर्षाणि	६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७
योगिनीदशा वर्षाणि	मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रा ५	उल्का ६	सिद्धा. ७	सकठा ८	०
यो द. प्र. नक्षत्राणि	श्र. आर्द्रा चि.	ध. पुन. स्वा.	श. पुष्य वि.	पू भा.आ. आश्ले.अनु	भ.म.ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू रे.	रो.उफा. पू. षा.	मृ. ह. उ. षा.	०
ग्र. पु. स्त्री. न.	पुरुष	स्त्री.	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री.	स्त्री	पुरुष	पुरुष
ग्रहाणां वर्षाणि	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२
नेष्ट ग्रहवर्षे-दानादि	हरिवंश श्रवण	रुद्राचंन अभिषेक	रुद्रीजप	कांस्यदान	अमावस्या व्रत	गौ सेवा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजादान	ध्वजा दान

अनुक्रमणिका

केरल ज्योतिष विद्या की अत्युत्तम पुस्तक

केरल ज्योतिष शास्त्र

[भाषाटीकासहितः]

प्रथम भाग (1st Volume)

1

त्रैलोक्यफलबोधाय येन दिव्येन चक्षुषा।
त्रिकालविषयाः प्रोक्तास्तस्मै केरलये नमः ॥ १ ॥

तीनों लोक के शुभाशुभ फल जानने के लिये जिसने अपने दिव्यनेत्र से भूत, भविष्य, वर्तमान विषय को कहा है उस केरल महानुभाव को नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

ज्ञानदीपकमासाद्य वर्तिं कृत्वा सदक्षरैः।
स्वरस्नेहेन संयोज्य ज्वालयेदुत्तरेन्धनैः ॥ २ ॥

ज्ञानरूपी दीपक को अक्षररूप बत्ती, स्वर रूप तैल और उत्तररूप लकड़ी से प्रज्वलित करना चाहिये ॥ २ ॥

प्रश्नोत्तर कहने में योग्य व्यक्ति और समय—

क्षुद्र-पाखण्ड-धूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके।
नोत्तरं तथ्यतामेति यदि शम्भुः स्वयं वदेत् ॥ ३ ॥
सभायां नैव वक्तव्यं नैव प्रश्नोत्तरं निशि।
नापराह्णे त्वविश्वस्ते त्वरितं न कदाचन ॥ ४ ॥

क्षुद्र, पाखण्डी, धूर्त, श्रद्धाहीन और उपहास करने वाले को यदि स्वयं महादेव भी प्रश्नोत्तर कहैं तो भी सत्य नहीं हो सकता है। सभा में, रात्रि में, अपराह्ण में तथा अविश्वस्तों को और बिना विचारे हुए जल्दी में प्रश्नोत्तर नहीं कहना चाहिये ॥ ३–४ ॥

भक्तायार्ताय दीनाय दैवज्ञो न दिशेद्यदि।
विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्यः सदा वदेत् ॥ ५ ॥

भक्तिमान्, दुखी और धनहीन जनों को जो प्रश्नोत्तर नहीं कहता वै उसका ज्ञान व्यर्थ हो जाता है, इस लिये इन लोगों को अवश्य उत्तर कहना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रश्न करने की विधि—

सम्पूज्य खचरान् साङ्गान् दैवज्ञं स्वक्रियापरम्।
श्रद्धायुक्तः पूर्णपाणिः पृच्छेदव्याकुलः पुमाम् ॥ ६ ॥
फलपुष्पयुतो या हि दैवज्ञं परिपृच्छति।
तस्यैव कथयेत् प्रश्नं सत्यं भवति नान्यथा ॥ ७ ॥

साङ्ग नवग्रहों की (पञ्चोपचार से, अथवा मानसिक) पूजा करके जो ज्यौतिषी अपने कर्म में दक्ष हो उसके पास यथा-शक्ति फल द्रव्यादि युक्त जाकर सावधान चित्त से प्रश्न करै। ज्योतिषियों को चाहिये कि—जो फलादियुक्त आकर प्रश्न करै उसी को प्रश्न कहै, अन्यथा उत्तर सत्य नहीं होता है ॥६–७॥

दिशा से प्रश्न का शुभाशुभ फल—

प्राची प्रतीची माहेशी कौबेरी दिक् शुभावहा।
अवाची राक्षसी दुष्टा शून्याग्नेयी च मारुती ॥ ८ ॥

यदि पूर्व, पश्चिम, ईशान और उत्तर में बैठकर प्रश्न करैं तो शुभ तथा दक्षिण और नैऋत्यकोण में अशुभ और अग्नि, वायुकोण से शून्य फल समझना चाहिये ॥ ८ ॥

प्रश्न समय में शुभ शकुन—

दृङ्मनसो प्रीतिकरं प्रश्नेषु दर्शनं यदि श्रवणम् ।
माङ्गल्यद्रव्याणां भवति शुभं विनिर्दिशेत्तत्र ॥ ९ ॥
हय-गज-वृष-हंसादेः पृच्छाकाले यदा रुतं भवति ।
दर्शनमथवा तेषां शुभदं प्रश्नं विनिर्दिशेत्तत्र ॥१०॥

प्रश्न समय में दृष्टि और मन के प्रसन्नकारक तथा मङ्गलमय वस्तुओं का दर्शन या श्रवण हो, तथा हाथी, घोड़ा, हँस आदि पक्षियों के शब्द श्रवण या दर्शन हो तो प्रश्न का फल शुभ समझना ॥ ९–१० ॥

विशेष—इससे सिद्ध होता है कि अशुभ वस्तु के दर्शन और श्रवण से अशुभ फल होता है ॥ ९–१० ॥

प्रश्नों के संयुक्त आदि आठ भेद—

संयुक्तः, असंयुक्तः, अभिहतः, अनभिहतः, अभि-
घातिकः, आलिङ्गितः, अभिधूमितः, दग्ध इति ॥११॥

इस प्रकार प्रश्नों के आठ भेद हैं ॥ ११ ॥

उनके लक्षण—

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये स्वकायं स्पृष्ट्वा पृच्छति ।
तदा संयुक्तप्रश्नः स च लाभकारो भवति ॥१२॥

यदि प्रश्नकर्ता अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो 'संयुक्त' प्रश्न समझना; वह लाभकारक होता है ॥ १२ ॥

यदि पथि शयानो दोला-गज-तुरङ्गारूढो वा भवति ।
भावरहितः फलद्रव्यविवर्जितः पृच्छति तदाऽसंयुक्तप्रश्नः ।
अस्मिन् बहुदिनानन्तरं लाभादिसुखं भवति ॥१३॥

यदि मार्ग में चलता हुआ, वा सोया हुआ, पालकी, हाथी, घोड़ा आदि सवारी पर चढ़ा हुआ भावहीन, फल-द्रव्यरहित होकर पूछे तो असंयुक्त प्रश्न समझना, वह बहुत दिनों में सुख लाभकारक होता है ॥ १३ ॥

यदि प्रष्टा वामहस्तेन वामाङ्गं स्पृशति,
तदाऽभिहतः प्रश्नः, अलाभकरो भवति ॥१४॥

यदि वाम हाथ से अपने वाम अङ्ग का स्पर्श करता हुआ पूछे तो अभिहत प्रश्न समझना, वह लाभकारक नहीं होता है ॥ १४ ॥

यदि प्रष्टा स्वहस्तेन परकायं स्पृशति,
तदाऽनभिहतः प्रश्नः कार्यस्य लाभकरो भवति ॥१५॥

यदि अपने हाथ से दूसरे का अङ्ग स्पर्श करता हुआ पूछे तो अनभिहत प्रश्न कहाता है, वह कार्य सिद्धकारक होता है ॥ १५ ॥

यदि प्रष्टा मस्तकं कटिं हृदयं हस्तं पादं च मर्दयेत्,
तदाऽभिघातिकः प्रश्नः शोकसन्तापकारको भवति ॥१६॥

यदि मस्तक, कमर, हृदय, हाथ, पैर खुजलाता हुआ पूछे तो अभिघातिक प्रश्न समझना, वह शोक, सन्तापकारक होता है ॥ १६ ॥

यदि प्रष्टा दक्षिणकरेण निजं दक्षिणाङ्गं स्पृशति
तदाऽऽलिङ्गितः प्रश्नः लाभसुखादिकारको भवति ॥१७॥

यदि अपने हाथ से अपने दाहिने अङ्ग का स्पर्श करता हुआ पूछे तो आलिङ्गित प्रश्न होता है, वह सुख, लाभ आदिकारक होता है ॥ १७ ॥

यदि प्रष्टा दक्षिणकरेण वामकरेण वा सर्वाङ्गं स्पृशति तदाऽभिधूमितः प्रश्नः। अस्मिन् प्रश्ने किञ्चिल्लाभः मित्राद्यागमनं च ॥१८॥

यदि अपने हाथ से सर्वाङ्ग (अनेक अङ्ग) का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो अभिधूमित प्रश्न होता है, उसमें थोड़ा लाभ और मित्रादि का आगमन होता है ॥ १८ ॥

यदि प्रष्टा रोदनदुःखभयार्तनीचस्थलसन्निधौ भक्तिभाव-रहितः पृच्छति तदा दग्धप्रश्न उदाहृतः। एष प्रश्नः शोकसन्ताप-दुःखपीडावहुलाभकरो भवति ॥१९॥

यदि रोते हुए, दुखी, भय पीड़ित आदि तथा अधमजनों के समीप में प्रश्न करै तो दग्ध प्रश्न कहाता है, वह प्रश्न शोक, सन्ताप, दुःख और हानिकारक होता है ॥ १६ ॥

2

अथ जीवधातुमूलज्ञाननष्टद्रव्यस्थानवन्धमोक्षण-
जीवित मरणजयपराजयलाभालाभगमनाऽऽगमनत्रि-
कालप्रश्नान् प्रकाशयतीदं शास्त्रं नाऽन्यथा ॥ १ ॥

स्पष्टार्थ। भाव यह है कि यह (केरल) शास्त्र भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल के फल बतलाने वाला है। इसमें अन्यथा नहीं होता है ॥ १ ॥

जीव, धातु और मूल का ज्ञान—

उर्ध्वदृष्ट्या भवेज्जीव अधोदृष्ट्या च मूलकम् ।
समदृष्ट्या भवेद्धातुर्मूलदेवेन भाषितम् ॥ २ ॥

ऊपर दृष्टि करके पूछे तो जीव, नीचे दृष्टि करके पूछे तो मूल, और सामने दृष्टि करके प्रश्न करे तो धातु सम्बन्धी प्रश्न समझना। ऐसा मूलदेव आचार्य ने कहा है ॥ २ ॥

यदा प्रष्टा प्रश्नं पृच्छति तदा दिनमानं त्रिभि-र्विभज्योदये आलिङ्गितप्रश्नः ॥३॥ मध्यवेलायां अभिधूमितप्रश्नः ॥४॥ अस्तङ्गतवेलायां दग्ध-प्रश्नः ॥ ५ ॥ उदयवेलायां जीवधातुमूलम् ॥६॥ मध्यवेलायां धातुमूलजीवं वदेत् ॥७॥ अस्तङ्गतवेलायां मूलजीवधातुं वदेत् ॥८॥

जिस दिन प्रश्न करें, उस दिन दिनमान के ३ भाग करना, प्रथम भाग (उदय वेला) में प्रश्न हो तो आलिङ्गित, मध्यभाग में प्रश्न हो तो अभिधूमित, तृतीय भाग (अस्तवेला) में प्रश्न हो तो दग्ध प्रश्न समझना। उदय वेला के भी बराबर ३ भाग बनाकर क्रम से जीव धातु और मूल। मध्य वेला के ३ भाग में क्रम से धातु, मूल, जीव। अस्त वेला के ३ भाग में क्रम से मूल, जीव, धातु सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिये ॥ ३–८ ॥

उदाहरण—किसी ने सूर्योदय से ७ घड़ी पर प्रश्न किया, उस दिन दिनमान २७ है, तो ९, ९ घड़ी के तीन भाग हुए। अतः प्रथम (उदय) वेला में प्रश्न होने के कारण आलिङ्गित प्रश्न हुआ। अब प्रथम वेला के भी तीन भाग करने से ३–३ घड़ी हुई, इसलिये प्रश्न का समय तृतीय भाग में पड़ा, अतः मूल सम्बन्धी प्रश्न है, ऐसा उत्तर हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र उक्तलक्षणों से समझना ॥ ३–८ ॥

आलिङ्गितवेलायामालिङ्गितप्रश्ने आलिङ्गितफलम् ॥ ९ ॥ आलिंगितवेलायामभिधूमितप्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥ १० ॥ आलिङ्गितवेलायां दग्धप्रश्ने दग्धफलम् ॥ ११ ॥

इस प्रकार यदि आलिङ्गित वेला में ही आलिङ्गित (प्रथम भाग) में प्रश्न हो तो आलिङ्गित का फल, यदि आलिङ्गित वेला में अभिधूमित (द्वितीय भाग) में प्रश्न हो तो अभिधूमित का फल, यदि आलिङ्गित वेला के दग्ध (तृतीय भाग) में प्रश्स हो तो दग्ध फल समझना। जैसे—उपरोक्त प्रश्न में आलिङ्गित वेला के तृतीय भाग (दग्ध) में प्रश्न समय है, इसलिये दग्ध प्रश्न हुआ ॥ ९–११ ॥

अथाभिधूमितवेलायामभिधूमितप्रश्ने आलिंगितफलम् ॥१२॥ अभिधूमितवेलायां दग्ध-

**प्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥ १३ ॥ अभिधूमि-
तवेलायामालिंगितप्रश्ने दग्धफलम् ॥१४॥**

अभिधूमित वेला में भी यदि अविधूमित (प्रथम भाग) में प्रश्न हो तो आलिङ्गित फल, अभिधूमित वेला के दग्ध (द्वितीय भाग में) प्रश्न हो तो अभिधूमित, अभिधूमित वेला के आलिङ्गित (तृतीय भाग में) प्रश्न हो तो दग्ध ही फल समझना ॥ १२–१४ ॥

दग्धवेलायां दग्धप्रश्ने आलिंगितफलम् ॥ १५ ॥

दग्धवेलायामालिंगितप्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥१६॥

दग्धवेलायामभिधूमितप्रश्ने दग्धफलम् ॥ १७ ॥

दग्धवेला के दग्ध (प्रथम भाग) में प्रश्न हो तो आलिङ्गित, दग्धवेला के आलिङ्गित (द्वितीय भाग) में प्रश्न हो तो अभिधूमित, दग्धवेला के अभिधूमित (तृतीय भाग) में प्रश्न हो तो दग्ध फल समझना ॥ १५–१७ ॥

3

**पूर्वाह्ले बालकमुखात् पुष्पनाम तु ग्राहयेत ।
मध्याह्ले युवतिमुखात् फलनाम च ग्राहयेत् ॥ १ ॥
अपराह्ले वृद्धमुखात् वृक्षनाम च ग्राहयेत् ।
नद्या वा ग्राहयेन्नाम रात्रौ सर्वमुखाद्बुधः ॥ २ ॥**

पूर्वाह्ण (दिन के प्रथम भाग) में बालक के मुख से किसी पुष्प के नाम ग्रहण करावे । द्वितीय भाग में स्त्री के द्वारा किसी फल का नाम उच्चारण करावे । दिन के तृतीय भाग में वृद्ध पुरुष के द्वारा किसी वृक्ष (वट, पिप्पल आदि) और रात्रि में सब के मुख से नदी (गङ्गा आदि) का नाम ग्रहण करावै । और उन अक्षरों से आगे कहे विधि से पिण्ड बनाकर फल कहै ॥ १–२ ॥

अथवा—पृच्छकस्य वाक्याक्षराणि स्वरसंयुक्तानि ग्राह्याणि ।
यदि च प्रश्नाक्षराण्यधिकान्यस्पष्टानि भवेयुस्तदाऽयं विधिः ॥३॥
यदि पृश्नकर्ता ब्राह्मणस्तदा तन्मुखात् पुष्पस्य नाम ग्राहयेत् ॥४॥
यदि पृश्नकर्ता क्षत्रियस्तदा कस्याश्चिन्नद्या नाम ग्राहयेत् ॥५॥
यदि पृश्नकर्ता वैश्यस्तदा देवानां मध्ये कस्यचिद्देवस्य नाम ग्राहयेत्६
यदि पृश्नकर्ता शूद्रस्तदा कस्यचित्फलस्य नाम ग्राहयेत् ॥७॥

अथवा प्रश्नकर्ता के मुख से जो अक्षर निकले—उसी से पिण्ड बनावे। यदि प्रश्न में बहुत अक्षर बोले—अथवा अस्पष्ट (साफ नहीं) हो तो फिर ऐसा करै कि—प्रश्नकर्ता ब्राह्मण हो तो उससे किसी फूल का नाम, क्षत्रिय हो तो नदी का नाम, वैश्य हो तो देवता के नाम, यदि शूद्र हो तो किसी फल का नाम ग्रहण करावे ॥ ३–७ ॥

इस प्रकार पिण्ड बनाने के लिये वर्ण और स्वरों के ध्रुवाङ्क—

१२ २१ ११ १८ १५
अर्का प्रकृतिरीशानो धृतिः पञ्चदशैव हि ।
२२ १८ ३२ २५ १९
जातिरष्टादश रदास्तत्त्वान्येकोनविंशतिः ॥ ८ ॥
२५ १३ ११ २१ ३० १० १५
तत्त्वं विश्वे भवा एकविंशतिः खाऽग्निदिक्तिथिः ।
२१ २३ २६
मूर्च्छना रामनेत्राणि ततः षड्विंशतिः स्मृतः ॥ ९ ॥
२६ १० १३ २२ ३५
षड्विंशदश-विश्वेऽक्षि-नेत्र-पञ्चगुणास्तथा ।
८५ १४ १८ १७ १३ ३५
पञ्चाब्धिमनुधृत्याष्टि-रामेन्दुशरवह्नयः ॥ १० ॥
२८ १८ २६ २७ ८६
वस्वक्षिधृतिषड्विंशतारकाः षड्गजास्तथा ।
१६ १३ १३ ३५
कला विश्वेत्रिचन्द्राश्च बाणरामास्तथा स्मृताः ॥११॥

२६ ३५ ३५ १२
ऋत्वक्षिशररामाश्च बाणरामास्तथा इनाः ।
अकारादिहकारान्तवर्णानां तु ध्रुवाः स्मृताः ॥१२॥

ये अर्क (१२) अकारादि हकारान्त सब अक्षरों के ध्रुव हैं ।

अथ स्पष्टार्थ चक्र—स्वरध्रुवाङ्क चक्रम्

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१६	२५

अथ व्यञ्जनध्रुवाङ्क चक्रम्

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ट्
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०
ठ्	ड्	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	फ्
१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	१३	३५	२८	१८
ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
२३	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२

उदाहरण—जैसे किसी ब्राह्मण ने प्रश्न किया तो उससे पुष्प का नाम ग्रहण करवाने से 'गुलाब' का नाम लिया । अतः (ग = २१, उ = १५, ल १३, आ = २१ ब = २६ अ = १२) वर्ण और स्वर के सब ध्रुवों का योग १०८ यह पिण्ड हुआ ॥

लाभ प्रश्न विचार—

लाभाऽलाभे द्विचत्वारि ४२ क्षेपो भागास्त्रिभिः स्मृतः ।
एकशेषे च लाभः स्याद्द्विशेषे स्वल्पलाभकः ॥१३॥
शून्यशेषे तु हानिः स्याल्लाभालाभस्य लक्षणम् ।

लाभालाभ का प्रश्न हो तो पिण्ड में ४२ जोड़कर ३ के भाग देने से १ शेष में लाभ, २ में अल्प लाभ, ० में हानि समझना ॥ १३ ॥

जयपराजय प्रश्नविचार—

जयाऽजये क्षेपकस्तु चतुस्त्रिंशत्प्रकीर्तितः ॥१४॥

रामैर्भागं समाहृत्य एकशेषे जयं वदेत् ।
द्वाभ्यां सन्धि वदेत् प्राज्ञः शून्यशेषे पराजयः ॥१५॥

जय पराजय का प्रश्न हो तो पिण्ड में ३४ जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में जय, २ में सन्धि, ० शून्य में पराजय कहना चाहिये ॥ १४–१५ ॥

सुख-दुःख प्रश्न विचार—

सुख-दुःखे क्षेपकस्तु अष्टरामाः स्मृतो बुधैः ।
अत्र भागो लोचनाभ्यामेकशेषे सुखं भवेत् ॥१६॥

सुख-दुःख का प्रश्न हो तो पिण्ड में ३८ जोड़कर २ के भाग देने से १ शेष में सुख, ० में दुःख समझना चाहिये ॥ १६ ॥

गमन प्रश्न—

शून्ये दुःकं विजानीयात्सुखदुःखस्य लक्षणम् ।
गमने रामरामाश्च क्षेपकः परिकीर्तितः ॥१७॥
त्रिभिर्भागं समाहृत्य एकशेषे गमः स्मृतः ।
द्वाभ्यां स्थितिर्विनिर्देश्या शून्ये मार्गान्निवर्तनम् ॥१८॥

गमन प्रश्न में पिण्ड में ३३ जोड़ कर ३ के भाग से १ शेष में गमन, २ में स्थिति (अर्थात् गमन नहीं) और शून्य शेष में यात्रा करके मार्ग से ही लौटना पड़े ॥१७–१८ ॥

जीवन मरण प्रश्न—

जीवने मरणे क्षेपश्चत्वारिंशत्प्रकीर्तितः ।
अत्र भागस्त्रिभिर्ग्राह्यः शेषाङ्केन फलं स्मृतम् ॥१९॥
एकेन जीवनं वाच्यं कष्टसाध्यं द्विशेषके ।
शून्ये तु मरणं प्रोक्तं ज्ञातव्यं सर्वदा बुधैः ॥२०॥

जीवन मरण के प्रश्न में—पिण्ड में ४० क्षेपक जोड़कर ३ भाग से १ शेष में जीवन, २ में कष्ट से जीवन, और शून्य ० शेष मे मरण फल कहना चाहिये ॥ १९–२० ॥

तीर्थ यात्रा प्रश्न—

यात्राप्रश्ने क्षेपकस्तु नवराममितः स्मृतः।
रामैर्भागं समाहृत्य यात्रा स्यादेकशेषके ॥२१॥
द्विशेषे मध्यमा ज्ञेया न यात्रा शून्यशेषके।

तीर्थ यात्रा सम्बन्धी प्रश्न में ३६ क्षेपक पिण्ड में जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में उत्तम यात्रा, २ में अल्प स्थान में यात्रा, और शून्य ० शेष में यात्रा नहीं होती है ॥ २१ ॥

वर्षा प्रश्न—

द्वात्रिंशद्वर्षणप्रश्ने क्षेपकः कथितो बुधैः ॥२२॥
वह्निभिर्विभजेद्धीमानेकशेषे प्रवर्षणम्।
द्वाभ्यां तु मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिः खशेषके ॥२३॥

वर्षा का प्रश्न हो तो पिण्ड में ३२ जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में पूर्ण वर्षा, २ में मध्यम और शून्य शेष में वर्षा नहीं होती है, ऐसा समझना ॥ २२=२३ ॥

गर्भविचार प्रश्न—

गर्भप्रश्ने क्षेपकस्तु षड्विंशत्कथितो बुधैः।
त्रिभिर्भागं समाहृत्य गर्भो भूशेषके स्मृतः ॥२४॥
सन्देहस्तु द्विशेषे स्याच्छून्ये नास्तीति निश्चयः।

गर्भ है या नहीं ? ऐसे प्रश्न में—पिण्ड में २६ जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में गर्भ है २ में सन्देह और शून्य शेष में गर्भ नहीं है, ऐसा कहना चाहिये ॥ २४ ॥

मूक (मानसिक) प्रश्न—

पिण्डाङ्कं त्रिभिर्विभज्यैकेन जीवः।
द्वाभ्यां धातुः। शून्येन मूलम् ॥२५॥

मानसिक प्रश्न में केवल पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में जीव, २ में धातु और शून्य में मूल सम्बन्धी प्रश्न समझना ॥ २५ ॥

जीव के भेद ज्ञान—

जीवे दृष्टे जीवाश्चतुर्विधाः। पिण्डस्य चतुर्भागावशेषात् एकेन द्विपदः। द्वाभ्यां चतुष्पदः। त्रिभिर्बहुपदः। चतुर्भिरपदः॥ तत्र द्विपदे त्रयो भेदाः। आलिंगिते पुरुषाः अभिधूमिते नारी। दग्धे नपुंसकः ॥ २६ ॥

उपरोक्त विधि से जीव प्रश्न हो तो उसके द्विपद आदि ४ भेद हैं। इसलिए पिण्ड में ४ के भाग देने से १ शेष में द्विपद, २ चतुष्पद, ३ में बहुपद और शून्य में अपद (सर्प आदि) समझना। द्विपद के पुरुष आदि ३ भेद हैं। यदि आलिङ्गित प्रश्न हो तो पुरुष, अभिधूमित हो तो स्त्री और दग्ध हो तो नपुंसक समझना ॥ २६ ॥

धातु भेद—

धातवो द्विधाः। धाम्या, अधाम्याश्च। तत्र द्वाभ्यां भागः, एकेन धाम्याः, द्वाभ्यामधाम्याः ॥२७॥

धातु के धाम्य, अधाम्य दो भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में धाम्य (सोना, चाँदी आदि) और शून्य में अधाम्य (मोती, हीरा, पाषाण आदि) कहना ॥ २७ ॥

धाम्य धातुओं के भेद—

धाम्या अष्टविधाः सुवर्ण-रजत-ताम्र-कांस्य-पित्तल-रंग-सीस-लोहाख्याः। अत्र अष्टभिर्भागः एकेन सुवर्णम्। द्वाभ्यां रजतम्। त्रिभिस्ताम्रम्। चतुर्भिः कांस्यम्। पञ्चभिः पित्तलम्। षड्भिः रंगः। सप्तभिः सीसकम्। अष्टभिर्लोहम्। तत्रापि भेदद्वयम्। घटितमघटितं च। तत्र द्वाभ्यां भागः। एकेन घटितम्। द्वाभ्यामघटितम् ॥ २८ ॥

सोना. चाँदी, ताँबा, काँसा, पित्तल, राँगा, सीसा, लोहा—ये धाम्य के ८ भेद हैं। पिण्ड में ८ के भाग से १ शेष में सोना, २ में चांदी, ३ में तांबा, ४ में कांसा, ५ में पित्तल, ६ में रांगा, ७ में सीसा और शून्य शेष में लोहा कहना चाहिये। उसमें घटित (गढ़ा हुआ) और अघटित (बिना गढ़ा हुआ) दो भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में घटित और शून्य में अघटित समझना चाहिये ॥ २८ ॥

मूलं चतुर्विधम्। वृक्ष–गुल्म–वल्ली–लताभेदात्। तत्र चतुर्भिर्विभज्यैकेन वृक्षः। द्वाभ्यां गुल्मः। त्रिभिर्वल्ली, (कूष्माण्डक-सिंहराटादयः)। चतुर्भिर्लता (तृणधान्य-दूर्वा-गोधूमाः) इति। तत्रापि द्विविधाः भक्ष्यमभक्ष्यं च। तत्र पिण्डाङ्के द्वाभ्यां भक्ते एकेन भक्ष्यम्। द्वाभ्यामभक्ष्यम्। तत्रापि द्विविधं सुगन्धि-दुर्गन्धिभेदात्। प्रश्नपिण्डाङ्के द्वाभ्यां भक्ते, एकेन सुगन्धिः, द्वाभ्यां दुर्गन्धिः ॥२९॥

मूलसम्बन्धी प्रश्न हो तो उसके ४ भेद हैं। वृक्ष, गुल्म, वल्ली और लता। पिण्ड में ४ के भाग से १ शेष में वृक्ष (आम, कटहर आदि), २ में गुल्म, ३ में वल्ली (कोंहड़ा आदि की लती) और शून्य शेष में लता (तृण, धान्य, गेहूं आदि) समझना। उनके भक्ष्य, अभक्ष्य से दो भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में भक्ष्य, शून्य में अभक्ष्य। फिर भी सुगन्धि और दुर्गन्धि ये २ भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सुगन्धि, शून्य में दुर्गन्धि समझना ॥ २९ ॥

मूल के भेद जानने का दूसरा प्रकार—

शिरस्पर्शे वृक्षः। उदरस्पर्शे गुल्मः। पृष्ठे वल्ली। बाहुस्पर्शे लता। पादे कन्दः ॥३०॥

मस्तक स्पर्श करता हुआ पूछे तो वृक्ष, पेट का स्पर्श करके पूछे तो गुल्म, पीठ के स्पर्श से वल्ली, बाँह के स्पर्श से लता और पैर के स्पर्श से कन्द समझना ॥३०॥

नष्टवस्तुज्ञान—

खे निरीक्षिते पृच्छति सति नष्टवस्तु खे कथनीयम्। अधोनिरीक्षितेऽधो वक्तव्यम्। कोणे प्रविश्य पृच्छति कोणे वक्तव्यम्। यस्मिन्दिशि प्रविश्य यत्रावलोकयेत् यदह्नि वा तदह्नि नष्टप्राप्तिर्वाच्या ॥३१॥

प्रश्नकर्त्ता आकाश (ऊपर) देखता हुआ पूछे तो नष्ट वस्तु पृथ्वी से ऊपर रक्खी हुई, नीचे देखता हुआ पूछे तो पृथ्वी में गाड़ी हुई है, ऐसा कहना। कोण में प्रवेश करके पूछे तो नष्ट वस्तु कोण में समझना। जिस दिशा से प्रवेश कर, जिस तरफ देखता हुआ पूछे उसी तरफ नष्ट वस्तु को कहना। और जिस दिन पूछे उसी वारे में नष्ट वस्तु की प्राप्ति कहना ॥ ३१ ॥

प्रकारान्तर—

प्रश्नध्रुवाङ्के द्वादशभिर्भक्ते शेषांका मेषादिराशयो ज्ञातव्याः, मेषे ग्रामे, वृषे क्षेत्रे, मिथुने चतुष्पथे, कर्के रसातले, सिंहेऽन्तरिक्षे, कन्यायां शून्यागारे, तुले पथि, वृश्चिके गृहे, धनुषि ग्रामे, मकरेऽन्तरिक्षे, कुम्भे तडागे, मीने नदीतीरे, गङ्गायां वा इति ॥ ३२ ॥

प्रश्न ध्रुवाङ्क (पिण्ड) में १२ का भाग देकर १ आदि शेष से मेषादि १२ राशि समझना। मेष से ग्राम में, वृष से खेत में, मिथुन से चौराहे पर कर्क से रसातल (खात) में, सिंह से पृथ्वी से ऊपर, कन्या से शून्य घर में, तुला से मार्ग में, वृश्चिक से घर में, धनु से ग्राम में, मकर से आकाश में, कुम्भ से तालाव में और मीन से नदी (गङ्गा आदि) में नष्ट वस्तु समझना चाहिये ॥ ३२ ॥

मानसिक चिन्ता प्रश्न—

प्रश्नाक्षरध्रुवाङ्के द्वादशभिर्भक्ते शेषांके राशयो ज्ञातव्याः। मेषे द्विपदम्, वृषे चतुष्पदम्, मिथुने युग्मम्, कर्के व्यापारः, सिंहे राजचिन्ता, कन्यायां विवाहचिन्ता, तुलायां धातुः, वृश्चिके रोगः, धनुषि लाभः, मकरे कलहः, कुम्भे गर्भः, मीने स्थान-चिन्ता, इति चिन्ताप्रश्नः ॥ ३३ ॥

पिण्ड में १२ के भाग से १ आदि शेष में मेषादि राशि समझना। मेष से द्विपद, वृष से चतुष्पद, मिथुन से युग्म (स्त्री और पुरुष), कर्क से व्यापार, सिंह से राजसम्बन्धी, कन्या से विवाह सम्बन्धी, तुला से धातु, वृश्चिक से रोग, धनु से लाभ, मकर से झगड़ा, कुम्भ से गर्भ, और मीन से स्थान सम्बन्धी चिन्ता कहना चाहिये ॥ ३३ ॥

कार्यावधि-प्रश्न—

आलिङ्गिते दिनं प्रोक्तं मासः स्यादभिधूमिते।
दग्धे च वत्सरं प्रोक्तं मूलदेवेन भाषितम् ॥३४॥

आलिङ्गित प्रश्न हो तो दिन (याने १ महीने से अल्प कुछ दिनों में ही काम होगा), अभिधूमित हो तो कुछ मासों में (याने १ वर्ष के भीतर ही) और दग्ध प्रश्न हो तो कुछ वर्षों में कार्य सिद्धि होगी, ऐसा कहना ॥ ३४ ॥

प्रकारान्तर—

तिथिवारर्क्षयोगस्तु त्रिघ्नः षड्भिर्युतस्तथा।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥३५॥
एकेन पक्षो द्वितयेन मासा ऋतुस्त्रिभिः स्यादयनं चतुर्भिः।
क्रमाद्दिनं रात्रिरथाऽपि यामघटीपलाद्यानि निवेदितानि ॥३६॥

तिथि, वार, नक्षत्र और योग संख्या जोड़ कर उसमें ६ मिला कर ९ का भाग देने से १ शेष से पक्ष, २ से मास, ३ से ऋतु, ४ से अयन, ५ से

दिन, ६ से रात्रि, ७ से प्रहर, ८ से घटी और शून्य से पलमात्र कार्य सिद्धि का समय समझना ।। ३५–३६ ।।

तेजोमन्दी प्रश्न—

प्रश्नपिण्डाङ्के त्रिभिर्भक्ते । एकेन समर्घम्,
द्वाभ्यां समता, शून्येन महर्घम् ॥३७॥

पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता (मन्दी), २ में समान, और शून्य में महँगी (तेजी) समझना ।। ३७ ।।

जयपराजय—

आलिङ्गितेन जयः, अभिधूमितेन सन्धिः, दग्धेन भङ्गः ।
पिण्डाङ्के त्रिभिर्भक्ते,एकेन जयः,द्वाभ्यां सन्धिः,शून्येन भङ्गः ।
दक्षिणे पृच्छति जयः, वामे पराजयः, सम्मुखे सन्धिः,
पृष्ठे मरणम्, इति भणितं मूलदेवेन ॥३८॥

जय पराजय सम्बन्धी प्रश्न में आलिङ्गित प्रश्न हो तो जय, अभिधूमित हो तो सन्धि और दग्ध प्रश्न हो तो पराजय कहना । अथवा पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में जय, २ में सन्धि, शून्य में पराजय । अथवा दहिने भाग में होकर पूछे तो जय, बायें भाग से पराजय, सम्मुख होकर पूछे तो सन्धि और पीछे से पूछे तो मरण कहना चाहिये ।। ३८ ।।

सत्यासत्य—

पिण्डांके द्वाभ्यां भक्ते एकेन सत्यं, द्वाभ्यामसत्यम् ॥३९॥

यह बात सत्य है या असत्य ? ऐसे प्रश्न में पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य और शून्य में असत्य कहना ।। ३९ ।।

पुरुष-स्त्री-ज्ञान प्रश्न—

प्रश्नवर्णाङ्क - मात्राङ्क - स्तिथि-वारर्क्ष - संयुतः ।
सप्तभक्ताऽवशेषेण समे स्त्री विषमे पुमान् ॥४०॥

प्रश्न के वर्ण और स्वर के ध्रुवाङ्क में तिथि, नक्षत्र, और वार की संख्या जोड़ कर ७ के भाग से सम (२, ४, ६) शेष में स्त्री और विषम (१, ३, ५, ०) में पुरुष समझना ॥ ४० ॥

गर्भज्ञान प्रश्न—

वारस्त्रिगुणितः कार्यस्तिथिभिश्चैव संयुतः ।
द्वाभ्यां भक्ते च यच्छेषं विषमेऽस्ति समे न हि॥४१॥

रव्यादि वार संख्या को ३ से गुना कर शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से तिथि संख्या मिलावे उसमें २ के भाग से १ शेष में गर्भ है, २ में नहीं है, ऐसा कहना ॥ ४१ ॥

पुत्र कन्या जन्म प्रश्न—

तिथि-वारर्क्ष-योगानां योगो नामाऽक्षरैर्युतः ।
सप्तभक्ताऽवशेषेण समे कन्याऽसमे सुतः ॥४२॥

तिथि, वार, नक्षत्र और योग की संख्याओं के योग में प्रश्नकर्ता के नाम की अक्षर संख्या जोड़ कर ७ के भाग से सम (२, ४, ६) शेष में कन्या और विषम शेष में पुत्र का जन्म कहना ॥ ४२ ॥

अथवा—

प्रश्नपिण्डांके त्रिभिर्भक्ते एकेन पुत्रः, द्वाभ्यां कन्या, शून्ये नास्ति गर्भः । वा ओष्ठ-कण्ठ-ग्रीवा-ललाट-कर्ण-शीर्ष-नखान् स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा पुत्रजन्म, नाभि-हस्त-पाद-हृदयानि स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा कन्याजन्म इति ॥४३॥

प्रश्न पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र, २ में कन्यां और शून्य शेष में गर्भ का अभाव कहना । अथवा ओठ, कण्ठ,गला, ललाट, कान, मस्तक और नख का स्पर्श करके पूछे तो पुत्र का जन्म, यदि नाभि, हाथ, पैर और हृदय का स्पर्श करके पूछे तो कन्या का जन्म कहना ॥ ४३ ॥

स्वकीय परकीय गर्भज्ञान—

योगः पञ्चगुणः कार्यो वारेण विनियोजयेत् ।
रामैर्भक्ते तु यच्छेषमेकस्तु स्वतनूद्भवः ॥४४॥
द्वाभ्यामन्याद्विजानीयात् त्रिशेषे च स्ववीर्यजः ॥४५॥

विष्कम्भादि योग संख्या में वार की संख्या जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में स्वकीय और २ में परकीय और शून्य शेष में स्वकीय वीर्य से गर्भ समझना चाहिये ॥ ४४–४५ ॥

विवाह प्रश्न—

प्रश्नपिण्डाङ्के अष्टभिर्भक्ते, एकेनाऽनायासेन विवाहः, द्वाभ्यां कष्टेन विवाहः, त्रिभिर्नास्ति, चतुर्भिः कन्यामरणम्, पञ्चभिः पितृव्यादिमरणं वा देशान्तरे गमनं, षड्भिः नृपाद्भीतिः, सप्तभिर्द्वयोर्मरणं वा श्वशुरमरणम्, अष्टभिः सन्ततिमरणम्, इति विवाहचिन्ता ॥ ४६ ॥

पिण्ड में ८ से भाग देकर १ शेष में बिना यत्न से, २ में अधिक यत्न से विवाह कहना। ३ शेष में विवाह नहीं हो, ४ शेष में कन्या का मरण, ५ में चाचा का मरण, ६ में राजभय, ७ में वर-कन्या दोनों का मरण, वा श्वशुर का मरण, ८ याने ० शेष हो तो विवाह से सन्तान का मरण कहना ॥ ४६ ॥

जीवन मरण प्रश्न—

वर्णपिण्डं द्विगुणितं मात्रापिण्डं चतुर्गुणितं तत्र समुदाये त्रिभिर्भक्ते—एकेन जीवनं, द्वाभ्यां पीडा, शून्येन मरणम् । आलिंगिते दिनम्, अभिधूमिते मासः, दग्धे वत्सरः ॥ ४७ ॥

प्रश्नाक्षरों से वर्णपिण्ड बना कर उसको दूना करके उसमें चतुर्गुणित मात्रा पिण्ड जोड़ कर ३ के भाग से १ शेष में जीवन, २ में पीड़ा

और शून्य में मरना कहना चाहिये। मरण का समय—आलिङ्गित प्रश्न हो तो कुछ दिनों में, अभिधूमित हो तो कुछ मासों में और दग्ध हो तो वर्ष के बाद मरण कहना ॥ ४७ ॥

हाथी आदि सवारी प्राप्ति सम्बन्धी प्रश्न—

स्ववर्णास्त्रिगुणाः कार्या वस्तुवर्णैक्यरूपयुक् ।
द्विहृतं शेषतो ब्रूयाच्छून्ये लाभोऽन्यथा न हि ॥४८॥

प्रश्नकर्ता के नामाक्षरों की संख्या को ३ से गुना कर उसमें वस्तु की नामाक्षर संख्या जोड़ कर १ और मिलावे फिर उसमें २ के भाग देने से शून्य शेष बचे तो वस्तु का लाभ होगा, १ शेष बचे तो नहीं लाभ हो, ऐसा कहना। ४८ ॥

अमुक व्यक्ति से लाभ होगा, या नहीं ? इस प्रकार का प्रश्न—

प्रभोर्नाम गुणैर्हन्यात् स्ववर्णैर्भिश्रितं हरेत् ।
रामैः प्राप्तिर्विजानीयादेकशेषे द्विके न हि ॥
त्रिशेषे चिरकालेन द्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति ॥४९॥

जिससे द्रव्य लाभ का प्रश्न करे उसके नामाक्षरों की संख्या को ३ से गुना कर प्रश्नकर्ता के नामाक्षर मिलावे, उसमें ३ के भाग से १ शेष में शीघ्र लाभ, २ में नहीं और शून्य शेष में विलम्ब से लाभ समझना ।।४६।।

द्रव्यलाभ प्रमाण प्रश्न—

तन्नामवर्णसंख्याया हता नन्दैर्युताः शरैः ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के दशकाः स्मृताः ॥५०॥
जानीयात् तावतीं प्राप्तिं कुलमानानुसारतः ॥५०॥

प्रश्नकर्ता के नामाक्षरों की संख्या को ६ से गुना कर ५ जोड़े, उसमें ७ के भाग से शेष तुल्य दशक समझना। अर्थात् १ शेष में १०, २ में २० इत्यादि। उतनी प्राप्ति की संख्या कुल और व्यवसाय के अनुसार सैकड़ा, हजार, लाख आदि समझना चाहिये ।।५०-५१।।

किसी पुस्तक में "लब्धं पञ्चगुणं" इत्यादि असङ्गत पाठ प्रक्षिप्त है ।।

दूताऽऽगमन प्रश्न—

तिथिस्त्रिगुणिता कार्या पञ्चयुक्तारमिश्रिता ।।५२।।
सप्तभिर्गुणिता द्वाभ्यां भक्तशेषे फलं वदेत् ।
एकेन चलितो दूतः शून्यशेषे तु निश्चलः ।।५३।।

त्रिगुणित तिथि संख्या में ५ जोड़ कर वार की संख्या मिलावे। उसे ७ से गुना कर २ के भाग से १ शेष में दूत आ रहा है, और शून्य में नहीं, ऐसा कहना ।।५२–५३।।

परदेशी के आगमन सम्बन्धी प्रश्न—

तिथि-घस्त्रौ तथा लग्नं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नक्षत्रकरणं चैव सप्तभिर्भागमाहरेत् ।।५४।।
एकेन तत्र वासश्च द्वाभ्यां च गमनं भवेत् ।
तृतीये चार्द्धमार्गे तु चतुर्थे ग्रामसन्निधौ ।।५५।।
पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिसमाकुलः ।
सप्तमे शून्यकार्यः स्यात् प्रश्नश्च कथितो बुधैः ।।५६।।

तिथि, वार, नक्षत्र, करण और लग्न संख्या में परदेशी के नामाक्षर संख्या मिलावे, उसमें ७ के भाग से १ शेष में परदेशी जहाँ रहता है उसी स्थान में है, २ में चला, ३ में आधे मार्ग में, ४ में ग्राम के समीप में, ५ में चल कर फिर लौट गया, ६ में रोगयुक्त और शून्य शेष में कार्य नहीं हुआ है, ऐसा कहना ।।५४–५६।।

किसी से भेंट का प्रश्न—

घटिकास्त्रिगुणाः सैकाः सप्तभिः संयुताः पुनः ।
वेदैश्च भाजितास्तत्र शेषांके फलमादिशेत् ।।५७।।
एकशेषे च मिलनं द्वाभ्यां च गमनान्तरे ।

त्रिशेषे दर्शनाभावः समुद्रैः क्लेशकृद्भवेत् ॥५८॥

इष्ट घड़ी में १ जोड़कर ३ से गुना करें फिर उसमें ७ जोड़कर ४ के भाग देने से १ शेष में भेंट होगी, २ में वहाँ जाने पर भेंट होगी, ३ में भेंट नहीं होगी और ४ में बहुत यत्न से भेंट होगी, ऐसा कहना ॥५७-५८॥

अमुक व्यक्ति क्या कर रहा है ? ऐसा प्रश्न—

तिथिवारर्क्षयोगानां योगो द्विघ्नस्त्रिभिर्युतः ।
ततो द्वादशभिर्भाज्यः शेषे च फलमादिशेत् ॥५९॥

तिथि, वार, नक्षत्र और योग की संख्याओं के योग को २ से गुनाकर ३ मिलावे, उसमें १२ के भाग से १ आदि शेष से निम्नलिखित फल कहै ॥५९॥

हास्ययुक्तः स्थितो भूम्यां स्वस्थासनयुतो जनैः ।
ताम्बूलाद्युपचारैश्च ह्येकशेषे फलं वदेत् ॥६०॥

१ शेष बचे तो अपने साथियों के साथ बैठकर हास्य युक्त ताम्बूल (पान) आदि का सेवन कर रहा है, ऐसा कहना ॥६०॥

व्यायामेन युतश्चापि स्वल्पमानवमिश्रितः ।
उद्वेगवार्ताश्रवणं द्विशेषे दर्शनं फलम् ॥६१॥

२ शेष में थोड़े आदमियों के साथ व्यायाम कर रहा है, परन्तु कुछ उद्वेग-कारक वार्ता भी सुन रहा है ॥६१॥

कुपितः स्वासनस्थोऽपि चिन्तयन् मनसाऽस्ति सः ।
पश्चात् कार्यप्रसङ्गेन गमनं च त्रिशेषके ॥६२॥

३ शेष बचे तो अपने स्थान पर बैठा कुछ सोच रहा है, फिर कार्यवश कहीं चलने वाला है ॥६२॥

वेदशेषे तु सुप्तः स्याज्जलेन मुखशुद्धिकृत् ।
पञ्चशेषे तु सुप्तः सन्नुत्थितो भोजनं भवेत् ॥६३॥

४ शेष में जल से मुँह धो रहा है। ५ शेष में सोकर उठा है, कुछ खा रहा है, ऐसा कहना ॥६३॥

रसशेषे मार्गमध्ये दर्शनं निश्चितं भवेत् ।
स्त्रीभोगव्यवहारं च सप्तशेषे विनिर्दिशेत् ॥६४॥

६ शेष बचे तो मार्ग में है, इस समय मुलाकात हो सकती है। और ७ शेष बचे तो स्त्री के साथ क्रीडादि कर रहा है, ऐसा कहना ॥६४॥

अष्टशेषे यदा तस्य चित्तोद्वेगस्तदा भवेत् ।
नन्दशेषे यदा दृष्टे धर्मकार्येषु तत्परः ॥६५॥

८ शेष बचे तो मन में उद्वेग हो रहा है, ९ शेष में धर्म कार्य में तत्पर है, ऐसा कहना ॥६५॥

दशमे राजसम्मानं रुद्रे भोजनमेव च ।
द्वादशे दुःखितः किन्तु स्त्रीभोगं कर्तुमिच्छति ॥६६॥

१० शेष से राजदरबार में सम्मान पा रहा है, ११ शेष से भोजन कर रहा है, और शून्य शेष से दुःखी है, परन्तु स्त्री से मिलना चाहता है, ऐसा कहना ॥६६॥

नष्टजातक विधान—

वर्णध्रुवा द्विगुणिता मात्राणां ध्रुवसंयताः ।
एवं कालविचारोऽयं मूलदेवेन भाषितम् ॥६७॥

तत्र ध्रुवाङ्कसमुदाये १०८ भक्ते शेषे वर्षः । तत्रैवाक्षरपिण्डे द्वाभ्यां भक्ते एकेन शुक्लपक्षः, द्विशेषे कृष्णपक्षः ॥ तत्रैवाक्षरपिण्डे सप्तविंशतिभक्ते एक शेषेऽश्विनी, द्विशेषे भरणीत्येवं नक्षत्राणि ज्ञातव्यानि ॥

अज्ञात जन्म समय वाला नष्ट जन्मपत्र बनाने का प्रश्न करे तो पूर्ववत् वर्ण ध्रुवाङ्क को २ से गुना कर उस में मात्राध्रुवाङ्कों को जोड़ कर

पिण्ड वनावै। उस में १०८ के भाग देकर शेष गत वर्ष समझे। उसी पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में शुक्ल, २ में कृष्ण पक्ष समझे। उसी पिण्डाङ्क में २७ के भाग से १ आदि शेष से अश्विनी आदि जन्म के नक्षत्र समझे॥ ६७॥

तत्रैव पिण्डे त्रिंशद्भक्ते शेषमंशाः॥ तत्रैव पिण्डे द्वादशभक्ते शेषेण एकेन फाल्गुनः, द्वाभ्यां चैत्रः, त्रिभिर्वैशाखः, चतुर्भिर्ज्येष्ठः, पञ्चभिराषाढः, एवं श्रावणादयो ज्ञेयाः॥ एवं तत्रैव पिण्डे द्वादशभक्ते एकेन मेषः, द्वाभ्यां वृषः, त्रिभिर्मिथुनमित्यादिक्रमेण लग्नानि ज्ञातव्यानि॥ ६८॥

उसी पिण्ड में ३० के भाग देकर १ आदि शेष से अंश समझे। उसी पिण्ड में १२ के भाग देकर १ आदि शेष में क्रमसे फाल्गुन, चैत्र आदि मास समझना। फिर उसी पिण्ड में १२ के भाग से १ आदि शेष से मेष आदि लग्न जन्म समय का समझकर नष्ट जन्मपत्र बनाना चाहिये॥ ६८॥

4

भूतादित्रिविधान् प्रश्नान् कथयिष्यामि संग्रहे।
आयप्रश्नाख्यमध्यायं चमत्कृतिकरं परम्॥१॥

अब भूत, भविष्य और वर्तमान काल समझने में चमत्कारयुक्त ध्वजादि आयवश फलाध्याय को कहता हूँ॥ १॥

उच्चारितफलनाम्नो वर्णक्रमतो ध्वजादयोऽष्टाऽऽयाः।
प्रश्नाक्षरतोऽप्यथवा विकल्पनीया बुधैर्नित्यम्॥२॥

प्रश्नकर्ता के मुख से कथित फलादि नाम के आदि अक्षर से अवर्गादि क्रम से ध्वज आदि ८ आय समझना॥ २॥

आयों के नाम—

ध्वजो धूम्रश्च सिंहश्च श्वानो वृष-खरौ गजः ।
ध्वांक्षश्चाऽऽयाष्टकं ज्ञेयं शुभाऽशुभफलं क्रमात् ॥३॥

ध्वज, धूम्र, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज और ध्वांक्ष ये क्रम से ८ आयों के नाम हैं ॥ ३ ॥

इन (ध्वजादि आयों) के स्वामी—

ध्वजे सूर्यश्च विज्ञेयः धूम्रे भौमस्तथैव च ।
सिंहे शुक्रश्च विज्ञेयः श्वाने सौम्यस्तथैव च ॥४॥
वृषे गुरुश्च विज्ञेयः खरे सूर्यसुतस्तथा ।
गजे ध्वांक्षे चन्द्र-राहू एते च पतयः स्मृताः ॥५॥

ध्वज के सूर्य, धूम्र के मङ्गल, सिंह के शुक्र, श्वान के बुध, वृष के गुरु, खर के शनि, गज के चन्द्रमा और ध्वांक्ष के राहु स्वामी हैं ॥४-५॥

स्पष्टार्थ चक्र—

ध्वज	धूम	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	आय नाम
१	२	३	४	५	६	७	८	
अ	क	च	ट	त	प	य	श	अकारादिवर्गा:
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	०	०	
सूर्य	मंग	शुक्र	बुध	बृह.	शनि.	चन्द्र	राहु	स्वामी

इस प्रकार प्रश्नाद्यक्षर से आय समझ कर शुभाऽशुभ फल—

ध्वज-कुञ्जर-सिंहेषु वृषे सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कार्यसिद्धिर्भवेन्नहि ॥ ६ ॥

प्रश्न के आदि अक्षर से ध्वज, गज, सिंह, वृष हो तो कार्य की सिद्धि और ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र से असिद्धि समझना ॥ ६ ॥

कोई चीज है या नहीं ? इस प्रकार के प्रश्न में—

ध्वज-कुञ्जर-सिंहेषु वृषे चाऽस्ति विनिश्चितम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाऽस्तीति समुदाहृतम् ॥ ७ ॥

ध्वज, गज, सिंह, वृष आय होते हैं। ध्वांक्ष, श्वान, धूम्र, खर आय हो तो नहीं हैं, ऐसा कहना चाहिये ॥ ७ ॥

लाभालाभ प्रश्न—

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शीघ्रलाभो भवेद्ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाशश्च कलहप्रदः ॥ ८ ॥

ध्वज, गज, वृष, सिंह हो तो लाभ, यदि ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र हो तो हानि और कलह कहना चाहिये ॥ ८ ॥

ध्वजे गजे वृषे सिंहे नष्टलाभो भवेद्ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने हानिर्भवति निश्चितम् ॥ ९ ॥

ध्वज, गज, वृष, सिंह हो तो नष्ट-वस्तु का लाभ, ध्वांक्ष, धूम्र, खर, श्वान हो तो लाभ नहीं हो, ऐसा कहना ॥ ९ ॥

चौरजाति ज्ञान—

ध्वजे च ब्राह्मणश्चौरो धूम्रे क्षत्रिय एव च ।
सिंहे वैश्य श्च विज्ञेयः खरे च सेवकस्तथा ॥१०॥
गजे दासी च विज्ञेया ध्वांक्षे च नायकस्तथा ।
वृषे श्वाने तथा ज्ञेयश्चौरश्चाऽन्त्यजसम्भवः ॥११॥

ध्वज आय से ब्राह्मण, धूम्र से क्षत्रिय, सिंह से वैश्य, खर से शूद्र (सेवक), गज से दासी, ध्वांक्ष से मालिक ही को चोर समझना। और वृष, श्वान आय हो तो नीच जाति का चोर समझना ॥ १०–११ ॥

नष्टवस्तु-दिक्ज्ञान—

ध्वजे पूर्वगतं चैव धूम्रे आग्नेयदिग्गतम् ।
सिंहे च दक्षिणे वस्तु श्वाने नैर्ऋत एव च ॥१२॥
पश्चिमे वृषभे ज्ञेयं वायव्यां च खरे तथा ।
उत्तरे कुञ्जरे द्रव्यमीशान्यां ध्वांक्षके तथा ॥१३॥

ध्वज आय में पूर्व, धूम्र में अग्निकोण, सिंह में दक्षिण, श्वान में नैऋत्यकोण, वृष में पश्चिम, खर में वायव्य कोण, गज में उत्तर और ध्वांक्ष में ईशान कोण में चोरी की चीज गई है, ऐसा कहना ॥ १२–१३ ॥

नष्ट वस्तु का स्थान-ज्ञान—

ऊपरे च ध्वजे नष्टं धूम्रे चाऽग्निगृहे तथा ।
गतं सिंहे तथाऽरण्ये श्वाने स्वान्यतरे गृहे ॥१४॥

ध्वज आय हो तो ऊसर में, धूम्र हो तो अग्निगृह में, सिंह हो तो वन में और श्वान तथा अन्य आय हो तो घर में नष्ट वस्तु है, ऐसा कहना ॥ १४ ॥

प्रवासी कुशल प्रश्न—

ध्वजे सिंहे वृषे चैव कुञ्जरे कुशलं भवेत् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति कुशलं वदेत् ॥१५॥

ध्वज, सिंह, वृष, गज आय से प्रवासी कुशल है, ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र से कुशल नहीं है, ऐसा समझना ॥ १५ ॥

प्रवासी चर स्थिर प्रश्न—

ध्वजे गजे स्थिरश्चैव श्वाने सिंहे च चञ्चलः ।
वृषे धूम्रे प्रयाणस्थः खरे ध्वांक्षे च कष्टकम् ॥१६॥

ध्वज, गज आय हों तो परदेशी स्थिर है, श्वान, सिंह हो तो कहीं अन्यत्र चला गया है, वृष, धूम्र हो तो चलने की तैयारी कर रहा है, खर, ध्वांक्ष हो तो परदेशी कष्ट में है, ऐसा कहना ॥ १६ ॥

पथिक या शत्रु की सेना कितने दूर पर है ? इस प्रकार के प्रश्न—

ध्वजे धूम्रे समीपस्थो दूरस्थो गज-सिंहयोः ।
वृषे खरेऽर्धमार्गस्थो ध्वांक्षे श्वाने पुनर्गतः ॥१७॥

ध्वज, धूम्र आय हो तो नजदीक में, गज, सिंह हो तो अभी दूर में है, वृष, खर हो तो आधा मार्ग में है; ध्वांक्ष, श्वान हो तो मार्ग से लौट गया, ऐसा समझना ॥ १७ ॥

कार्यावधि प्रश्न—

ध्वजे पक्षमिति प्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनं तथा ।
एकविंशश्च सिंहे च श्वाने मासं तथैव च ॥१८॥
वृषे तु सार्द्धमासं च खरे मासद्वयं तथा ।
गजे मासत्रयं प्रोक्तं ध्वांक्षे ह्ययनसम्मितम् ॥१९॥

ध्वज में १ पक्ष, धूम्र में ७ दिन, सिंह में २१ दिन, श्वान में १ मास, वृष में १॥ मास, खर में २ मास, गज में ३ मास और ध्वांक्ष में ६ मास समय कहना ॥ १८–१९ ॥

धातु-जीव-मूल-चिन्ता प्रश्न—

ध्वजे धूम्रे धातु-चिन्ता गजे सिंहे च मूलकम् ।
श्वाने खरे वृषे ध्वांक्षे जीवचिन्ता वदेद्बुधः ॥२०॥

ध्वज, धूम्र हो तो धातु, गज, सिंह हो तो मूल, श्वान, खर, वृष और ध्वांक्ष आय हो तो जीव-सम्बन्धी चिन्ता समझना ॥२०॥

धातु के भेद—

ध्वजे सुवर्णकं ज्ञेयं धूम्रे रौप्यं तथैव च ।
सिंहे ताम्रं च विज्ञेयं श्वाने लोहं तथैव च ॥२१॥

वृषे कांस्यं खरे नागं कथितं सीसकं गजे ।
ध्वांक्षे पित्तलकं ज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः ॥२२॥

ध्वज में सुवर्ण, धूम्र में चाँदी, सिंह में ताम्र, श्वान में लोह, वृष में काँसा, खर में राँगा, गज में सीसा, ध्वांक्ष में पित्तल समझना ॥ २१–२२ ॥

भूषणों के भेद—

ध्वजे आभूषणं मूर्ध्नि धूम्रे तु मुखभूषणम् ।
कण्ठस्याऽऽभूषणं सिंहे श्वाने च कर्णयोरिदम् ॥२३॥
वृषे हस्तभवं ज्ञेयं अंगुलीभूषणं खरे ।
गजे तु कटिसूत्रं स्यात् ध्वांक्षे पादादिकं तथा ॥२४॥

ध्वज में मस्तक के भूषण, धूम्र में मुख के, सिंह में कण्ठ के, श्वान में कान के, वृष में हाथ के, खर में अंगुली के, गज में कमर के और ध्वांक्ष में पैर के भूषण कहना चाहिये ॥ २३–२४ ॥

मुष्टिगत प्रश्न में वस्तु के वर्णज्ञान—

कुसुम्भश्च ध्वजे ज्ञेयं धूम्रे श्वेतं तथैव च ।
लोहिताङ्गं भवेत् सिंहे श्वाने पाण्डुरनीलकम् ॥२५॥
पीतवर्णो वृषे ज्ञेयः खरे च मिश्रवर्णकः ।
गजे च श्यामवर्णश्च ध्वांक्षे च मिश्रवर्णकम् ॥२६॥

ध्वज में कसूमी सदृश, धूम्र में श्वेत, सिंह में रक्त, श्वान में पाण्डु और कृष्ण-वर्ण, वृष में पीत वर्ण, खर में मिश्र वर्ण, गज में श्याम वर्ण तथा ध्वांक्ष में भी मिश्र वर्ण समझना ॥ २५–२६ ॥

वस्तु का ज्ञान—

ध्वजे पत्रं च विज्ञेयं धूम्रे पुष्पं प्रकीर्तितम् ।
सिंहे फलं च विज्ञेयं श्वाने काष्ठादिकं तथा ॥२७॥
वृषे धान्यं तथा प्रोक्तं खरे तृणं निगद्यते ।

गजे बीजं च विज्ञेयं तुषं ध्वांक्षे तथा स्मृतम् ॥२८॥

ध्वज में पत्र, धूम्र में पुष्प, सिंह में फल, श्वान में लकड़ी, वृष में अन्न, खर में तृण, गज में बीज, ध्वांक्ष में भूसा समझना ॥२७-२८॥

कन्या पुत्र जन्मप्रश्न—

ध्वजे वृषे गजे सिंहे गुर्विण्याः पुत्रमादिशेत् ।
धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे कन्याजन्म विनिर्दिशेत् ॥२९॥

ध्वज, वृष, गज और सिंह आय हो तो पुत्र, तथा धूम्र, श्वान, खर और ध्वांक्ष में कन्या का जन्म कहना ॥२६॥

आयुर्दाय वर्षप्रमाण प्रश्न—

ध्वजे सिंहे शतं प्रोक्तं गजे व्योमगजस्तथा ।
वृषे च षष्टिवर्षाणि खरे व्योमाऽब्धिसंज्ञकम् ॥३०॥
श्वाने च विंशतिः प्रोक्ता ध्वांक्षे च षोडशस्तथा ।
धूम्रे वर्षमिति ज्ञेयमित्यायुश्च विचिन्तयेत् ॥३१॥

ध्वज,सिह आय में १०० वर्ष, गज में ८० वर्ष, वृष में ६० वर्ष, खरमें ,४० श्वान में २०, ध्वांक्षमें १६ और धूम्र में १ वर्ष आयु कहना चाहिये॥२०-३१॥

जयपराजय प्रश्न—

ध्वजे गजे वृषे सिंहे स्थायिनो जयमाप्नुयात् ।
धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे यायिनो जयमादिशेत् ॥३२॥

ध्वज, गज, वृष, सिह आय हो तो स्थायी (मुद्दालह) की जय और धूम्र, श्वान, खर, ध्वांक्ष हो तो यायी (मुद्दई = पहिले चढ़ाई मुकदमा आदि करने वाला) की जय होगी, ऐसा कहना ॥३२॥

जनश्रुति सत्य है, या मिथ्या ? इस प्रश्न में—

उपश्रुतिः स्याद्भवतीति सत्या ध्वजे गजे सिंह-वृषे तु प्रश्ने ।

श्वाने खरे ध्वांक्षकधूम्र एवमुपश्रुतिः स्याद्भवतीति मिथ्या॥३३॥

प्रश्न के आदि अक्षर से ध्वज, गज, सिंह या वृष आय हो तो खबर सत्य है, श्वान, ध्वांक्ष, धूम्र हो तो मिथ्या समझना ॥३३॥

वर्षा प्रश्न—

धूम्रे गजे वृषे श्वाने वृष्टिर्भवति चोत्तमा ।
ध्वजे सिंहे विलम्बश्च खरे ध्वांक्षे न वर्षणम् ॥३४॥

धूम्र, गज, वृष, श्वान आय हो तो उत्तम वृष्टि, ध्वज, सिंह में विलम्ब से वृष्टि, खर, ध्वांक्ष में वर्षा नहीं होगी, ऐसा कहना ॥३४॥

कितने दिन में वर्षा होगी ? इस प्रश्न में—

धूम्रे सप्त-दिनं प्रोक्तं वृषे दिग्भिस्तथैव च ।
श्वाने च विंशतिर्ज्ञेया गजे च सप्तविंशतिः ॥३५॥
सिंहे ध्वजे च व्योमाऽब्धिः खरे ध्वांक्षे ऋतुस्तथा ।
वर्षाकाले क्रमो ह्येष कथितो गणकोत्तमैः ॥३६॥

धूम्र में ७ दिन, वृष में १० दिन, श्वान में २० दिन, गज में २७ दिन, सिंह और ध्वज में ४० दिन, खर और ध्वांक्ष में ६० दिन में वर्षा होगी, इस प्रकार वर्षा समय (आषाढ़ से आश्विन तक) के प्रश्न में कहना चाहिये ॥३५-३६॥

स्त्रीलाभ प्रश्न—

ध्वजे च सिंहे च वृषे च लाभः स्त्रियं सुरूपां लभते सुशीलाम् ।
श्वाने गजे ध्वांक्ष-खरे च धूम्रे कार्यस्य हानिः कलहस्तथैव॥३७॥

ध्वज, सिंह, वृष आय हो तो सुशीला और सुन्दरी स्त्री का लाभ तथा श्वान, गज, ध्वांक्ष, खर आय हो तो हानि और कलह हो ॥३७॥

व्यवहार प्रश्न—

ध्वजे गजे वृषे सिंहे व्यवहारः शुभावहः ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कलहाऽऽद्यशुभप्रदः ॥३८॥

ध्वज, गज, वृष, सिंह आय में उत्तम और ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र आय में कलह-प्रद व्यवहार कहना चाहिये ॥ ३८ ॥

राज्यप्राप्ति प्रश्न—

गजे ध्वजे चिरात् प्राप्तिर्वृषे सिंहे च शीघ्रता ।
श्वाने खरे न च प्राप्तिः शत्रुर्गृह्णाति शेषयोः ॥३९॥

ध्वज, गज आय हो तो विलम्ब से, वृष, सिंह हो तो शीघ्र राज्य प्राप्ति, तथा श्वान, खर आय हो तो राज्यप्राप्ति नहीं होगी। और शेष (धूम्र, ध्वांक्ष) आय हो तो राज्यप्राप्ति होगी, परञ्च फिर भी शत्रु छीन लेगा, ऐसा कहना ॥ ३९ ॥

नौका (जहाज) का कुशल प्रश्न—

ध्वज-कुञ्जर-सिंहेषु वृषे च कुशलान्विता ।
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने ध्रुवं नौका निमज्जति ॥४०॥

ध्वज, गज, सिंह, वृष आय हो तो नौका कुशल सहित आती है, यदि ध्वांक्ष, धूम्र, श्वान, खर आय हो तो नौका डूब गई या डूब जायगी ॥ ४० ॥

किसी अधिकार की प्राप्ति के प्रश्न—

ध्वजे गजे चिरात् प्राप्तिर्वृषे सिंहे च सत्वरम् ।
कलहश्च खरे श्वाने नास्ति च ध्वांक्ष-धूम्रयोः ॥४१॥

ध्वज, गज, आय हो तो विलम्ब से वृष, सिंह हो तो शीघ्र प्राप्ति होगी, तथा खर, श्वान में कलह से प्राप्ति और ध्वांक्ष, धूम्र में प्राप्ति नहीं होगी, ऐसा कहना ॥४१॥

कार्य की सिद्धि-असिद्धि प्रश्न में—

ध्वजे गजे चिरात् कार्यं त्वरितं वृष-सिंहयोः ।
दीर्घकाले खरे श्वाने ध्वांक्षे धूम्रे न सिद्ध्यति ॥४२॥

ध्वज, गज आय में विलम्ब से, वृष, सिंह में शीघ्र, खर, श्वान में अत्यन्त विलम्ब से कार्य सिद्धि तथा ध्वांक्ष, धूम्र में कार्य की सिद्धि नहीं कहना ॥ ४२ ॥

जेल से छूटने के प्रश्न में—

धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे बन्दी शीघ्रं प्रमुच्यते ।
ध्वजे गजे वृषे सिंहे बन्दिकष्टं समादिशेत् ॥४३॥

धूम्र, श्वान, खर, ध्वांक्ष आय हो तो शीघ्र छूटेगा, ध्वज, गज, वृष, सिंह आय हो तो बन्दी को अभी कष्ट है, नहीं छूटेगा ॥ ४३ ॥

कार्य सिद्धि के लिये अनुष्ठान—

ध्वजे भैरवपूजा स्याद्धूम्रे च जगदम्बिकाम् ।
सिंहे च पूजयेत् सूर्यं श्वाने वायुसुतं तथा ॥४४॥
वृषे शिवार्चनं चैव खरे वागीश्वरीं तथा ।
गणेशं गजराजाख्ये ध्वांक्षे च पितृपूजनम् ॥४५॥

कौन-सा अनुष्ठान करने से कार्य सिद्धि होगी ? इस प्रकार के प्रश्न में यदि ध्वज आय हो तो भैरवजी की, धूम्र हो तो दुर्गा की, सिंह हो तो सूर्य की, श्वान हो तो हनुमान् की, वृष हो तो शङ्कर की, खर हो तो सरस्वती की, गज हो तो गणेशजी की और ध्वांक्ष हो तो पितरों की पूजा करने से कार्य सिद्धि होती है ॥ ४४-४५ ॥

कार्य सिद्धि के लिये क्या दान करना चाहिये ? ऐसे प्रश्न में—

गोधूमान्नं ध्वजे दद्याद्धूम्रे चैव तिलांस्तथा ।
पीतवस्त्रं च सिंहे वै श्वाने च बलिविस्तरम् ॥४६॥

वृषे च तन्दुलाः प्रोक्ताः खरे चणकधान्यकम् ।
गजे गुडं तथा दद्याद् ध्वांक्षे च यवधान्यकम् ॥४७॥

ध्वज आय हो तो गेहूँ, धूम्र हो तो तिल, सिंह हो तो पीत वस्त्र, श्वान हो तो भात आदि की वलि वृष हो तो चावल, खर हो तो चना, गज हो तो गुड़ और ध्वांक्ष हो तो जौ, धान दान करने से कार्य सिद्धि होती है ॥४६-४७॥

कितने समय में कार्य होगा ? इस प्रकार के प्रश्न में—

ध्वजे सप्त-दिनं प्रोक्तं सिंहे पक्षं तथैव च ।
वृषे मासश्च विज्ञेयो गजे मासत्रयं तथा ॥४८॥
श्वाने खरे च षण्मासं धूम्रे ध्वांक्षे च वर्षकम् ।
इति कालं वदेत्प्रश्ने सर्वकार्येषु चिन्तयेत् ॥४९॥

ध्वज हो तो ७ दिन सिंह में १५ दिन, वृष हो तो १ मास, गज हो तो ३ मास, श्वान और खर हो तो ६ मास, धूम्र, ध्वांक्ष हो तो १ वर्ष में कार्य सिद्धि होगी । सब प्रश्नों में इससे काल का निर्णय समझना चाहिये ॥४८–४९॥

——

5

अङ्गविद्यां प्रवक्ष्यामि नारदेन स्वयंकृताम् ।
ययाऽङ्गस्पर्शमात्रेण बुधैर्ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥५०॥

अब नारदोक्त अङ्गविद्या को कहता हूँ, जिसके द्वारा प्रश्नकर्ता के अङ्गादि स्पर्श करने पर ही उसके शुभ अशुभ फल पण्डित समझ कर कह सकते हैं ॥ ५० ॥

स्पृश्यमानः शिरः पृच्छेन्महालाभो भविष्यति ।
हिरण्यधनधान्यस्य वाञ्छितस्याऽस्य निश्चितम् ॥५१॥

यदि मस्तक स्पर्श करके पूछे तो सुवर्ण, धन, धान्य आदि वाञ्छित पदार्थों का अधिक लाभ होगा, ऐसा कहना ॥ ५१ ॥

मुखं च नासिकां चैव चक्षुः श्रवणमेव च ।
स्पृश्यमानो यदा पृच्छेत्तदा लाभं विनिर्दिशेत् ॥५२॥

मुख, नाक, आँख और कान का स्पर्श करता हुआ पूछे तो भी अभीष्ट वस्तुओं का लाभ कहना ॥ ५२ ॥

ग्रीवां स्कन्धं तथा कण्ठं बाहुं चैव तथा स्पृशेत् ।
पृच्छति पृच्छको यस्य तस्य लाभोऽल्प एव च ॥५३॥

गला, कन्धा, कण्ठ, बाहु का स्पर्श करके पूछे तो इच्छा से कुछ कम लाभ होगा ऐसा कहना ॥५३॥

उदरं नाभिमूलं वा स्पृष्ट्वा यः पृच्छति स्वयम् ।
अन्नपानं भवेत्तस्य कृषिकर्मेति सिद्ध्यति ॥५४॥

पेट अथवा नाभि का स्पर्श कर पूछे तो उसको उत्तम भोजन मिलेगा, और खेती का कार्य सिद्ध होगा, ऐसा कहना ॥५४॥

कटिं शिश्नं तथोरुं च पृच्छको यदि संस्पृशेत् ।
कन्यालाभो भवेत्तस्य पुत्रसम्पत्तिरेव च ॥५५॥

कमर, लिङ्ग, जाँघ का स्पर्श करके पूछे तो कन्या और पुत्र को सुख मिलेगा, ऐसा कहना ॥ ५५ ॥

जानुजङ्घे तथा गुल्फौ पादौ च यदि संस्पृशेत् ।
पृच्छकस्य भवेन्मृत्युः क्लेशो वाऽपि न संशयः ॥५६॥

यदि ठेहुन से नीचे पैर का स्पर्श करके पूछे तो प्रश्नकर्ता का मरण अथवा क्लेश कहना ॥ ५६ ॥

फलं पुष्पं नवं वस्त्रं गृहीत्वा यदि पृच्छति ।
सर्वं च पृच्छतस्तस्य जायते सफलोदयम् ॥५७॥

फल, फूल वा नवीन वस्त्र ग्रहण करके पूछे तो मनोरथ सफल होगा ऐसा कहना ॥ ५७ ॥

अंगारकास्तृणादींश्च गृहीत्वा यदि पृच्छति ।
न तस्य जायते सिद्धिः कार्यस्य प्रयतोऽपि हि ॥५८॥

यदि कोयला, तृण आदि ग्रहण करके पूछे तो यत्न से भी कार्य सिद्धि नहीं होगी, ऐसा कहना ॥ ५८ ॥

शस्त्रं काष्ठं तथा गन्धं गृहीत्वा यदि पृच्छति ।
क्षोभस्तस्य भवेन्नित्यं ग्रहदोषश्च जायते ॥५९॥

यदि शस्त्र, काठ वा गन्ध युक्त वस्तु (चन्दनादि) ग्रहण करके पूछे तो क्षोभ और ग्रह दोष से कष्ट कहना ॥ ५९ ॥

हिरण्यं रत्नभाण्डं च गृहीत्वा चाऽन्नपानकम् ।
पृच्छकः सिद्धिमाप्नोति सद्य एव न संशयः ॥६०॥

सुवर्ण, रत्न, अन्न, जल लेकर पूछे तो निश्चय उसका मनोरथ सिद्ध होता है ॥ ६० ॥

आरामस्य स्पृशन्भूमिं यदा पृच्छति पृच्छकः ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य नाऽत्र कार्या विचारणा ॥६१॥

यदि बगीचे की भूमि का स्पर्श करके पूछे तो उसे सब कार्यों की सिद्धि होती है ॥ ६१ ॥

देवगेहे नदीतीरे स्थाने चैव मनोरमे ।
उपविश्यं यदा पृच्छेत्तदा सिद्धिमवाप्नुयात् ॥६२॥

देव मन्दिर, नदी तीर या सुन्दर स्थान में बैठ कर पूछे तो भी कार्यों की सिद्धि होती है ॥ ६२ ॥

शुष्ककाष्ठे क्षते दुष्टे गुल्मे भग्ने तथैव च ।
स्थानेष्वेतेषु यः पृच्छेत्तस्य क्लेशं समादिशेत् ॥६३॥

सूखे काठ पर बैठ कर, अथवा खंडहर आदि खराब स्थान में बैठ कर पूछे तो प्रश्नकर्ता को क्लेश कहना ॥ ६३ ॥

सुखोपविष्टे दिक्स्थे च पृच्छके सिद्धिरद्भुता ।
विदिक्स्थिते दुरासीने कार्यसिद्धिर्न जायते ॥६४॥

सुखपूर्वक, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम या उत्तर दिशा में बैठ कर पूछे तो कार्य की सिद्धि, यदि दुष्ट आसन पर बैठ कर या विदिक् (कोण की दिशा) में मुख कर पूछे तो कार्य सिद्धि नहीं होती है ॥ ६४ ॥

पुनः संक्षेप में अङ्ग स्पर्श से फल—

अंगुष्ठ - कर्ण - वदन - स्तन - हस्त-केश-
कट्यंस-पादतल-गुह्य-शिरांसि गण्डम् ।
ओष्ठं च संस्पृशति वक्ति शुभानि यद्वा
प्रष्टा तदा कलयति ध्रुवमिष्टसिद्धिम् ॥६५॥

अँगूठा, कान, मुख, हृदय, हाथ, केश, कमर, कन्धा, पदतल, गुदा, मस्तक, गाल वा ओठ का स्पर्श करके पूछे तो शुभ फल और इष्टसिद्धि होती है ॥६५॥

मतान्तर से—

स्पृशेच्छिरो वक्त्र-विलोचन-श्रुतिं
प्राप्नोति धान्याऽम्बरहेमपूर्वकम् ।

ग्रीवा-हनु-स्कन्धयुगं यदा नरो
दुःखात्तदा तस्य विलब्धिमादिशेत् ॥६६॥

मस्तक, मुख, नेत्र, कान का स्पर्श करके पूछे तो अन्न, वस्त्र, सोना की प्राप्ति हो। यदि गला, दाढ़ी, कन्धा स्पर्श करके पूछे तो यत्न से लाभ कहना ॥ ६६ ॥

नाभिं सकुक्षिं स्पृशतोऽर्थसिद्धिं
गुल्फाङ्घ्रिजानुस्पृशतोऽतिदुःखम् ।
जङ्घां कटिं लिङ्गमिह स्पृशेद्यो
कन्यां लभेत सुलभां सुयोगात् ॥६७॥

पेट, नाभि के स्पर्श से कार्य सिद्धि, गुल्फ, पैर, ठेहुन का स्पर्श करै तो कष्ट, जाँघ, कमर, लिङ्ग के स्पर्श करके पूछे तो कन्या की प्राप्ति कहना ॥ ६७ ॥

कचस्पृगेति प्रभुतां फलादि
स्पृष्टं शुभं वै तृण-वह्निशेषम् ।
न सिद्धिवान् कर्दम-काष्ठ-वस्त्र-
स्पृक् खेटपीडां लभते तथाऽऽधिम् ॥६८॥

केश स्पर्श करके पूछे तो प्रभुत्व की प्राप्ति, फल, फूल आदि का स्पर्श करके पूछे तो शुभ; तृण, कोयला के स्पर्श से कार्य सिद्धि नहीं, और कीचड़, काठ, वस्त्र स्पर्श करके पूछे तो ग्रहपीड़ा और चिन्ता होती है ॥ ६८ ॥

प्रश्न के प्रथम अक्षर से लग्न जानकर शुभाशुभ फल—

रविः कुजो भृगुर्ज्ञोज्याः शनीन्दू वर्गपाः क्रमात् ।
लग्नं तत्र कुजादीनामोजे चोजं समे समम् ॥६९॥
तल्लग्नाद्ग्रहयोगैश्च वक्ष्यमाणैः फलं दिशेत् ।
प्रश्नोच्चारितवर्णेभ्यो लग्नांशांस्तत्र कल्पयेत् ॥७०॥

रवि, मङ्गल, शुक्र, बुध, गुरु, शनि और चन्द्र ये क्रम से अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग और यवर्ग के स्वामी हैं। प्रश्न के प्रथम अक्षर यदि मङ्गलादि ग्रह के वर्ग में हो तो विषम अक्षर से विषम राशि, और सम अक्षर से सम राशि लग्न समझना। उस लग्न के योग से आगे कहे फल को कहना चाहिये। प्रश्नकर्ता के मुख से जो प्रथम अक्षर निकले उसी से लग्न समझना ॥६९–७०॥

उदाहरण—प्रश्नकर्ता के मुख से प्रथम अक्षर 'ग' निकला तो कवर्ग होने के कारण मङ्गल वर्गेश हुआ, इसलिये लग्नेश मङ्गल हुआ। मङ्गल की २ राशि (मेष, और वृश्चिक) है, उनमें प्रश्नाक्षर विषम (तीसरा) है इस लिये विषम राशि 'मेष' लग्न हुआ।

स्पष्टार्थ चक्र—

ग्रह	रवि	मंगल	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	चन्द्र
वर्ग	अ ऋ आ ॠ इ लृ ई ॡ उ ए ऊ ऐ ओ औ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य ष र स ल ह व श
राशि	५ सिंह	१ मेष ८ वृश्चि.	२ वृष ७ तुला	३ मिथु. ६ कन्या	९ धनु १२ मी.	१० म. ११ कुं.	४ कर्क

स्पष्टार्थ श्लोक —

अवर्गे सिंहलग्नं च कवर्गे मेषवृश्चिकौ।
चवर्गे यूक-वृषभौ टवर्गे युग्म-कन्यके ॥७१॥

तवर्गे चाप-मीनौ च पवर्गे कुम्भ-नक्रकौ ।
यशवर्गे कर्कटश्चैव लग्नं शब्दाक्षरैर्वदेत् ॥७२॥

अर्थ स्पष्ट है। ऊपर चक्र देखो ॥ ७१–७२ ॥

इस प्रकार लग्न ज्ञान करके उससे फल—

लग्ने चरे न हृतलाभऋणः पदार्थ-
नाशो गदक्षयगमाऽऽगमबन्धमोक्षाः ।
प्रष्टुर्भवन्ति परचक्रमुपैति शीघ्रं
कल्याण-वृद्धि-कलहोपशमा भवन्ति ॥७३॥

यदि चर लग्न हो तो नष्ट वस्तु का लाभ नहीं हो, ऋण के प्रश्न में ऋण नहीं मिले, स्थान प्राप्ति नहीं हो, धन लाभ नहीं हो, रोगके प्रश्न में रोग का नाश हो, गमन वा आगमन हो, बन्दी मोक्ष प्रश्न में बन्दी छूटे, शत्रु की सेना आवे, कुशल प्रश्न में कुशल हो, कलह प्रश्न में कलह शान्त हो, ऐसा कहना ॥ ७३ ॥

लग्ने स्थिरे न मृतनष्टमयौ पदार्थ-
लाभो गमाऽऽगमगदक्षयबन्धमोक्षाः ।
न स्युस्तथैव परचक्रमथोऽर्थनाशः
कल्याण-वृद्धि-कलहोपशमा भवन्ति ॥७४॥

स्थिर लग्न में मृत प्रश्न हो तो मरण नहीं हो, एवं नष्ट लाभ नहीं, स्थान और धन की प्राप्ति नहीं, जाना आना नहीं, रोग नाश नहीं, बन्धन से मुक्ति नहीं होगी ऐसा कहना। तथा शत्रु की सेना आवेगी या नहीं इस प्रश्न में— शत्रु की सेना नहीं आवेगी, अर्थ की हानि नहीं होगी, कल्याण की वृद्धि नहीं होगी, कलह प्रश्न हो तो कलह शान्ति नहीं होगी ऐसा कहना ॥ ७४ ॥

द्व्यंगोदये हृतजनाप्तिरभीष्टवस्तु-
प्राप्तिश्चिरेण गमनाऽऽगमबन्धमोक्षाः ।
प्रष्टुर्भवन्ति परचक्रमुपैत्य शीघ्रं
रोगी च जीवति कलिः शमते तु भूयः ॥७५॥

द्विस्वभाव लग्न में नष्ट वस्तु तथा अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति विलम्ब से हो, गमन आगमन, बन्धन से छूटना भी विलम्ब से कहना चाहिये । परञ्च शत्रु सेना आगमन प्रश्न हो तो शीघ्र आवेगी, रोगी का रोग शीघ्र छूटेगा, कलह शीघ्र शान्त होगा ऐसा कहना ॥ ७५ ॥

अनुक्रमणिका

7

असली प्राचीन सिद्धिदाता



यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र महाशास्त्र

सम्पूर्ण दो भाग (Two Volume)

● प्रत्यक्ष-चमत्कार प्रदर्शित करने वाले अनेक सन्त-महात्माओं एवं सिद्ध-पुरुषों के विद्यमान रहते हुए भी पाश्चात्य सभ्यता एवं भौतिक-विज्ञान के अनुयायी अधिकांश भारतीय भी वर्तमान काल में यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र आदि को कपोलकल्पित अथवा पाखण्ड बताकर उसकी खिल्ली उड़ाने से नहीं चूकते, जबकि हमारे प्राचीन मनीषियों ने इस यन्त्र तन्त्र-मन्त्र विद्या की उन्नति एवं आविष्कारों के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित कर दिया था।

● आधुनिक काल में 'मन्त्रशास्त्र' की ओर से जनरुचि के विकृत एवं विमुख होने का एक मुख्य कारण यह भी कहा जा सकता है कि इस विद्या के नाम पर ठगी एवं धूर्तता का अधिक बोलबाला दिखाई देता है, जिसके कारण यथार्थ ज्ञानी एवं वास्तविक ज्ञाता पुरुष भी असम्मानित हो रहे हैं। मन्त्र-शास्त्र के नाम पर बिकने वाली घटिया स्तर की ऊल-जलूल पुस्तकों ने भी पाठकों के मन में कुण्ठा उत्पन्न की है। इन बुराइयों के निराकरण का एकमात्र उपाय इस विद्या के शास्त्रीय, सार्वभौमिक एवं सत्य ज्ञान को जनता-जनार्दन के सम्मुख उपस्थित करना ही रह गया है। प्रस्तुत संकलन इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

● प्रस्तुत पुस्तक के लिए प्राय: सम्पूर्ण सामग्री प्राचीन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र ग्रंथों, पुराणों एवं इस विषय के अनुभवीजनों द्वारा लिखित तथा उच्चस्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों आदि से संकलित की गई है। हम यह तो दावा नहीं करते कि यह सभी सामग्री अपने सम्पूर्ण रूप से सत्य ही है, परन्तु इतना विश्वास अवश्य दिलाते हैं कि यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र के मंथन स्वरूप जो सर्वोत्तम नवनीत निकाला जा सकता था, उसे हमने इस संकलन के माध्यम से जनता-जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। विश्वासी एवं श्रद्धालु जन इससे पूरा-पूरा लाभ उठायेंगे—ऐसी आशा है। दोनों भाग की दक्षिणा 201/- (दो सौ एक रुपया) डाक खर्च 11/- पृथक्।

नोट :—ग्रन्थ सीमित संख्या में छपा है। अतएव जो सज्जन 201/- M.O. द्वारा भेज देंगे, उन्हें सर्वप्रथम ग्रन्थ भेज दिया जायेगा, साथ ही डाक खर्च माफ कर दिया जायेगा।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र तथा सिद्धि प्रदान करने वाली पुस्तकें मंगाने का विश्वसनीय स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला दिल्ली-6

जन्मदिन का जीवन पर प्रभाव

1 प्रथम अध्याय

१५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग

हिन्दी मास:—पौष

यदि कोई मनुष्य इस समय में उत्पन्न हो तो वह गुरुग्रह और धन राशि से प्रभावित रहता है। धनराशि अस्थिर है और इसका चिह्न अग्नि है। अत एव उस मनुष्य का स्वभाव धनराशि और गुरुग्रह पर निर्धारित होगा।

यह मनुष्य बहुत आसानी से दूसरे मनुष्यों के अपराधों का और निर्बलता का पता लगा सकता है। इसका विज्ञान, फिलोसोफी और धार्मिक कार्यों में अधिक झुकाव होता है। मस्तिष्क शक्ति के कार्यों को करने में रुचि रखने वाला होता है। यह स्वतन्त्र प्रकृति का, जोशीला, सीधा मुंह पर बोलने वाला, पीठ पीछे गालियां अथवा कानाफूसी को न पसन्द करने वाला और सत्यता से प्रेम करने वाला होता है। इसीलिये यह सर्वदा निस्वार्थता से सत्य बोलता है और यही कारण है कि इसके शत्रु भी कई बन जाते हैं।

यह क्रोधी नहीं होता किन्तु ज़रा सी ढील को सहन भी नहीं कर सकता, जोरदार शब्दों में तर्क-वितर्क करने लगता है। कभी २ इसी कारण से वह अपना भविष्य विगाड़ भी देता है। यह बुद्धिमान होता है और विना किसी बात को सिद्ध किये उसे स्वीकृत नहीं करता अर्थात् जव तक उसकी गहराई तक पहुंच कर सम्पूर्ण खोज करके अपने को सन्तुष्ट न करले तब तक उसे मानता नहीं है और उस पर विश्वास नहीं करता है। यह विश्वास करने योग्य होता है। यह धनी, मानी, सुखी, सर्वप्रिय, धार्मिक, कलाप्रेमी, गायन इत्यादि का शौकीन होता है किन्तु इसमें थोड़ी ढीठाई और जिद्दीपन भी होता है। यह क्रमानुसार कार्य और कारण को प्रत्येक स्थान पर देखना पसन्द करता है। यह आत्मविश्वासी होता है। किसी कार्य को प्रारम्भ करने पर जब तक समाप्त न हो जाय तव तक छोड़ता नहीं है और प्रायः इसी कारण से सफलता प्राप्त करता है। यह अपने मन को एकाग्र करने में बड़ा प्रवीण होता है और वाद-विवाद करने में भी चतुर होता है।

इसका एक दूसरा पहलू भी है। यह प्रायः विद्रोही स्वभाव का हो जाता है और रीति-रिवाजों के भी विरुद्ध कार्य करने लगता है। यह इमानदारी से और स्वतन्त्रता से कार्य करने वाला होता है और द्विस्वभावी होता है।

यह परोपकारी, पिता के धन से रहित, कष्ट से धन उपार्जन करके व्यय करने वाला, कार्य में चतुर, गुप्त विचार रखने वाला, शास्त्राभ्यासी, दुर्वल शरीर वाला, अपने कुटम्बीजनों पर क्रोध करने वाला, बड़ा बुद्धिमान्, बहुत धन वाला, सज्जनों की प्रतिष्ठा करने वाला और अपनी सुन्दर बुद्धि से मनुष्यों का मनोरञ्जन और हर्ष बढ़ाने वाला होता है।

भाग्य:—अपने जीवन के मध्यभाग में उसे अपने भाग्य का चमकाने के कई स्वर्ण अवसर प्राप्त होंगे। साधारणतया हम यह भी कह सकते हैं कि उसके जीवन के ३१ वें वर्ष से ५१ वें वर्ष तक का समय बहुत ही मुख्य होगा। यह प्रायः तर्क-वितर्क करने वाला होता है, अत एव जो इसके सहायक होते हैं और जो कि इसके भाग्य को चमकाने में सहायक होते हैं या हो सकते हैं, इसी तर्क-वितर्क के कारण ही शत्रु बन जाते हैं। यह सर्वदा सभी वस्तुओं में वृद्धि करने वाला होता है।

इसका भाग्यशाली अंक ३ है और किसी भी वर्ष में १५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग, १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग और १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर तक लगभग का समय अच्छा होता है। इसमें यह अपना कार्य, व्यापार इत्यादि चला सकता है। यही समय इसके भाग्य को चमकाने में सहायक होगा। इसी समय में स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। इसके जीवन का मुख्य समय ३२ वर्ष से ४८ वर्ष तक का होगा, जिसमें कि यह अपना भाग्य चमका सकेगा। अतः इस समय में प्राप्त होने वाले स्वर्ण अवसरों को हाथ से न जाने देवें अन्यथा जीवनभर हाथ मलते रह जाओगे।

इसके लिये उत्तम रंग गुलाबी, पीला या जामुनी है और लाल और नीले के मिश्रण से बना हुआ रंग भी उत्तम है। अतः इसे अपने घर के पर्दों में, पहनने के कपड़ों में, गुलदस्तों के फुलों को चुनने में इन्हीं रंगों का उपयोग करना अत्युत्तम होगा। इससे इसके स्वास्थ्य और मन पर अत्यन्त आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ेगा। इसके लिये नीलवर्ण पत्थर (नग) अत्युत्तम होगा। इसे यह अंगुठी, हार इत्यादि में डलवा कर पहने तो इसके भाग्य और स्वास्थ्य पर भी काफी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

कभी २ यह बहुत जिद्दी बन जाता है और दूसरों की बातों को सुनता ही नहीं है और हो सकता है कि इसी के कारण यह अपने भाग्य को चमकाने के अवसरों को न देख सके और सहायकों से भी वंचित हो जाय। अतः इसे अपनी जिह्वा को संभाल कर उपयोग करना चाहिये। यह प्रत्येक बात की गहराई तक जाने वाला होता है।

इसके लिये ३, १२, २१ और ३० तारीखें चाहें वे किसी भी मास की ही क्यों न हों अच्छी रहेंगी। यदि ये तिथियां मंगलवार, वीरवार और शुक्रवार के दिन पड़े तो वह दिन बहुत ही भाग्यशाली होगा। ऐसे स्वर्ण अवसर को न छोड़ना। ६, १५, २४, ९, १८ और २७ मित्र तिथियां भी अच्छी रहेंगी।

स्वास्थ्य:—इसे चोटों और दुर्घटनाओं से सावधान रहना चाहिये। स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिये शुद्ध हवा का सेवन इसके लिये सोने में सुहागे का कार्य करेगा। यह जोश में आकर व्यायाम अधिक कर लेता है अतः इसे कष्ट उठाने पड़ते हैं। व्यायाम करे, परन्तु सीमा से बाहर व्यायाम करने से रोगी होने का भय रहेगा। मन की चिन्ताओं को दूर करके खुली हवा में भ्रमणार्थ जावे तो स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यह प्रायः मानसिक चिन्ता अथवा व्यायाम की अधिकता से रोगी होता है। यह जोड़ों के दर्द, गले या फेफडे या चमडे के रोगों से भी पीड़ित होता है। नसों की बिमारी के होने का भी भय रहेगा और हो सकता है कि पिछली आयु में अर्धांग भी हो जाय यदि सावधानी नहीं रक्खी तो।

इसके लिये दिसम्बर, सैप्टेम्बर, जून और फरवरी के मास जरा थोड़े खराब रहेगें। इसे अंगूर, अनानास, नाश्पाती, अंजीर, अनार, पौदीना,

बादाम, सेब इत्यादि का अधिक उपयोग करना चाहिये। गेहूं का भोजन इसके लिये अत्युत्तम रहेगा।

यदि कोई मूल नक्षत्र में उत्पन्न हो तो उसे मेग्नेशिया फोस्फोटिका, या काली फोस्फोटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये तो उसे प्रत्येक तरह के रोग में लाभ देगा।

यदि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न हो तो उसे नेट्रम सल्फरिकम या फैरम फोस्फोरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये।

यदि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हो तो उसे काली युरियाटिकम या सिल्का नामक नमक का उपयोग करना चाहिये।

ऊपर लिखे नमक किसी भी कैमिस्ट के यहां से मिल सकते हैं, किन्तु फिर भी रोग का निदान करवाना अधिक अत्युत्तम रहेगा, यद्यपि ये नमक कोई नुक्सान नहीं पहुंचायेगें।

यदि किसी की जन्म राशी धन हो तो १२, २०, ३८, १५, २१, ८, ४०, ३९, ४८, ७५ और ५७ के वर्षों में कष्ट होने का भय रहेगा।

मित्रता:—यद्यपि इसके मित्र तो बहुत होते हैं किन्तु अच्छा मित्र या गाढ़ मित्र कोई नहीं होता, क्योंकि यह स्वतन्त्र विचारों का और तर्क-वितर्क करने वाला होता है। इस समय में उत्पन्न होने वाले प्रायः दो तरह के होते हैं। पहली तरह के मनुष्य दूसरों की मित्रता का ठीक तरह से ध्यान रखते हैं वे अपने से छोटों का भी मान करते हैं और अपने नौकरों से भी अच्छा व्यवहार करते हैं। दूसरे प्रकार के मनुष्य जरा सख्त तर्क-वितर्क करने वाले होते हैं। ये लोग पैसे के दोस्त होते हैं और पक्के स्वार्थी होते हैं। फिर भी इसकी मित्रता १५ ऐप्रिल से १४ मई तक लगभग,

१५ जून से १४ जुलाई तक लगभग या १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर तक लगभग या १५ मार्च से १४ ऐप्रिल तक लगभग या १५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग के समय में उत्पन्न होने वालों से हो सकती है। अपने जन्मांक पर के दिनों में उत्पन्न से भी मित्रता हो सकती है। यथा एक मनुष्य १ तारीख को उत्पन्न हुआ है तो उसकी मित्रता १, १०, १९, २८ या उसकी मित्र संख्या २, ४, ७, ११, १३, १६, २०, २२, २५, २९ या ३१ वीं तिथियों में, चाहे वे किसी भी मास की ही क्यों न हों, उत्पन्न होने वाले से हो सकती है।

आजीविका:—यह अच्छी इच्छा शक्ति वाला और मन को काबू करने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य तन्मयता से और संलग्नता से करने वाला होता है। यही कारण है कि पहली तरह का मनुष्य प्रत्येक कार्य में पूर्ण सफलता शीघ्र ही प्राप्त कर लेते हैं और बड़ी बड़ी जगहों या पदवियों पर होते हैं और दूसरी तरह के मनुष्य अस्थिर विचारों के और तर्कवादी होने के कारण ऊंची पदवियों पर कठिनाई से ही पहुंचते हैं। यह कार्य और कारण को देखने वाला होता है। यह समझता है कि मेरी आज्ञा के अनुसार शीघ्र ही कार्य हो जाना चाहिये और यदि उसमें ढील हो तो इसे पसन्द नहीं होता। यह किसी भी मस्तिष्क शक्ति के कार्य को अच्छी तरह से कर सकता है। यह अपना स्वतन्त्र कार्य नौकरी अथवा व्यापार की अपेक्षा अच्छी तरह से कर सकता है और उसमें सफलता भी प्राप्त करता है। यह किसी भी आविष्कार अथवा खोज के कार्य में चमक सकता है। यह राजनैतिक कार्यों में, प्रोफेसर, अध्यापक, वकील, मैजिस्ट्रेट अथवा

सकता है। यह ड्राइङ्ग अथवा चित्रलेखन, ड्राफ्ट्समैन, आर्चिटैक्ट का कार्य भी कर सकता है। यह ब्राह्मणों का कार्य पुरोहित इत्यादि का भी कर सकता है।

विवाहः—यह अपनी इज्जत का काफी विचार रखने वाला होता है, अतः घर-गृहस्थी के झगड़ों को दूसरों को नहीं बताता। हो सकता है कि इसका जीवन साथी पञ्चत्व को भी प्राप्त हो जाय अतः शान्ति से लाभ होगा। यह भी हो सकता है कि वह साथी पञ्चत्व को प्राप्त करने के स्थान पर सर्वदा रोगी ही रहे। यह तर्कवादी स्वभाव का होता है अतः घर-गृहस्थी के झगड़े तर्क-वितर्क से भी बढ़ते हैं और प्रायः किसी दूसरे के कथनानुसार आपस में कलह कंकांस भी हो जाता है और हो सकता है कि नौबत त्यागने तक भी पहुंच जाय। अतः इन सब बातों का ध्यान रखना इसके लिये अत्यन्त ही आवश्यक है। इसको निम्नलिखित महीनों में उत्पन्न कन्या से विवाह करना चाहिये। १५ ऐप्रिल से १४ मई तक लगभग, १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग, १५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग, १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर तक लगभग के दिनों के बीच में उत्पन्न कन्या से पाणिग्रहण करने से गृहस्थी स्वर्गमय व्यतीत होगी। यदि कोई कन्या १५ दिसम्बर से १४ जनवरी के समय में उत्पन्न हो तो उसको ऐसे वर से पाणिग्रहण करना चाहिये जो कि, जब कि चन्द्रमा मेष, मिथुन, या धन राशि में हो. उत्पन्न हो तो उसकी गृहस्थी सुखमय और सन्तति युक्त होगी। भाग्य या समय इसे विवाह जीवन से इतनी प्रसन्नता नहीं प्राप्त होने देता। अतः इसे ऊपरि लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये।

इस समय में उत्पन्न होने वालों का भाग्यशाली अंक ३ होने से इन

३, ६, ९, १२, १८, २१, २४, २७, ३० तिथियों में उत्पन्न वर या वधू से विवाह कर सकते हैं अथवा अपने जन्मांक के बराबर की तिथियों में भी विवाह कर सकते हैं। यथा १५ तारीख को कोई उत्पन्न हुआ है तो ६, १५, २४ तिथियों में उत्पन्न से विवाह हो सकता है।

यदि कोई घन लग्न में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे, वर हो तो वधू से–वधू हो तो वर से, पाणिग्रहण करना चाहिये जब कि सूर्य—अश्लेषा, कृतिका, ज्येष्ठा, उत्तरा, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद या रेवती नक्षत्र में हो, गुरु—पुनर्वसु, उत्तरा, कृतिका, विशाखा, उत्तराषाढ़ा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो, बुध—पुनर्वसु, कृतिका, उत्तरा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद या उत्तराषाढा में हो, मंगल–अश्लेषा, ज्येष्ठा, कृतिका, उत्तरा, उत्तराषाढ़ा या रेवती नक्षत्र में हो तो गृहस्थी सुखमय, सन्ततियुक्त, बिना कलह–कंकांस के व्यतीत होगी।

यह अपनी सन्तान को भी नियन्त्रण में रखना पसन्द करता है। उन्हे अपनी आज्ञानुसार कार्य करता हुआ देखना चाहता है। इसकी मानसिक शक्ति अच्छी होती है, किन्तु इसे समझने में इसकी सन्तानें अथवा सर्वसाधारण गल्ती कर जाते हैं। इसके प्रेम, कर्तव्य और सामाजिक कार्य की परिभाषा जरा विचित्र होती है, यही कारण है कि गृहस्थी जीवन में इसे दूसरों के द्वारा थोड़ी कठिनाईयां उठानी पड़ती है।

2 द्वितीय अध्याय

१५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग

हिन्दी मास :—माघ

यदि कोई मनुष्य इस समय में उत्पन्न हो तो उसपर शनिग्रह और मकर राशि का प्रभाव होता है। दोनों का पृथ्वी चिन्ह है, अतः इसके स्वभाव और मन पर भी इसका वहुत गाढ़ असर पड़ता है।

स्वभाव:—यह मनुष्य अपने उत्तरदायित्व को अच्छी तरह से समझता है। अपनी मर्यादा का वहुत विचार करने वाला होता है। मेहनती और सख्त कार्य करने वाला होता है और यह जब किसी कार्य को प्रारम्भ करता है तो खाना-पीना-सोना सब भूल जाता है। यह एक हिम्मती युवक होता है। इसके उद्देश्य और विचार वहुत उच्च होते हैं। इसका धार्मिक कार्यों में, आत्मविद्या, समाधी, अध्यात्मविद्या, और पठन-पाठन में खूब ध्यान लगता है। यह सर्वदा स्वतन्त्रता से कार्य करना पसन्द करता है। यह परमार्थ के कार्यों को करने का इच्छुक होता है। यह अपने किसी भी कार्य में किसी भी प्रकार के रुकावट का होना विल्कुल पसन्द नहीं करता और यदि कोई इसके कार्य में अड़चने या टीका-टिप्पणियां करता है तो यह शीघ्र क्रोधित हो जाता है और कार्य को मध्य में ही छोड़ देता है। यदि यह किसी कार्य को प्रारम्भ करता है अथवा उस कार्य में प्रमुख बनकर कार्य करे तो बड़ी बुद्धिमानी से धैर्य से उस कार्य को करता है और तब तक नहीं छोड़ता जब तक कि उस कार्य से सन्तुष्ट न हो जाय। इसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी होती है

यह भ्रमणशील, अपने जनों का विरोधी, निर्धन अथवा कठिनता से धन उपार्जन करनेवाला, उत्सवरहित और प्रभुतारहित, मन्त्रशास्त्र को पढ़ने का इच्छुक अथवा ज्ञाता, वेद इत्यादि धर्मग्रन्थों का वाचन करने वाला, साधुओं का संग करने वाला, योगक्रिया में रत, बुद्धि की विशेषता से शत्रुओं को पराजय करनेवाला और पुण्यकर्म करने वाला होता है।

यह घर में बैठे २ बड़ी २ बातें कर सकता है, परन्तु यदि इसे रंगमंच पर व्याख्यान करने को कहा जाय तो अच्छी तरह से धाराप्रवाह में न बोल सकेगा। यह अपने स्वतन्त्र विचारों में ही विचरने वाला होता है। यदि यह किसी भी कार्य को स्वतन्त्रता से करे तो उसे करने में सफल हो जाता है, किन्तु यदि कोई आकर इसके कार्य में माथाकूट करे तो इसे अच्छा नहीं लगता और यह स्वयं भी किसी के कार्य में माथापच्ची नहीं करता। यह बुद्धिमान्, योग्य, विद्याभ्यासी, साहसी, निपुण, सुशील, आज्ञाकारी परिश्रमी और कार्यशील होता है, किन्तु दो तरह के मनुष्यों की प्रकृति होने से दूसरे दर्जे के लोग थोड़े नीच विचार के जिद्दी, जानते हुए को भी अनजाना करनेवाले, कन्जूस, धक्का-मुक्की करने वाले, कार्य को मध्य में छोड़ देने वाले, अप्रसन्न, चालाक, दुष्ट, स्थिर, दूसरों के कार्यों में दखलअन्दाजी या रुकावटें डालने वाले, मसखरे और वहमी होते हैं।

यह कई बार तो इस प्रकार की बातें सोचता है और करता है कि साधारण मनुष्य तो इसे समझ ही नहीं सकता, कि इसके कहने का अथवा करने का क्या अभिप्राय है। यह ठण्डे स्वभाव का और नाप तोलकर कार्य करने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य को बहुत ही सावधानी से करता है और दूसरों के दुःख में सहायक भी होता है।

यह गणित और राजनैतिक विषयों में निपुण हो सकता है। यह साहसी और कठिनाइयों का धैर्य से सामना करने वाला होता है। यह जनता के किसी धार्मिक कार्य में अथवा सरकार के किसी उत्तरदायित्व वाले कार्य में सफल हो सकता है। यह प्रायः ही दुःखी रहता है और अपने स्वयं के परिश्रम से अपने भाग्य के सितारे को चमकाने वाला होता है। यह या तो किसी कार्य में एकदम सफल हो जाता है अथवा ठोकरें खाकर उस कार्य से निराश हो जाता है।

इसे सर्वसाधारण नहीं पहचान पाते इसी लिये इसे निर्दयी, कठोर हृदय, कञ्जूस इत्यादि शब्दों से विभूषित करके बुलाते हैं, वास्तव में यह दूसरों की सहायता करता है परन्तु समक्ष होकर नहीं। इसे गुप्त रहकर कार्य करना पसन्द है। यह किसी का व्यंग या ताना और मखौल नहीं सहन कर सकता। यह गम्भीर स्वभाव का होता है।

यदि हम इसका दूसरा पहलू विचारें तो यह अपने जीवन में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करता है और अपने दुःख का रोना रोता हुआ मिलेगा। इसके बहुत से शत्रु हो जाते हैं क्योंकि इसका स्वभाव दूसरों की कड़वी टीका करने का और मसखरी करने का होता है।

भाग्यः—इसे अपने भाग्य को चमकाने के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ता है और यह कोई बहुत अच्छे भाग्यवाला नहीं होता, किन्तु कठिन परिश्रम, संलग्नता और तन्मयता और स्वतन्त्रता से कार्य करना इसे भाग्यशाली और सफल कार्यकर्ता बना देता है। ३० वर्ष के पश्चात् इसे ... का अवसर मिलेगा। इसके जीवन का पिछला

३, ६, ९, १२, १८, २१, २४, २७, ३० तिथियों में उत्पन्न वर या वधू से विवाह कर सकते हैं अथवा अपने जन्मांक के बराबर की तिथियों में भी विवाह कर सकते हैं। यथा १५ तारीख को कोई उत्पन्न हुआ है तो ६, १५, २४ तिथियों में उत्पन्न से विवाह हो सकता है।

यदि कोई धन लग्न में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे, वर हो तो वधू से-वधू हो तो वर से, पाणिग्रहण करना चाहिये जब कि सूर्य—अश्लेषा, कृतिका, ज्येष्ठा, उत्तरा, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद या रेवती नक्षत्र में हो, गुरु—पुनर्वसु, उत्तरा, कृतिका, विशाखा, उत्तराषाढ़ा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो, बुध—पुनर्वसु, कृतिका, उत्तरा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद या उत्तराषाढा में हो, मंगल-अश्लेषा, ज्येष्ठा, कृतिका, उत्तरा, उत्तराषाढ़ा या रेवती नक्षत्र में हो तो गृहस्थी सुखमय, सन्ततियुक्त, बिना कलह-कंकांस के व्यतीत होगी।

यह अपनी सन्तान को भी नियन्त्रण में रखना पसन्द करता है। उन्हे अपनी आज्ञानुसार कार्य करता हुआ देखना चाहता है। इसकी मानसिक शक्ति अच्छी होती है, किन्तु इसे समझने में इसकी सन्तानें अथवा सर्वसाधारण गल्ती कर जाते हैं। इसके प्रेम, कर्तव्य और सामाजिक कार्य की परिभाषा जरा विचित्र होती है, यही कारण है कि गृहस्थी जीवन में इसे दूसरों के द्वारा थोड़ी कठिनाईयां उठानी पड़ती है।

२ द्वितीय अध्याय

१५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग

हिन्दी मास :—माघ

यदि कोई मनुष्य इस समय में उत्पन्न हो तो उसपर शनिग्रह और मकर राशि का प्रभाव होता है। दोनों का पृथ्वी चिन्ह है, अतः इसके स्वभाव और मन पर भी इसका बहुत गाढ़ असर पड़ता है।

स्वभाव:—यह मनुष्य अपने उत्तरदायित्व को अच्छी तरह से समझता है। अपनी मर्यादा का बहुत विचार करने वाला होता है। मेहनती और सख्त कार्य करने वाला होता है और यह जब किसी कार्य को प्रारम्भ करता है तो खाना-पीना-सोना सब भूल जाता है। यह एक हिम्मती युवक होता है। इसके उद्देश्य और विचार बहुत उच्च होते हैं। इसका धार्मिक कार्यों में, आत्मविद्या, समाधी, अध्यात्मविद्या, और पठन-पाठन में खूब ध्यान लगता है। यह सर्वदा स्वतन्त्रता से कार्य करना पसन्द करता है। यह परमार्थ के कार्यों को करने का इच्छुक होता है। यह अपने किसी भी कार्य में किसी भी प्रकार के रुकावट का होना बिल्कुल पसन्द नहीं करता और यदि कोई इसके कार्य में अड़चने या टीका-टिप्पणियां करता है तो यह शीघ्र क्रोधित हो जाता है और कार्य को मध्य में ही छोड़ देता है। यदि यह किसी कार्य को प्रारम्भ करता है अथवा उस कार्य में प्रमुख बनकर कार्य करे तो बड़ी बुद्धिमानी से, धैर्य से उस कार्य को करता है और तब तक नहीं छोड़ता जब तक कि उस कार्य से सन्तुष्ट न हो जाय। इसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी होती है।

यह भ्रमणशील, अपने जनों का विरोधी, निर्धन अथवा कठिनता से धन उपार्जन करनेवाला, उत्सवरहित और प्रभुतारहित, मन्त्रशास्त्र को पढ़ने का इच्छुक अथवा ज्ञाता, वेद इत्यादि धर्मग्रन्थों का वाचन करने वाला, साधुओं का संग करने वाला, योगक्रिया में रत, बुद्धि की विशेषता से शत्रुओं को पराजय करनेवाला और पुण्यकर्म करने वाला होता है।

यह घर में बैठे २ बड़ी २ बातें कर सकता है, परन्तु यदि इसे रंगमंच पर व्याख्यान करने को कहा जाय तो अच्छी तरह से धाराप्रवाह में न बोल सकेगा। यह अपने स्वतन्त्र विचारों में ही विचरने वाला होता है। यदि यह किसी भी कार्य को स्वतन्त्रता से करे तो उसे करने में सफल हो जाता है, किन्तु यदि कोई आकर इसके कार्य में माथाकूट करे तो इसे अच्छा नहीं लगता और यह स्वयं भी किसी के कार्य में माथापच्ची नहीं करता। यह बुद्धिमान्, योग्य, विद्याभ्यासी, साहसी, निपुण, सुशील, आज्ञाकारी परिश्रमी और कार्यशील होता है, किन्तु दो तरह के मनुष्यों की प्रकृति होने से दूसरे दर्जे के लोग थोड़े नीच विचार के जिद्दी, जानते हुए को भी अनजाना करनेवाले, कन्जूस, धक्का-मुक्की करने वाले, कार्य को मध्य में छोड़ देने वाले, अप्रसन्न, चालाक, दुष्ट, स्थिर, दूसरों के कार्यों में दखलअन्दाजी या रुकावटें डालने वाले, मसखरे और वहमी होते हैं।

यह कई वार तो इस प्रकार की बातें सोचता है और करता है कि साधारण मनुष्य तो इसे समझ ही नहीं सकता, कि इसके कहने का अथवा करने का क्या अभिप्राय है। यह ठण्डे स्वभाव का और नाप तोलकर कार्य करने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य को बहुत ही सावधानी से करता है और दूसरों के दुःख में सहायक भी होता है।

यह गणित और राजनैतिक विषयों में निपुण हो सकता है। यह साहसी और कठिनाइयों का धैर्य से सामना करने वाला होता है। यह जनता के किसी धार्मिक कार्य में अथवा सरकार के किसी उत्तरदायित्व वाले कार्य में सफल हो सकता है। यह प्रायः ही दुःखी रहता है और अपने स्वयं के परिश्रम से अपने भाग्य के सितारे को चमकाने वाला होता है। यह या तो किसी कार्य में एकदम सफल हो जाता है अथवा ठोकरें खाकर उस कार्य से निराश हो जाता है।

इसे सर्वसाधारण नहीं पहचान पाते इसी लिये इसे निर्दयी, कठोर हृदय, कञ्जूस इत्यादि शब्दों से विभूषित करके बुलाते हैं, वास्तव में यह दूसरों की सहायता करता है परन्तु समक्ष होकर नहीं। इसे गुप्त रहकर कार्य करना पसन्द है। यह किसी का व्यंग या ताना और मखौल नहीं सहन कर सकता। यह गम्भीर स्वभाव का होता है।

यदि हम इसका दूसरा पहलू विचारें तो यह अपने जीवन में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करता है और अपने दुःख का रोना रोता हुआ मिलेगा। इसके वहुत से शत्रु हो जाते हैं क्योंकि इसका स्वभाव दूसरों की कड़वी टीका करने का और मसखरी करने का होता है।

भाग्यः—इसे अपने भाग्य को चमकाने के लिये वहुत परिश्रम करना पड़ता है और यह कोई वहुत अच्छे भाग्यवाला नहीं होता, किन्तु कठिन परिश्रम, संलग्नता और तन्मयता और स्वतन्त्रता से कार्य करना इसे भाग्यशाली और सफल कार्यकर्ता बना देता है। ३० वर्ष के पश्चात् इसे

भाग अच्छा और स्मरणीय होगा। इसे अपने भाग्य का निर्माण करने के लिये बहुत सी कठिनाईयाँ का सामना करना पड़ेगा। यह घमण्डी और गर्वीला होता है और कभी कभी इसी कारण से हानि कर बैठता है। दूसरे पहलु को लोग कई बार अस्थिरता, तर्क-वितर्क करने के कारण, अपने नीचे के कार्यकर्ताओं से अनबनाव के कारण धन की नुक्सानी कर बैठते हैं और निर्धनता को प्राप्त हो जाते हैं। यह अपनी इज्जत सब जगह देखना चाहता है और प्रमुखत्व अधिक चाहता है।

इसका भाग्यशाली नम्बर ८ है। यदि यह अपने कार्य ८, १७, २७ वीं करें तो उन्हें लाभदायक रहेगा। यदि यह अंक इसके अच्छा सावित न हो तो फिर इसे १, ३, ४, १०, १२, १४, ६, १५, १९, २१, ३० या २८ तिथियों में करे तो भी लाभदायक रहेगा, किन्तु यदि अपने जन्मतिथि के अंक (जन्मांक) के अनुसार करे तो उससे भी ठीक रहेगा। यथा १८ तिथि को उत्पन्न मनुष्य ९, १८ या २७ तिथि को कार्य करे तो और भी अच्छा होगा और इसके मित्र अंक ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७ या ३० भी अच्छे हैं। यदि ८, १७, २७ तिथियों पर शनिवार आजाय तो वह दिन और भाग्यशाली होगा।

इसे अपने पहनने के कपड़ों, घर के पर्दों, गुलदस्तों, मेजपोष, चादरें इत्यादि में गाढ़े रंगों का उपयोग करना चाहिये। यह गाढ़ा नीला, गाढ़ा हरा, गाढ़ा खाकी इत्यादि का उपयोग करे तो इसे मनकी शान्ति मिलेगी, स्वास्थ्य पर काफी प्रभाव पड़ेगा यहां तक कि भाग्य में भी परिवर्तन होगा। इसे अपने गहनों में नीलम या सोने के तारों से बना हुआ विशेष प्रकार का कांटा पहनना चाहिये।

इसके लिये १५ मई से १४ जून तक लगभग, १५ सेप्टेम्बर से १४ अक्टुबर तक लगभग, १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग और १५ जनवरी से १४ फरवरी तक का लगभग समय अच्छा रहेगा । इसी समय में इसे भाग्य चमकाने के कई स्वर्ण अवसर मिलेगें । ३० वां, ३१ वां, ३६ वां और ४१ वां वर्ष इसके जीवन में एक मुख्य समय होगा ।

स्वास्थ्यः—यह प्रायः अपने उल्टे विचारों के कारण ही कष्टों में, रोगों में फँसता है । अतः इसे अपने विपरीत विचारों को निकाल दूर फेंक देना चाहिये । मानसिक कार्यों में उलझे रहने से इसे कई कई तरह की कठिनाईयां उठानी पड़ती हैं । इसे कान के दर्द, दान्तों के दर्द, घुटने, कमर इत्यादि के दर्द, मस्तिष्क रोग अथवा शरीर के चमड़े में किसी प्रकार के रोग के होने का भय रहता है । टांगों पर किसी दुर्घटना से चोट लगने का भय होता है ।

यदि कोई उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न हो तो उसे रोगों में कल्करिया सल्फरिकम और काली मरियेटिकम नामक नमक का किसी अंग विज्ञान शास्त्री की मन्त्रणा लेकर उपयोग करना चाहिये ।

यदि श्रवणा नक्षत्र में उत्पन्न हो तो उसे सिल्का नामक नमक का उपयोग करना चाहिये ।

यदि धनिष्ठा में हो तो उसे फैरमफोस्फोरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये ।

इसे पेट की खराबी, ज़िगर; सिर दर्द, जोड़ों में दर्द या खून में खराबी भी हो सकती है । इसके लिये गाज़र, पालक, हरे शाक इत्यादि खाना

स्वास्थ्यप्रद है। १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग, १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग और १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग के दिन स्वास्थ्य के लिये थोड़े खराब रहेगें। इसके लिये २, ४, ८, १२, १७, १६, २६, २८, ३२, ३५, ३६, ४०, ४४, ५३, ४८, ५६, ६२, ६४ वर्ष जरा विशेष महत्वपूर्ण होगें विशेषतया स्वास्थ्य के विचार से।

जीवनसाधनः—यह दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी, सख्त कार्य करनेवाला, धैर्यशाली, उत्तरदायित्व को समझने वाला और कार्यशील होता है। यह कार्य की गहराई तक जाकर कार्य करना पसन्द करता है। इसकी मानसिक शक्ति अच्छी विकसित होती है और इसकी इच्छाशक्ति भी दृढ़ होती है। इन्ही कारणों से यह ठेकों के कार्यों में, कृषि में, सरकार के किसी भी उत्तरदायित्व के कार्य में प्रमुख होकर कार्य कर सकता है। यदि यह स्वतन्त्रता से करे तो भी अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। यह धार्मिक कार्यों में और राजनैतिक कार्यों में भी सफलता प्राप्त कर सकता है। यह सावधानी से और अपनी जिम्मेदारी समझ कर किसी भी कार्य में पड़े तो उसमें सफल हो सकता है। यह किसी मानसिक शक्ति के कार्य में भी सफल हो सकता है।

मित्र और शत्रुः—इसके मित्र बहुत ही कम होगें, फिर भी इसका बोलचाल तो बहुतों से रहेगा। इसके सच्चे मित्र तो विरले ही होते हैं। इसकी मित्रता ४, १३, २२, ८, १७, २६ तिथियों में उत्पन्न होने वालों से भी हो सकती है। और १५ मई से १४ जून तक लगभग, था १५ सैप्टेम्बर से १४ अक्तुबर तक लगभग के समय में उत्पन्न मनुष्य से भी मित्रता हो सकती है।

पाणिग्रहण :—यह जीवन के पिछले दिनों में अथवा देरी से विवाह करता है। इसका गृहस्थी जीवन साधारण होता है, फिर भी यदि यह ऐसी कन्या से विवाह करे जो कि १५ मई से १४ जून तक लगभग, १५ सैप्टेम्बर से १४ अक्तूबर तक लगभग, या १५ दिसम्बर से १४ फरवरी तक लगभग के समय में उत्पन्न हो तो गृहस्थी स्वर्गमय होगी। यदि कन्या १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग के समय में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे वर से पाणिग्रहण करना चाहिये जो कि जब कि चन्द्रमा वृष, कर्क, कन्या, धन या मकर राशि में हो, उत्पन्न हो तो उसकी गृहस्थी सुखमय और सन्ततियुक्त होगी।

यदि यह मकर लग्न में उत्पन्न हुआ हो तो इसे ऐसे वर से या वधू से विवाह करना चाहिये जो कि जब कि बुध-भरणी, पूर्वाषाढ़ा या पूर्वाभाद्र पद में हो, मंगल-ज्येष्ठा, अश्लेषा या रेवती में हो, शुक्र-रेवती, अश्लेषा या ज्येष्ठा नक्षत्र में हो, शनि-मघा, मूल या अश्विनी नक्षत्र में हो, उत्पन्न हो तो दोनों की गृहस्थी स्वर्गमय, सन्ततियुक्त और कलह-कंकांस से दूर होगी और यह वास्तविक जीवन का उपयोग कर सकता है।

३ तृतीय अध्याय

१५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग

हिन्दी मास :—फाल्गुन

यदि इस समय में उत्पन्न हो तो शनि और युरानिस ग्रह और कुम्भ राशि के प्रभाव वाला होगा। उसके स्वभाव, हलन-चलन और मन पर इन्हींका प्रभाव होता है।

स्वभाव :—यह दूसरों के स्वभाव, प्रकृति का बहुत ही अच्छी तरह से अवलोकन करके जल्दी ही पहचान जाने वाला होता है। यह मिलनसार होता है अतः इसके मित्र भी बहुत होते हैं। यह प्रत्येक बात को बहुत शीघ्र ही समझ जाता है और इसमें एक विशेषता यह भी है कि यह किसी भी कठिन बात को बहुत ही आसानी से सरल भाषा में और बुद्धिमानी से दूसरों के समक्ष खोल कर रख देता है कि सब आश्चर्यान्वित हो जाते हैं। यह दूसरों को अपनी अपनी आकर्षण शक्ति से एकदम आकर्षित कर लेता है और अपनी चटपटेदार बातचीत से, सच्चाई से दूसरों का मनोरञ्जन करने में निपुण होता है, किन्तु फिर भी इसमें बचपन पाया जाता है। यह क्लबों, सोसाइटियों इत्यादियों का शौकीन होता है।

यह गहरे विचारों वाला, मन को एकाग्र करने वाला, शुद्ध विचारों वाला होता है। अपने स्वभाव और प्रकृति को अपने अच्छे मित्रों द्वारा सुधार सकता है, क्योंकि हो सकता है कि यह किसी बुरी संगत में पड़कर चरित्र खराब कर बैठे। यद्यपि इसमें दूसरों की प्रकृति को पहचानने का गुण भी है, फिर भी इसे मित्र ढूंढने के लिये अत्यन्त सावधानी रखनी

चाहिये। कम से कम इसे अपने जीवन के पहले २० वर्ष तो मित्र बनाने में बहुत ही चतुरता और सावधानी रखनी चाहिये।

यह परोपकारी, चतुर, दयालु, बली, कोमल शरीर वाला, स्त्री के साथ विलास करने में चतुर, बिना प्रयोजन के बात करने वाला, अतिशठ, मित्रता से हीन, मलिन, दया हीन और सुखी होता है।

यदि हम इसके दूसरे पहलू का अवलोकन करें तो यह निर्धन, और दुष्ट विचारों का होता है। इसके किसी सन्तान की मृत्यु होती है। यह अप्रसन्न, जिद्दी, अभागा, असफल, साधारण मध्यम ऊंचाई का, अपनी स्वयं की इज्जत सब जगह देखने वाला और डंफास मारने वाला और असाधारण शक्ति वाला होता है।

यह मन की एकाग्रता से अपनी मानसिक शक्ति का विकास कर सकता है किन्तु यह अज़ीब प्रकृति का मनुष्य होता है। यह आरामपसन्द, निर्दयी, कठोर और प्रसिद्धि का इच्छुक होता है। यह एकान्त पसन्द करता है और एकान्त में बैठकर सोचने वाला और अकेला मनोरञ्जन करने वाला होता है।

यह आत्मविश्वासी होता है। इसका आत्मविश्वास और मन की एकाग्रता ही इसके जीवन का एक रहस्य है और यह क्लबों, सोसाइटियों, ऐसोसियेशनों में घूमना अधिक पसन्द करता है! यह प्रगतिशील विचारों का और राजनैतिक में भाग लेने वाला होता है। इसे प्राकृतिक दृश्यों को देखने का बहुत चाव होता है। यह किसी भी संस्था का संस्थापक अथवा प्रमुख बनने की शक्ति वाला होता है। यह कितने ही आदमियों के बीच में.

बैठा हुआ भी अपने को अकेला ही अनुभव करता है, फिर भी क्लब इत्यादियों में जाना पसन्द करता है। यह वादविवाद में सर्वदा दूसरों से विपरीत ही बोलने का आदी होता है, किन्तु फिर भी बड़े अच्छे ढंग से अपनी बात को वैज्ञानिकों और आविष्कारकों की तरह नूतन आवरण देकर समझाता है और कभी कभी यही विपरीतता इसके कई शत्रु बना देती है, यद्यपि इसकी कोई कलह-कंकास करने की रुचि नहीं होती है, किन्तु इसे समझने में गल्ती खाजाते हैं। शत्रुओं को भी इसकी सराहना तो करनी पड़ती है, किन्तु वे इसको हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करते ही रहते हैं। यह कई वार तो पुराने नियमों को रद्द कर देता है या उनकी पर्वाह ही नहीं करता है और अपने नये नियम घड़ लेता है और सबको वैसा ही करते देखना चाहता है।

यह बहुत ही अच्छी समझ शक्ति वाला, दूसरों पर सहानुभूति करने वाला और दूसरों के दुःख से दुःखी भी होने वाला होता है। यह वादविवाद और तर्क-वितर्क करने में निपुण और सफल होता है। यह यदि जनता के लाभार्थ कोई कार्य करे तो एक सफल कार्यकर्ता बन सकता है। यह व्यापार में और आर्थिक दृष्टि से अच्छा होता है।

भाग्य :—इसका भाग्य प्रायः दूसरों पर निर्भर होता है। ३५ वर्ष से पूर्व तक यह अपने विचारों में अस्थिर रहता है और इसके जीवन के २५ वें और ३० वें, ३१ वें, ४१ वें और ४२ वें वर्षों में मुख्य परिवर्तन होता है। ४ थे, ८ वें, १२ वें, १६ वें, २० वें, २४ वें, २८ वें, ३२ वें, ३६ वें, ४० वें, ४४ वें, ४८ वें, ५२ वें, ५६ वें, ६० वें वर्षों में भी कुछ

विशेष घटनायें देखने में आवेंगी। १३ वें, २२ वें, ४९ वें, ३१ वें, ५८ वें और ६७ वें वर्षों में थोड़ा कष्ट होगा। इसका भाग्य प्रायः अच्छे मित्रों द्वारा ही चमकता है, फिर भी यह कोई इतना भाग्यशाली नहीं होता।

इसके लिये सप्ताह में सोमवार, शुक्रवार और शनिवार के दिन अच्छे होते हैं और यदि ये दिन ४, १३ या २२ या ३१ तिथियों में पड़े तो वह दिन और भी भाग्यशाली होता है। इसका मित्र अंक १ है अतः १, १०, १९, २८ तिथियों में भी यदि ये वार पड़ें तो भी अच्छा होगा। इसे अपने पहनने के कपड़े, घरके पर्दों, मेजपोष, चादर इत्यादियों में जामुनी, बिजली रंग, श्वेत-नीले का मिश्रण, श्वेत-भूरे का मिश्रण का उपयोग करना चाहिये। इससे इसके स्वास्थ्य, मन और भाग्य पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग, १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर तक लगभग और १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग का समय किसी भी वर्ष में इसके लिये शुभदायक होंगे। इसको अपना भाग्य चमकाने के लिये कठिन परिश्रम और अच्छा मित्र ढूंढना अत्यावश्यक है। इसका भाग्यशाली अंक ४ है। इसका कमाया हुआ धन प्रायः दूसरों के ही कार्यों में लगता है। इसे अंगुठी या हार में हीरा या नीलम का उपयोग करना चाहिये।

स्वास्थ्य:—यह रुधिराभिस्सरण, पाचनशक्ति की कमी, घुटनों के दर्द, पांव और गिट्टों के दर्द, हृदय के किसी रोग से, मस्तिष्क के किसी रोग से रोगी होता है। यह बहुत सोचने वाला होता है इसी से मानसिक चिन्तायें इसे घेरी रहती हैं और शारीरिक बिमारियां भी अधिक रहती हैं। यह पेट की किसी बिमारी से, दांतों के दुर्घटना से, आंखों की निर्बलता से,

अण्डकोष, पांव पर सूजन, पीलीया, दुर्घटनाओं से इसे कष्ट रहते हैं। इसे कमर दर्द और सिर दर्द भी हो सकता है। हो सकता है कि पथरी की बिमारी से भी पीडित हो अतः इसे अपने स्वास्थ्य में खूब ध्यान रखना चाहिये। इसके लिये २८ दिसम्बर से २७ फरवरी तक लगभग, ३० जून से ३१ सैप्टेम्बर तक लगभग के दिन थोडे सावधानी रखने वाले होंगे अन्यथा इसी समय में रोग से पीड़ित होगा।

यदि धनिष्टा नक्षत्र में कोई उत्पन्न हो तो उसे रोगों में नेट्रम सल्फरिकम नामक नमक लेना चाहिये।

यदि शतभिषा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न हो तो उसे नेट्रममूसे और काली फोस्फोटिकम नामक नमक का किसी अच्छे डाक्टर की मन्त्रणा लेकर उपयोग करना चाहिये।

इस समय में उत्पन्न मनुष्यों को वास्तव में दवाईयां इत्यादि लेने की अपेक्षा उपवास अधिक लाभदायक रहेगा। उन्हें मांस-मदिरा-धूम्रपान तो विशेषतया हानिकर है। अपनी मानसिक प्रवृत्ति को काबू में रखना और आनन्द में रहना अत्यावश्यक है। इन्हें हरे शाक, गाजरे, पालक इत्यादि का अधिक उपयोग करना चाहिये।

जीवन साधनः—यह विद्युत् इञ्जिनियर, वायरलैस के कार्य में, वायुयान के किसी कार्य में, टेलिग्राफ, रेलवे अथवा टेलीफोन के किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। यह नृत्यकलाविज्ञ, संगीतज्ञ, मखौलिया, रंगभूमि का कलाकार भी बन सकता है। यह राजनैतिक कार्यों में, रेडियो और विद्युत् के कार्यों में भी काम कर सकता है। यह वकील

और किसी भी मानसिक शक्ति के कार्य में भी सफलता प्राप्त कर सकता है। यह तर्कवादी और जनता के लाभार्थ किसी भी कार्य में सफल कार्यकर्ता बन सकता है। यह एक आविष्कारक भी बन सकता है।

मित्र:—इसके मित्र तो बहुत से होते हैं, किन्तु सच्चे मित्र तो बहुत ही कम होते हैं। इसका भाग्य प्रायः अच्छे मित्रों द्वारा ही चमकता है। तर्क-वितर्क ही इसके शत्रु बनाते हैं। इसे लगभग ३० वर्ष तक तो अपने मित्र ढूंढने में बहुत ही सावधानी रखनी चाहिये अन्यथा बुरी संगत में पड़ने का भय रहेगा। इसकी मित्रता १, १०, १९, २८, २, ११, २०, २८, ७, १६, २५ तिथियों में उत्पन्न मनुष्यों से हो सकती है। १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग, १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग, १५ अगस्त से १४ सेप्टेम्बर तक लगभग के समय में उत्पन्न मनुष्य से भी मित्रता हो सकती है।

पाणिग्रहण:—इसकी गृहस्थी सुखमय व्यतीत होती है और औरतों की संगति का अधिक प्रेमी होता है। अतः किसी से भी विवाह करके सुखी रह सकता है। यह जरा से दुःख से दुःखित हो जाता है और यदि गृहस्थ जीवन में कोई अधिक दिल को चोट लगने वाली बात हो जाय तो यह कभी कभी अपने को सम्भालने में भी असफल हो जाता है और दुःखी जीवन व्यतीत करने का भय हो जाता है अतः दोनों वर-वधू को मेरा उपदेश है कि ऐसे कठिन समय में श्रद्धा और धैर्य से काम लेना चाहिये। इस समय में उत्पन्न मनुष्य की थोड़ी प्रशंसा कर दी जाय तो यह कई बार तो असाधारण कार्य भी करके दूसरों को आश्चर्यान्वित कर देता है और

गृहस्थी जीवन में वर-वधू को इस प्रशंसा के पुट की आवश्यकता समझ कर समय २ पर इस मार्ग का भी आश्रय लेना चाहिये और परस्पर दुःख में प्रेम से काम करना चाहिये। यदि समय समय पर प्रशंसा का या उत्साह का पुट नहीं चढ़ाया गया तो यह सर्वसाधारण की तरह ही रह जायेगा और इसकी सब उच्च अभिलाषायें और आशायें निराशा में परिणत हो जायेंगी और हो सकता है कि बुरी संगत में पड़ जाय। इसके आदर्शों को उत्साह, प्रशंसा और प्रेम की आवश्यकता है। इसमें एक तरह की दिव्य-शक्ति होती है अतः इसे उस दिव्यशक्ति को विकसित करने के लिये हमेशा उत्साहित करना ही चाहिये। हो सकता है कि इसकी सन्तानों में से किसी की मृत्यु हो जाय।

फिर भी इसे अपनी गृहस्थी को स्वर्गमय बनाने के हेतु १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग, १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर तक लगभग, अथवा १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग के मध्य में उत्पन्न कन्या से विवाह करे तो बहुत ही शुभदायक परिणाम दृष्टिगोचर होगा। इसका भाग्यशाली अंक ४ होने से यह ४, १३, २२, ३१ अथवा मित्र अंक (संख्या) १, १०, १९, २८, २, ११, २०, २९, ७, १६, २५ तिथियों में उत्पन्न व्यक्ति से (युवक हो तो कन्या से और कन्या हो तो युवक से) विवाह करके सुखी हो सकता है।

यदि युवक या युवती कुम्भ राशि में उत्पन्न हों तो उन्हें ऐसे से पाणिग्रहण करना चाहियें जो कि जब कि शुक्र—ज्येष्ठा, रेवती या अश्लेषा नक्षत्र में हो। अथवा शनि—अश्विनी, अश्लेषा, ज्येष्ठा, मघा, मूल या

रेवती नक्षत्र में हों। या बुध—पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा या भरणी नक्षत्र में हो तो उनकी गृहस्थी सुखमय, सन्ततियुक्त, श्रद्धा, प्रेम और उत्साहपूर्ण व्यतीत होगी। यदि कन्या १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग के समय में उत्पन्न हो तो वह ऐसे युवक से भी प्रणय कर सकती है जो कि जब कि चन्द्रमा मिथुन (मृगशिरा, आर्द्रा या पुनर्वसु), सिंह (मघा, पूर्वाभाद्रपद या उत्तरा), तुला (चित्रा, स्वाती, या विशाखा), कन्या (उत्तरा, हस्त, या चित्रा) राशि में हो, उत्पन्न हो तो गृहस्थी आनन्द और उत्साह से परिपूर्ण होगी। इसकी सन्तान भी बुद्धिमान्, चपल, सुन्दर और सुख देने वाली होती है।

4 चतुर्थ अध्याय

१५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग

हिन्दी मासः—चैत्र

यदि कोई मनुष्य इस समय में उत्पन्न हो तो वह गुरु और नेपच्यून ग्रह और मीनराशि के प्रभाव वाला होता है। इसके प्रकृति-स्वभाव, मन इत्यादि पर इन्हीं का प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

स्वभाव:—यह उत्तम कर्म करने वाला, विद्याभ्यासी, बुद्धिमान्, योग्य, नम्र, भोगी, मिष्टान्न भोजन का प्रेमी, सज्जन, मित्रों में पूजनीय, उच्च आशाओं वाला, उच्च पदवी की आकांक्षा वाला, उच्च पदवी और उपाधियाँ प्राप्त करने वाला, विचित्र विचारों वाला, क्रय-विक्रय आदि के कार्यों से धन कमाने वाला, कुटुम्बीजनों से सुखी, गुप्त बातों और कार्यों से भयभीत होने वाला, सुजनता से सबको सहायता करने वाला, मोती इत्यादि का व्यापार करने वाला, शान्ति का इच्छुक, धनी, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, औरतों द्वारा प्रेम संपादन करने वाला, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, अद्भुत, सहायक, सहानुभूति दर्शाने वाला और पानी से बनी हुई अथवा पानी में काम आने वाली वस्तुओं का व्यापार करने वाला होता है अथवा पानी में काम आने वाली वस्तुओं पर कार्य करने वाला होता है।

यह यात्रा का बहुत शौकीन होता है। यह पानी और पृथ्वी पर की यात्रा करनेका अधिक इच्छुक और पसन्द करता है। यह एक अच्छा प्रेतात्माओं से व्यवहार करने में मध्यस्थ बन सकता है और अच्छा भक्त

भी कर सकता है। यह भावनाशील, सन्देहात्मक विचारों का, अद्भुत और अस्थिर विचारों का होता है, इसीलिये प्रायः व्यापार में खोट करवा देता है। यह हिप्नोटिज्म, मैस्मेरिज्म के साहित्यों को पढ़ने का बहुत शौकीन होता है और इसका दिव्यज्ञान प्राप्त करने के लिये अधिक झुकाव होता है। यह दयालु प्रकृति, चञ्चल, कामी और स्वभाव में दो मिश्रणों वाला होता है, अर्थात् यह द्विस्वभावी होता है अतः इसे पहचानना कठिन हो जाता है।

यह प्रतिज्ञा का पक्का नहीं होता और प्रायः सबको अपने विपरीत ही मानता है और थोड़ा वहमी विचारों का होता है। यह आर्थिक दृष्टि से कोई भाग्यशाली नहीं होता, और इसलिये थोड़ा चिन्तित रहता है। यह उत्तरदायित्व वाले कार्यों में अच्छी तरह से सफलता प्राप्त कर सकता है। यह कलाप्रेमी और संगीतप्रेमी होता है। इसे अपना भाग्य चमकाने के लिये काफी ऊँचाव-निचाव अथवा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके मित्र भी काफी होते हैं। यह किसी अज्ञात वस्तु को अन्वेषण करने का इच्छुक होता है। यदि यह प्रयास करे तो इसकी इच्छाशक्ति अत्यन्त प्रबल हो सकती है। यह जीवन के प्रत्येक पहलू को देखकर उसकी गहराई में जाने वाला होता है और प्रत्यक कार्य को करने से पूर्व उसके दोनों पहलू (अन्धकार और चमक अथवा हानि और लाभ) का अच्छी प्रकार से अवलोकन करता है।

इसको पानी के द्वारा [illegible]गार से और दूसरे देशों के साथ व्यापार से लाभ होता है। यह [illegible] अथिति सत्कार करने वाला, सहानुभूति करने

वाला, किसी को दुःखी देखकर सहायता करने वाला, रोग में दूसरों की सेवा करने वाला होता है। यह अपने और प्रसिद्धि का इच्छुक होता है, किन्तु यह समझ नहीं पाता कि किस विधि से प्रसिद्धि मिलेगी। यह शीघ्र ही सोच कर शीघ्र ही उस कार्य को करने में तत्पर हो जाता है, इसीलिये इसको कई बार समझना कठि. हो जाता है। भाग्य को चमकाने के लिये इसको आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चयता और धार्मिक विचारों की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके १४ वें, २१ वें, २५ वें, ३१ वें, २८ वें ३५ वें, ४१ वें और ५० वें वर्षों में विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर होगा।

यह उच्च आशाओं और आकांक्षाओं वाला और किसी के नीचे रह कर कार्य करने में अपमान समझने वाला होता है। यह सर्वदा अपने को प्रत्येक स्थान पर उच्च अथवा प्रमुख बनता देखना चाहता है और संसार में एक महत्वपूर्ण कार्य करने की आकांक्षा वाला होता है। यह नियन्त्रण को मानने वाला होता है और दूसरों को भी नियन्त्रण में रहना देखना चाहता है और दूसरों पर आज्ञा चलाने का शौकीन होता है। यह प्रत्येक स्थान पर अपने विचार और आज्ञा को मनवाना चाहता है। यही कारण है कि इसके कई शत्रु हो जाते हैं। यह दूसरों की सहायता करने में अपने को खुश मानता है, किन्तु यदि कोई इसकी सहायता करे तो यह एक तरह का अपने को ऋणी मान बैठता है और इसे वास्तव में दूसरों की सहायता लेना पसन्द भी नहीं पड़ता।

यह जिससे प्रेम करता है उसे पूर्णरूप से निभाने का प्रयास करता है और उसी के प्रभाव से प्रभावित रहता है। इसे यदि कार्य करने का अवसर

मिले तो यह अपनी दक्षता और निपुणता दिखा सकता है, किन्तु इसे अपने स्वतन्त्र विचारों में दूसरों का आना खटकता है। यद्यपि यह पैसा कमाता भी बहुत है और व्यय भी बहुत करता है और थोड़ा पैसे के लिये चिन्तित भी रहता है, किन्तु फिर भी पैसे की इतनी पर्वाह नहीं करता और अन्धाधुंध व्यय करता रहता है। यह एक अच्छा कलाकार या चित्रकार या सङ्गीतज्ञ या नृत्यकार बन सकता है, किन्तु इसे उत्तेजना और उत्साह देने वाला चाहिये और यह एक अच्छा सफल कार्यकर्ता और अन्वेषणकर्ता और प्रेतात्मविद्याविज्ञ हो सकता है।

भाग्यः—इसे भाग्य को चमकाने के लिये काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा और इसे कई बार अदृश्य रुकावटों का सामना करना पड़ता है। इसे अपना भाग्य चमकाने के लिये उत्तेजन और उत्साह की आवश्यकता है अतः इसके मित्रों और जीवनसाथी को चाहिये कि इसको सर्वदा उत्तेजना देते रहें और आप इसका परिणाम अत्यन्त आश्चर्यकारक देखेंगे। इससे यह अपनी आकांक्षाओं और आशाओं को आसानी से फलीभूत कर सकता है। दूसरों का आश्रय ही प्रायः इसे उच्च कोटि अथवा उत्तालशिखर पर चढ़ाता है। इसका दिव्य स्वभाव, अद्भुत विचार, वहमी स्वभाव और सबको अपने विरुद्ध मानने वाला स्वभाव ही कई बार निराशा का आवरण पहना देता है और ऊपर उठने में असमर्थ बना देता है अतः इसे ऐसे विपरीत विचारों को निकाल बाहर फेंक देना चाहिये।

इसका भाग्यशाली अंक ३ है। इसे अपने सम्पूर्ण कार्य ३, १२, २१, ३० तिथियों में करने चाहिये और यदि इन तिथियों पर गुरुवार

मंगलवार और शुक्रवार आये तो वह दिन और भी भाग्यशाली होगा। इसके मित्र अंक ६, ९, १५, १८, २४, २७, भी बहुत अच्छे हैं। इसके लिये किसी भी वर्ष में १५ मार्च से १४ ऐप्रिल तक लगभग, १५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग, १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक लगभग, और १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग के दिन अच्छे रहेंगे और यह इस समय अपना भाग्य चमका सकता है। इस समय में आने वाले स्वर्ण अवसरों को हाथ से न जाने देना, अन्यथा पछताना पड़ेगा।

इसके लिये नीले, पीले, जामुनी रंग अत्यन्त लाभकारी हैं और इसे अपने पहनने के कपड़ों, घर के पर्दों, चादरों, मेजपोशों, गुलदस्तों इत्यादियों में इन्हीं रंगों का उपयोग करना चाहिये। इसे अपने गहनों (अंगुठी, हार इत्यादियों) में मोती, चन्द्रनग, नीलवर्ण नग, या दूधिया पत्थर का उपयोग करना चाहिये। इससे इसके भाग्य में आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा। इसके स्वास्थ्य और मन पर भी शुभ प्रभाव पड़ेगा और सुख प्रतीत होगा।

इसके जीवन में ३ सरे, ९ वें, १२ वें, ६ ठे, १४ वें, १५ वें, १८ वें, २१ वें, २५ वें, २८ वें, २७ वें, २४ वें, ३० वें, ३१ वें, ३५ वें, ३३ वें, ३६ वें, ३९ वें, ४२ वें, ४१ वें, ४५ वें, ४८ वें, ५४ वें, ५१ वें, ५० वें, ५७ वें, ६० वें, ६३ वें, ६६ वें वर्षों में इसे विचित्र और अजीब गरीबी अनुभव होंगे। ३ सरे, १२ वें, २१ वें, ३० वें, ३९ वें, ४८ वें, ५७ वें, ६६ वें और ७५ वें वर्षों में इसे थोड़ा कष्ट होता है।

इसे अपने भाग्य को बनाने के लिये अपने विचारों को बदल देना चाहिये और सर्वदा अपने मन में यही धारणा रक्खे मैं इस कार्य को अच्छी

तरह से कर सकता हूँ। मेरे में एक अद्भुत शक्ति है जिससे कि मैं कठिन से कठिन कार्यों को भी कर सकता हूँ। मेरे में एक अद्भुत शक्ति का प्रवाह हमेशा प्रवाहित हो रहा है; किन्तु घमण्ड में ऐसा न सोचना। थोड़े समय में एक चमत्कारिक प्रभाव इस विचार विनिमय का इसके ऊपर पड़ना प्रारम्भ हो जायेगा और शनैः २ यह उच्च शिखरावरोह करने लगेगा और इसके लिये यही एक रहस्य है जिससे कि निराशारूपी भयंकर तरंगों से निकल कर आरूढ़ हो सके और सफलता का आलिङ्गन कर सके। इसी को सब कठिनाइयों की कुञ्जी मानना।

स्वास्थ्य :—यह प्रायः शारीरिक दर्दों से, रुधिराभिस्सरण, पांव या गिट्टों में चोट लगने से, मानसिक चिन्ता से रोगी होता है। यह निर्बल होता है और खून की खराबी से, जोड़ों के दर्दों से, शरीर के किसी नीचे के भाग की बिमारी से, वहमी विचारों से, नख सम्बन्धी रोग से, अधिक काम करने से, शरीर के चमड़े की बिमारी से, कमर के दर्द से अथवा कमर पर के गठिये की तरह की किसी बिमारी से यह पीड़ित होता है।

इसे अपनी खुराक में अंगूर, सेव, अंजीर, गेहूँ, बादाम, जायफल इत्यादि का प्रचुर मात्रा में उपयोग करना चाहिये। इसे २५ नवम्बर से ३१ दिसम्बर तक लगभग, २५ जनवरी से २४ फरवरी तक लगभग, २० मई से २० जून तक लगभग, १८ अगस्त से २८ सैप्टेम्बर तक लगभग का समय प्रत्येक वर्ष में थोड़ी सावधानी रखनी चाहिये।

यदि कोई पूर्वाभाद्रपद में उत्पन्न हो तो उसे कल्केरिया फोस्फोरिका नामक नमक रोग के निदान के लिये किसी अच्छे डाक्टर से सलाह लेकर लेना चाहिये।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न हो तो उसे नेट्रम सल्फरिकम नामक नमक लेना चाहिये।

रेवती नक्षत्र में उत्पन्न हो तो काली मुटियाटिकम नामक नमक लेना लाभदायक रहेगा।

मित्रः—यह अस्थिर विचारों वाला होता है अतः इसके कोई अच्छे मित्र नहीं बन पाते, किन्तु फिर भी इसके बहुत से मित्र होते हैं। इसकी मित्रता १५ सैप्टेम्बर से १४ अक्तूबर तक लगभग, १५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग, १५ मार्च से १८ ऐप्रिल तक लगभग, १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक लगभग, और १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग के समय में उत्पन्न मनुष्य से हो सकती है। ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तिथियों में चाहे वह किसी भी मास की ही क्यों न हो उत्पन्न हो तो भी मित्रता हो सकती है। कर्क, मीन, सिंह, वृश्चिक राशि में उत्पन्न मनुष्य से भी इसकी मित्रता हो सकती है।

जीवन साधनः—यह पानी के जहाज में कैप्टिन, मल्लाह, इञ्जीनियर इत्यादि का कार्य कर सकता है। यह नर्स, कम्पाउण्डर, डाक्टर, जेल के किसी काम, पानी के किसी भी काम में और किसी भी सार्वजनिक संस्था

में कार्य कर सकता है। यह दिव्यज्ञान को विकसित करके मध्यस्थ का भी कार्य कर सकता है। अपने जीवन को बनाने के लिये इसे आत्मविश्वास, दृढ़निश्चय की अत्यन्त आवश्यकता है और विपरीत विचारों को दूर निकाल कर फेंक देना चाहिये। यह एक आविष्कारक, संगीतज्ञ, नृत्यकार, चित्रकार, कलाकार भी बन सकता है। इसे उत्तेजना और उत्साहित करने वाला चाहिये ताकि यह उच्च शिखर पर पहुँच कर कुछ कर सके।

पाणिग्रहण:—हिचकिचाने का स्वभाव और अस्थिर विचार इसकी गृहस्थी में सुख नहीं लाने देते। अतः इस तरह के विपरीत विचारों को दूर करके गृहस्थ जीवन में श्रद्धा, प्रेम और धैर्य से काम लेना इसके लिये श्रेयस्कर होगा। इसकी गृहस्थी कोई सुखमय नहीं होती किन्तु यदि यह ऐसी कन्या से प्रणय करे जो कि १५ फरवरी से १४ ऐप्रिल तक लगभग, १५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग, १५ सैप्टेम्बर से १४ अक्तूबर तक लगभग के मध्य में उत्पन्न हो तो गृहस्थी जीवन सुखमय व्यतीत होगा। इसका भाग्यशाली अंक ३ होने से ये (कन्या या युवक) ऐसे का पाणिग्रहण कर सकते हैं जो कि ३, १२, २१, या ३० तिथि को (किसी भी मास की) उत्पन्न हों।

यदि कन्या १५ मार्च से १४ ऐप्रिल तक लगभग के समय में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे युवक का पाणिग्रहण करना चाहिये जो कि जब कि चन्द्रमा कर्क, सिंह, मीन, वृश्चिक राशि अथवा पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद,

उत्तरभाद्रपद या रेवती नक्षत्र में हो, उत्पन्न हो तो गृहस्थी सुखमय और सन्तति युक्त होगी।

यदि यह मीन राशि में उत्पन्न हो तो इसे ऐसे से (कन्या हो तो युवक से और युवक हो तो कन्या से) प्रणय करना चाहिये जो कि जब कि बुध-पुनर्वसु, विशाखा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो। या चन्द्र या गुरु रोहिणी, हस्त, पुनर्वसू , विशाखा, श्रवणा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो, उत्पन्न हो तो गृहस्थ जीवन आनन्ददायक और उल्लासमय व्यतीत होगा।

5 पञ्चम अध्याय

१५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग

हिन्दी मासः—वैशाख

यदि कोई इस समय के बीच के दिनों में उत्पन्न हो तो वह मंगल ग्रह और मेष राशि के प्रभाव वाला होता है। यह चर राशि है और अग्नितत्त्व वाली है।

स्वभावः—यदि कुछ शब्दों में कहूं तो इस समय में पैदा होने वाला कार्यशील, साहसी, रोमाञ्चक, परिश्रमी और स्वतन्त्र विचारों का होता है। यह अपने कार्य में किसी का रोड़ा अटकाना बिल्कुल पसन्द नहीं करता। यह प्रत्येक स्थान पर सुधार चाहने वाला होता है। यह अस्थिर विचार का होता है। यह परिवर्तनशील जीवन का चाहक है। यह एक स्थान पर स्थिर रहना नहीं चाहता। इसे प्रत्येक कार्य में प्रमुख पद पर कार्य करना पसन्द है। यह किसी के नीचे रहकर कार्य करना नहीं चाहता। यह हिम्मती और जोशीला होता है। यह बड़ी बड़ी आशाओं वाला होता है, किन्तु यह स्वयं किसी भी विचार को कार्यरूप में परिणत करने में असमर्थ होता है और यह चाहता है कि कोई दूसरा मेरे कार्य को कर देवे। यह विचारशील, काल्पनिक, बुद्धिमान, झगड़ालू, क्रोधी, शीघ्र जोश में आ जाने वाला, अस्थिर और परिवर्तनशील होता है।

यह साहसी, रक्त पित्त विकार से युक्त शरीर वाला, राजाओं के समान आनन्द उपभोग करने वाला, बुद्धिमान, तेजस्वी, उत्तम लक्षणों से युक्त,

पुण्य और गुणों का अन्वेषण करने वाला, बली, देव-ब्राह्मणों में भक्ति रखने वाला, कामी, दीर्घायु, तृषार्त और बन्धु-बान्धवों के सुख से युक्त होता है।

यदि स्वतन्त्रता से कार्य करे तो यह एक अच्छा कार्यकर्ता हो सकता है। यह अस्थिर स्वभाव के होने से इतना फुर्तीला नहीं होता। यह तीव्र मस्तिष्क शक्ति वाला, बातचीत इत्यादि में शीघ्रता करने वाला होता है, किन्तु किसी का व्यंग और तर्क-वितर्क सहन नहीं करता। यह दृढ़ इच्छाशक्ति वाला होता है। यह अपनी गृहस्थी जीवन में अप्रसन्न रहता है। इसे खुशामद करवाना बहुत पसन्द है। यही कारण है कि यह खुशामदी टट्टुओं के बहकावे में बहुत शीघ्र आ जाता है। यह सहानुभूति दिखाने वाला होता है। यह विचारों में और कार्यों में शीघ्रता करने वाला होता है। यह अपनी पत्नी को इन्हीं कारणों से अच्छी तरह से नहीं समझ पाता। यह प्रत्येक स्थान पर अथवा कार्य में अपने श्रेष्टतम और उच्च बनना देखना चाहता है चाहे वह घर हो या व्यापार हो अथवा आफिस हो।

प्रायः इसे दुर्घटनायें, चोटें, हाथ-पांव इत्यादि का कटना होता ही रहता है क्योंकि यह लापरवाह होता है। क्रोधी होने से छोटी छोटी बातों पर भी लड़ने लगता है, और क्रोध में न बोलने वाले शब्द भी बोल जाता है।

यह अपने जीवन में, व्यापार में अथवा आफिस में अपने विचारों के अनुसार ही कार्य करना चाहता है और यदि कोई इसके कार्य में आकर रुकावटें डाले तो इसे बहुत बुरा लगता है। इसे किसी का नौकर अथवा

गुलाम या परतन्त्रता में रहकर कार्य करना बिल्कुल पसन्द नहीं है क्योंकि यह अग्रिणी बनने का चाहक है। यह हिम्मतवान, शारीरिक और मानसिक शक्ति का विकास करना चाहता है और मानसिक विचारों में भ्रमण करने वाला होता है। यह एक स्थान पर टिक कर कार्य नहीं कर सकता इसलिये इसे किसी कार्य में सफलता भी नहीं प्राप्त होती।

भाग्यः— अपना भाग्य चमकाने के लिये बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इसे अपने भाग्य चमकाने के लिये बहुत से स्वर्णावसर मिलते हैं, किन्तु अस्थिर विचार और एक स्थान पर टिक कर काम न करने के स्वभाववाला होने से अपना भविष्य खराब कर देता है। और यही कारण है कि किसी कार्य में सफलता भी नहीं प्राप्त कर सकता। हाँ! यदि इसे स्वतन्त्रता से किसी कार्य को करने दिया जाय तो और कोई उसके कार्य में रुकावट और माथापच्ची न करे तो यह एक सफल कार्यकर्ता बन सकता है और उस कार्य को बुद्धिमत्ता से करके चमक जाता है। यदि किसी कार्य को करना हो तो इसके लिये ९, १८ और २६ किसी भी इंग्लिश मास की तिथियाँ शुभ हैं। मंगलवार के दिन कार्य प्रारम्भ करना भी लाभदायक होगा और यदि यह वार ऊपर कहीं तिथियों में हो तो और भी शुभदायक है। इसका भाग्यशाली अंक ९ है।

स्वास्थ्यः—सिरदर्द, दांतों में दर्द, आंखों की खराबी, मस्तिष्क की खराबी, कान में दर्द अथवा कान की कोई दूसरी खराबी, नस सम्बन्धी खराबी होने का भय होता है। दुर्घटनायें होने का भी भय रहता है। इसे अपना स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिये पहाड़ों पर सैर, अच्छी नींद और पूर्ण आराम की अत्यन्त आवश्यकता है।

यदि कोई मनुष्य अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो तो उसे रोगों में मैग्नेशिया फोस्फोरिका नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि भरणी नक्षत्र में उत्पन्न हो तो फेरम फोस्फोरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि कृत्तिका में हो तो काली मुरियाटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। इसे काली मिर्च, अद्रक, लहसुन, प्याज इत्यादि का प्रचुर मात्रा में उपयोग करना चाहिये। २५ मार्च से २४ मई तक लगभग, २५ सैप्टेम्बर से २४ नवम्बर तक लगभग का समय स्वास्थ्य के लिये थोड़ा खराब होने से सावधानी रखना आवश्यक है। ९ वां, १८ वां, २७ वां, ३६ वां, ४५ वां, ५४ वां, ६३ वां, ७२ वां, ५५ वां वर्ष जरा कष्ट वाले हैं।

मित्र:—जल्दीबाजी, गुस्सा और स्वतन्त्र विचार किसी को अच्छा मित्र नहीं बनने देता। यदि यह १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर, १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर और १५ दिसम्बर से २४ जनवरी तक लगभग के बीच में उत्पन्न मनुष्य से मित्रता करे तो अच्छा मित्र मिलने की अधिक सम्भावना रहेगी अथवा ९, १८ और २६ तिथियों में उत्पन्न मनुष्य से भी अच्छी मित्रता हो सकती है।

जीवनसाधन:—यह किसी भी जिम्मेदारी वाले कार्य पर चमक सकता है। यह मैनेजर, निरीक्षक, प्रबन्धक, संस्थापक, लेखक, तर्कवादी, व्यापार में प्रमुख पद पर, प्रोफेसर, मास्टर, संचालक, विज्ञापन करने के कार्यों में एक प्रसिद्ध कार्यकर्ता हो सकता है। अभिप्राय यह है कि जहाँ इसे स्वतन्त्रता से कार्य करना मिलेगा उधर चमक जायेगा अन्यथा नहीं।

इसके लिये सोमवार, मंगलवार, गुरुवार और रविवार के दिन प्रत्येक सप्ताह में अच्छे हैं। रोहिणी, हस्त, श्रवणा, उत्तराभाद्रपद और उत्तराषाढ़ नक्षत्र प्रत्येक कार्य में शुभ हैं और कर्क, सिंह और धन राशि लग्न में हो तो जिसका मेष राशि लग्न हो उसके लिये लाभदायक है।

यह अच्छे व्यक्तित्व वाला और आकर्षक होता है। इसके पास धन भी काफी आता है। यह प्रायः गवर्नमेन्ट की नौकरी करना अधिक पसन्द करता है।

विवाहः—स्वतन्त्रता, अस्थिरता, क्रोध, तर्क-वितर्क इसका गृहस्थी जीवन खराब कर देता है, अत एव इसे इन विचारों को निकाल कर ही गृहस्थी जीवन में प्रविष्ट होना चाहिये, अन्यथा दुःखमय जीवन व्यतीत करना पड़ेगा, गृहस्थी में शान्ति और धैर्य की आवश्यकता होगी, फिर भी यदि यह १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर तक लगभग, १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग, और १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग के बीच में उत्पन्न कन्या से पाणिग्रहण करे तो शुभदायक होगा और गृहस्थ जीवन सुखमय व्यतीत होगा। यदि मेष लग्न हो तो कर्क, सिंह, और धन राशि के लग्नवाली कन्या से विवाह करे। कन्या जो ऊपर कहे दिनों में (१५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग) के बीच में उत्पन्न हो तो उसे यदि मेष लग्नवाली हो जब कि सूर्य, चन्द्रमा या गुरु कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, रोहिणी, हस्त, श्रवणा, पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों में हो और कोई मनुष्य इस समय में उत्पन्न हो तो कन्या को ऐसे मनुष्य से ही वरना चाहिये और अथवा शुक्र रोहिणी, हस्त अथवा श्रवणा नक्षत्र

में उत्पन्न हो तो भी विवाह करना शुभ है। यदि चन्द्रमा मेष (अश्विनी, भरणी, कृत्तिका), सिंह (मघा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद) अथवा धन (मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा) राशियों में हो और ऐसे समय में यदि कोई मनुष्य उत्पन्न हो तो स कन्या को ऐसे मनुष्य से ही विवाह करना चाहिये। अथवा ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७ और ३० इंग्लिश की किसी भी तिथि में उत्पन्न हो तो भी विवाह किया जा सकता है।

विशेष बातें:—प्रत्येक १५ वर्ष के उपरान्त यह अपने जीवन में परिवर्तन देखेगा। १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग, १५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग और १५ अगस्त से १४ सैप्टेम्बर तक लगभग और १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग के दिन प्रत्येक वर्ष में अच्छे रहेंगे।

लाल रंग के कपड़े, पर्दे, गुलदस्ते, चादरें इत्यादि घरों में उपयोग करना चाहिये उससे बहुत लाभ होगा।

९, १८ और २७ तिथियां प्रत्येक मास के लिये शुभप्रद हैं और यदि मंगलवार, सोमवार, गुरुवार और रविवार इन तिथियों में आवे और ऐसे समय में कार्य करे तो लाभप्रद होगा। भाग्यशाली नं० ९ है।

इसके लिये अंगूठी अथवा हार में लाल अथवा मूंगा उपयोग में लाना चाहिये इससे भाग्य में काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होगा।

6 षष्ठ अध्याय

१५ मई से १४ जून तक लगभग

हिन्दी मासः—ज्येष्ठ

यदि कोई मनुष्य इस समय के बीच में उत्पन्न हो तो वह शुक्र ग्रह और वृषभ राशि के प्रभाव वाला होगा। यह स्थिर और पृथ्वी के चिह्न वाले हैं।

स्वभाव :—यह धैर्यशाली और सहनशील होता है। यह अपने विचारों को बदलने में थोड़ा मन्द होता है। यह कुछ पुराने विचारों का होता है। यह किसी भी विचार को मानने में थोड़ी देर लगाता है, यदि उस विचार को मान गया तो शीघ्र बदलता भी नहीं है। यह शान्ति का चाहक होता है। यह किसी बात को एक बार कह कर फिर दुबारा कहना पसन्द नहीं करता। यह कठिनाइयों का बड़ी दृढ़ता से सामना करने वाला होता है। यह आत्मविश्वासी होता है। यह शीघ्र क्रोधित नहीं होता, परन्तु जब क्रोधित होता है तो फिर आगा पीछा कुछ नहीं देखता और उसे शान्त करना भी कठिन हो जाता है। इसकी इच्छाशक्ति बहुत दृढ़ होती है। यह हठी स्वभाव का होता है।

यह क्षमाशील, चञ्चल, विदेशवास में रुचि रखने वाला, तीव्र, विचित्र बुद्धिवाला, कर्म को देर से करने वाला, लोगों में माननीय; सुगन्ध, पुष्प, भोजन, वस्त्र तथा पशुओं के सुख से युक्त और भीरु होता है।

नीला, गुलाबी और हरा रंग इसके लिये शुभ है। यदि यह अपने घर के पर्दों, मेजपोश, पहनने के कपड़ों इत्यादि में इसका उपयोग करे तो बहुत लाभदायक होगा। इन्हीं रंगों के गुलदस्ते बनाकर घर में रखने से भी शान्ति मिलेगी। काला रंग इसके लिये हानिप्रद होगा अतः यह रंग बिल्कुल उपयोग में न लाये। अंगुठी या हार में हीरा लगाकर पहनने से भी भाग्य में काफी परिवर्त्तन होगा।

इसे अपने विवाह में शीघ्रता नहीं करनी चाहिये नहीं तो पछताना पड़ेगा। यह अपने कार्य को करने में बहुत दृढ़ होता है। जिसकी हठ पकड़ लेता है उसे पूर्ण करने पर ही तुल जाता है। यह रोमाञ्चक कार्यों की तरफ अथवा रोमाञ्चक कहानियों का शौकीन होता है। यदि यह धनी हो तो अपने मित्रों को हमेशा खुश करने की कोशिश करेगा। यह कला प्रेमी होता है। यह संगीतप्रेमी और सुन्दर वस्तुओं का चाहक होता है। यह अपने को प्रायः ही समझ पाता है कि इस कार्य को करने का उद्देश्य क्या है। यह हिम्मती, परिश्रमी, दृढ़स्वभाववाला, साहसी, हठी, किसी वस्तु को देखकर उसको सीखने की इच्छा रखने वाला, दिव्यज्ञान, ज्योतिषविद्या, हस्तरेखा विज्ञान, प्रेतात्मविद्या, अध्यात्मविद्या इत्यादि को सीखने की रुचि वाला होता है। यह प्रायः दिया हुआ प्रण भूल जाता है। यह बुद्धिमान् , शीघ्र सोचने वाला, स्वच्छ विचारों का और स्वच्छ हृदय का होता है।

इसकी इच्छाशक्ति, दृढ़ निर्णायक शक्ति, व्यक्तित्व और जोश इसे भाग्य पर विश्वास करने से नहीं रोक सकते। इसी कारण से जो कि दूसरे पहलू के हैं वे सुस्त, अकर्मण्य और नास्तिक बन सकते हैं।

हो सकता है कि पहली सन्तान में यदि कन्या उत्पन्न हो तो मर जाय।

भाग्यः—इसे अपने भाग्य को चमकाने के लिये कई स्वर्णावसर मिलेंगे। इसे अपने भाग्य को चमकाने के लिये और उच्च शिखर पर पहुँचाने के लिये बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। यह पारितोषिक अथवा उपहार भी पा सकता है। इसे लॉटरी इत्यादि का भी शौक होता है। इसे व्यापार या जमीन्दारी के कार्य में से पैसा मिल सकता है। प्रायः आधी आयु के बाद इसे धन मिलता है, फिर भी इसकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। इसका भाग्यशाली अंक ६ है।

इसके जीवन में १२ वां, १८ वां, २४ वां, ३० वां, ३६ वां, ४२ वां, ४८ वां, ५४ वां, ६० वां, ६६ वां, ९ वां, २७ वां, ४५ वां, ६३ वां, ७२ वां, १५ वां, २१ वां, २४ वां, २७ वां, ३१ वां और ४१ वां वर्ष कुछ विशेष महत्वपूर्ण भाग भजेंगे।

स्वास्थ्यः—यह अच्छे स्वास्थ्य का, दृढ़शरीरवाला होता है, फिर भी अधिक खाने से पेट की खराबी का भय रहता है। चिन्ता से, आराम पसन्दगी से अथवा शौकीन विचारों के कारण से भी कष्ट सहन करने पड़ते हैं। इसे अण्डकोष के दर्द, नर्वस (नस सम्बन्धी) खराबी, रुधिराभिस्सरण, दांतों की खराबी, गले की खराबी, टौंसिल इत्यादि, खांसी, जुखाम इत्यादि का भी भय रहता है। इसके नाक में भी किसी तरह की बिमारी के होने का भय रहेगा।

यदि यह कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न हो तो इसे काली मुरियाटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये।

यदि रोहिणी नक्षत्र में हो तो कल्केरिया फ्लुटिका नामक नमक का उपयोग करना चाहिये।

यदि मृगशिरा नक्षत्र में हो तो नैट्रम फोस्फोरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। इसे अपनी खुराक में लोभिया, बादाम, तरबूज, नाश्पाती, अञ्जीर, लोकाट इत्यादि का उपयोग करना चाहिये। इसको २५ एप्रिल से २४ मई तक लगभग, २५ सैप्टेम्बर से २४ नवम्बर तक लगभग के समय में स्वास्थ्य के लिये सावधानी रखना चाहिये।

जीवनसाधन :—यह वकील, डाक्टर, चालाक कलाकार, वक्ता, जनता की रंगभूमिका एक अच्छा वक्ता, स्टॉक एक्स्चेञ्ज (हुण्डी इत्यादि की दलाली का कार्य), कम्पनी प्रोमोटर्स (किसी भी कम्पनी के कार्य के लिये उत्साहित करने वाला) और सरकार के किसी भी विभाग में उत्तरदायित्व वाले पद पर कार्य कर सकता है। यह कर्तव्यशील होता है, अतः यह किसी भी एक कार्य पर लग कर कार्य करे तो उसमें सफल हो सकता है, किन्तु यह तर्क-वितर्क नहीं पसन्द करता। यह पैसा कमाने के नये २ ढंग निकालता है। यह जमीन-जायदाद के कार्यों में भी अच्छा पैसा कमा सकता है। राजनैतिक कार्यों में, विद्यालयों में, विश्वविद्यालयों में अध्यापक अथवा प्रोफेसर इत्यादि का कार्य कर सकता है। यह औषधालय के किसी भी कार्य में लग सकता है। यह कृषिविज्ञान की मशिनरियों

इत्यादि का भी कार्य कर सकता है। नेवी में भी काम कर सकता है। यह लेखक, कवि, ज्योतिष-प्रेतात्मविद्या इत्यादि के कार्यों में भाग ले सकता है।

यह अपने को सच्चा, स्थिर, विश्वासी मानने वाला होता है। यह कामी होता है, परन्तु उसी समय अपनी वासना को रोक भी सकता है। यह अपनी पसन्द और नापसन्दगी में दृढ़ होता है। यह शान्ति का चाहक, कलह-विग्रह और तर्क-वितर्क को नहीं पसन्द करता। यह अपने कार्य में मन्द होता है। यह नये २ तरीके के भोजन खाना पसन्द करता है।

यदि हम इस समय में उत्पन्न मनुष्य का दूसरा पहलू देखें तो यह यदि मध्यम स्थिति का भी हो तो भी धनी लगता है। यह जिसको प्रेम करता है उस पर तन मन धन सब न्योछावर करने को तैय्यार हो जाता है। यह आरामपसन्द, फैशनेबल, मनोरञ्जन को पसन्द करने वाला, मित्रों को खिलाने वाला और स्वयं भी नये २ खाना खाने वाला, पुराने विचारोंवाला, और किसी नये विचार को स्वीकृत करने पर शीघ्रता से नहीं छोड़ता। यह भाग्य को माननेवाला होता है। बुरे मनुष्यों की संगति में आने से भ्रष्ट भी हो सकता है। यह दृढ़ अभिलाषावाला, दृढ़ विचारों का और धन कमाने के नई २ विधियां ढूँढने वाला होता है। यह शराब, मांस खाने की आदत में भी पड़ सकता है। यह निर्मम, निर्दयी, कठोर, ईर्ष्यालु और हत्यारा भी हो सकता है।

यदि यह अपने को सुधार ले तो ईमानदार, अच्छा कार्यकर्ता, अच्छा मित्र, बुद्धिमान्, साहसी, धैर्यशाली, सहनशील, जिम्मेदारी को समझने वाला, परन्तु पुराने विचारों का होता है।

इसे पैदल सफर (यात्रा) अधिक करनी पड़ती है, और पानी की यात्रा भी होती है, यह तीव्र गति के वाहनों का प्रशंसक और चाहक है अतः हो सकता है कि वायुयान में भी यात्रा करे। प्रायः २५–३० वर्ष की आयु के पश्चात् ही यह धनी होता है।

इसके जीवन के १६, २४, ३० और ३३ वां वर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण होंगे। यह प्रत्येक कार्य बड़े लम्बे २ विचारों के बाद बहुत देरी से करता है। इसके ५ वें, २९ वें, ३७ वें, ४५ वें और ५० वें वर्ष में मुख्य घटनायें होती हैं। इसके लिये १५ सैप्टेम्बर से १४ अक्तूबर तक लगभग, १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक लगभग, १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग के दिन किसी भी वर्ष में शुभदायक होंगे। यदि यह अपना प्रत्येक कार्य शुक्रवार, मंगलवार और वीरवार को करे और यदि ये दिन ३, ६, ९, १२, १४, १५, २१, २४, २७ और ३० इंग्लिश के किसी भी मास की तिथियों में पड़े तो बहुत ही शुभ है, विशेषतया यदि ६, १५ और २४ तिथियों में आये तो और भी शुभ होगा। भग्यशाली नम्बर ६ है।

मित्रः—इसके बहुत से मित्र होते हैं। इसके मित्र प्रायः बड़े घरानों से, सभ्यसमाज, जमीनदारों, ताल्लूकेदारों, बैंकरों, पैसा धरनेवालों,

सरकारी ऑफ़िसरों, राजाओं इत्यादि से होती है। फिर भी यह १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग, १५ सैप्टेम्बर से १४ अक्तूबर तक लगभग, अथवा १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक के समय में उत्पन्न से भी मित्रता कर सकता है अथवा ६, १५ और २४ किसी भी मासकी तिथियों में उत्पन्न मनुष्य से भी मित्रता कर सकता है।

पाणिग्रहण:—विवाह इसके लिये एक महत्वपूर्ण विषय है अतः इसे विवाह के लिये शीघ्रता नहीं करनी चाहिये। प्रायः इसकी पहली शादी तो इसी तरह की होती है। यह जिसको जिस तरह से प्रेम करता है, उससे भी उसी तरह का प्रेम चाहता है। यह शान्त, कोमल और प्रेमी स्वभाव का होने से घर में किसी तरह का कलह कंकास नहीं देखना पसन्द करता। इसे अनिच्छित विवाह कदापि नहीं करना चाहिये। इसे विवाह करने से पूर्व अच्छी तरह से सोच-विचार करना चाहिये। फिर भी यदि यह १५ सैप्टेम्बर से १४ अक्तूबर तक लगभग, १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक लगभग, १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग के बीच में उत्पन्न होने वाली कन्या का पाणिग्रहण करे तो इसकी गृहस्थी सुखमय व्यतीत होगी। यदि कोई कन्या १५ मई से १४ जून तक के समय में उत्पन्न हुई हो तो उसे ऐसे वर से वरना चाहिये जो कि जब कि चन्द्रमा-वृष, कन्या, वृश्चिक और मकर राशि में हो, उत्पन्न हो तो दम्पति सुख से गृहस्थी चला सकेंगे।

यदि युवक या युवती वृष राशि में उत्पन्न हों तो उसे ऐसे से विवाह

करना चाहिये जो कि जब कि शुक्र—अश्लेषा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा, या रेवती में हो। या शनि—आर्द्रा, मघा, अश्विनी, शतभिषा या मूल नक्षत्र में हो। या सूर्य-अश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में हो। राहु या बुध—ज्येष्ठा, रेवती या अश्लेषा नक्षत्र में हो तो गृहस्थ जीवन स्वर्गमय व्यतीत होगा।

7 सप्तम अध्याय

१५ जून से १४ जुलाई तक लगभग

हिन्दी मास:—आषाढ़

यदि कोई मनुष्य इस समय में उत्पन्न हो तो उसके आचार-विचार स्वभाव पर बुध ग्रह और मिथुन राशि का प्रभाव पाया जायेगा। मिथुन राशि का चिह्न हवा है और यह द्विस्वभाव और अस्थिर होता है।

स्वभाव:—यह किसी बात पर तब तक विश्वास नहीं करता जब तक कि वह स्वयं अपनी आंखों से न देख ले, अथवा उसे अच्छी तरह से सिद्ध न करके देखे। यह कार्य में, कारण और सिद्धि को देखने वाला होता है। यह बुद्धिमान्, योग्य होता है। यह प्रत्येक बात को बहुत ही बुद्धिमानी से अच्छी तरह साधारण शब्दों में समझाने की शक्ति वाला होता है। यह किसी भी विषय को अपनी बुद्धिमत्ता से शीघ्र ही समझ जाता है। यह कई २ बार दो दो कार्य इकट्ठे करता है। इस प्रकार से मिथुन राशि का द्विस्वभाव होने से यह भी डबल विचारों के आने के कारण एक कार्य को मध्य में ही छोड़ देता है।

यह गणितशास्त्र और कलाओं को जानने वाला, सुन्दर, आश्चर्यकारक वाणी बोलने वाला, प्रसिद्ध, विनयी, नीतिशास्त्र को पढ़ने का इच्छुक, अधिक व्यय करने वाला, बहुत बोलने वाला, स्त्री के समान स्वभाव वाला,

गुरु का प्रिय, मन्दाग्नि वाला, उत्तम कर्म करने वाला और अत्यन्त अभिमानी होता है।

यह बातूनी होता है। यह दूसरों का मनोरञ्जन अपनी चटपटेदार बातों से कर सकता है। यह जब तर्क-वितर्क पर उतरता है तो दूसरी पार्टी को अच्छे या बुरे तरीकों से हराने का प्रयास करता है। यह प्रशंसा का इच्छुक होता है। यदि कोई इसकी प्रशंसा करके कार्य करवाये तो यह शीघ्र ही करने को तैय्यार हो जाता है। यद्यपि यह तीव्र मस्तिष्क शक्ति वाला और प्रत्येक विषय को शीघ्र समझने वाला होता है, फिर भी यदि कोई इसकी प्रशंसा और खुशामद कर दे तो उसकी तरफ होता जाता है अथवा ठगा जाता है।

यह अस्थिर विचारों का होने से यदि अभी कोई कार्य कर रहा हो और थोड़ी देर पश्चात् इसके मन में कोई भूत सवार हो जाय तो उस कार्य को बीच में ही छोड़ देता है। अभी दानी है तो थोड़ी देर बाद पक्का कञ्जूस भी बन सकता है। अभी यदि किसी कार्य की प्रशंसा कर रहा है तो थोड़ी देर बाद उसका निरादर भी कर देगा।

इसकी मस्तिष्क शक्ति मानसिक शक्ति से अधिक प्रबल होती है। प्रायः इसके हाथ में मस्तिष्क रेखा अन्तःकरण रेखा से प्रबल होगी। यह यह तर्क-वितर्क करने में काफी निपुणता प्राप्त कर सकता है। अस्थिरता के होने से यह अपने मन को एक दम दूसरी तरफ लगा देने वाला होता है। यह अजीब विचारों का होता है। यदि यह अच्छे विचारों का है तो

अच्छा ही रहेगा, यदि बुरे विचारों में फँस गया तो दुनियां के किसी भी धन्धे को किये बिना नहीं छोड़ता। यह पैसा कमाने के लिये नई नई विधियाँ सोचने वाला होता है। यह विचारों में और क्रियाओं में शीघ्रता पसन्द करता है।

प्रायः इसे यात्रायें करनी पड़ती हैं। सुख और दुःख में एक तरह के भाव से ही रहता है। यह अपने कष्ट का कारण स्वयं ही होता है। यह लिखने पढ़ने के कार्यों में रुचि रखनेवाला होता है। हो सकता है कि इसे पिता की जायदाद-सम्पत्ति प्राप्त हो जाय।

यह मजाकिया होता है। यह दूसरों का मन अपनी चिकनी चुंपड़ी बातों से बहुत ही शीघ्र आकर्षित कर लेता है। यह जब किसी भी बात को सोचता है तो उसके दोनों पहलू चमकीला और अन्धकार अच्छीतरह से देखता है, किन्तु शीघ्रता करने का स्वभाव होने से अन्धकारवाले पहलू को सरसरी निगाह से देखकर ही छोड़ देता है। यह हिचकिचाहट और अस्थिर मनवाला होता है। यह दूसरों के आचार-विचार को बहुत ही आसानी से समझ सकता है और इस तरह से बड़ी चालाकी और बुद्धिमत्ता से अपना कार्य करने का सामर्थ्य रखता है।

इसे अपना प्रत्येक कार्य ५, १४ और २३ तिथियों में चाहे वह किसी भी इंग्लिश मास की ही क्यों न हो, करना चाहिये। यदि इनमें से कोई भी तिथि बुधवार और शुक्रवार को पड़े तो वह दिन कार्य करने के लिये और भी शुभ होगा। इसके लिये बुधवार और शुक्रवार के दिन प्रत्येक सप्ताह में अच्छे हैं। भाग्यशाली नं० ५ है।

इसे अपना भाग्य समझाने के लिये और शान्ति के लिये हलके रंग के कपड़े पहनने में घर के पर्दों, मेजपोशों, चादरों इत्यादियों में उपयोग करना शुभ है। गुलदस्तों में भी हलके रंगों के फूलों का उपयोग करे। यदि हो सके तो अंगुठी या हार में हीरे का पत्थर लगवाये तो शुभदायक होगा। इसके लिये १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग, १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग, और १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग के दिन प्रत्येक वर्षों में लाभदायक और स्वास्थ्यप्रद होंगे।

भाग्यः—यदि यह अपना भाग्य बनाना चाहता हो तो एक कार्य को परिपूर्ण करके ही दूसरे में हस्तक्षेप करे। अस्थिरता का त्याग करके कठिन परिश्रम से उसमें व्यस्त हो जाय। इसे अपनी मानसिक शक्ति का भी विकास करना चाहिये और हिचकिचाहटपने को भी दूर करना चाहिये। व्यापार, वकालत, राजनैतिक कार्यों में यह चमक सकता है। यदि किसी चीज की व्याख्या करनी भी पड़ जाय तो इसे हिचकिचाना और डरना नहीं चाहिये या क्रोधित नहीं होना चाहिये, अपितु कठिन परिश्रम से उसे पूरा करना चाहिये और मध्य में ही नहीं छोड़ देना चाहिये। इसे प्रत्येक कार्य में केवल चमकीला पहलू ही देखकर नहीं शुरू कर देना चाहिये अपितु अन्धकारवाला भाग भी देख लेना चाहिये, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इसे प्रत्येक कार्य करने से पहले उसकी गहराई तक पहुँचकर उसका लाभ-हानि देखकर ही प्रारम्भ करना चाहिये। इसका भाग्यशाली अंक ५ है।

५ वां, १० वां, १५ वां, २० वां, २५ वां, ३० वां, ३१ वां, ४० वां, ४१ वां, ४५ वां, ५० वां, ५५ वां, १४ वां, २३ वां, ६८ वां वर्ष इसके जीवन में मुख्य अनुभव प्रदान करेगा।

स्वास्थ्यः—यह फेफड़ों, मस्तिष्क की खराबी, खून की खराबी, खून सम्बन्धी, नसा सम्बन्धी, अधिक खाने से, शराब इत्यादियों से, पेट की खराबी से, गुस्से से, अस्थिर विचारों से भी कष्ट होने का भय रहता है। स्वथ्य रहने के लिये खुली हवा में भ्रमण करना बहुत लाभकारी होगा और सूर्यस्नान भी बहुत ही लाभप्रद होगा। इसके लिये तीसरे, ५ वें, ८ वें, ११ वें, १८ वें, २० वें, २८ वें, ३० वें, ४५ वें वर्षों में कोई मुख्य घटना होने का अन्देशा है।

यदि मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न हो तो इसे सिल्का नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि आर्द्रा नक्षत्र में हो तो काली फोस्फोटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि पुनर्वसु नक्षत्र में हो तो कल्केटिया फोस्फोटिका नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। इसे औषध के स्थान पर पूर्ण आराम और सोना मिलना चाहिये। इसे खुराक में गाजर, मूंगफली, बादाम, अजवायन, जीरा इत्यादि खाना चाहिये। इसे २५ मई से २४ जून तक लगभग, २५ अगस्त से २४ सेप्टेम्बर तक लगभग और २५ नवम्बर से २४ दिसम्बर तक लगभग के समय में स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिये। ५ वें, १४ वें, २३ वें, १० वें, १५ वें, २५ वें, ३२ वें, ४१ वें, ५० वें, ६८ वें वर्षों में कष्ट होगा।

मित्रः—यह प्रत्येक तरह के मनुष्यों से मिलकर रहने वाला होता है। क्लबों, सोसाइटियों, सिनेमाओं, थियेटरों इत्यादियों का बहुत शौकीन होता है। तर्कवितर्क करने से कई तो इसे प्रशंसा की दृष्टि से देखते हैं और कई इसपर मखौल करते हैं। फिर भी यदि यह जो ५, १४, २३ तिथियों

में उत्पन्न हो चाहे वह किसी भी मास की क्यों न हो तो मित्रता कर सकता है। अथवा १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग, १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग और १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग के समय में उत्पन्न होने वाले से अच्छी मित्रता कर सकता है। मित्रों से प्रीति होती है किन्तु मित्रों से वहुत लाभ नहीं होता। स्त्रीपक्ष से भी क्लेश रहता है।

पाणिग्रहणः—यह विवाह करने से पूर्व ही काफी वातों का जो कि गृहस्थी जीवन में होती हैं, और प्रेम भी करके काफी अनुभव ले लेता है। यह दो दो कन्याओं अथवा कन्या दो-दो आदमियों से इकट्ठा प्रेम करता हुआ देखा जाता है। इसकी प्रायः दो शादियाँ होती हैं। यद्यपि इसका विवाह भी हो जाता है और पत्नी को भी प्यार करता है और दूसरी तरफ किसी दूसरी लड़की से भी प्रेम करता है, किन्तु इसमें एक विशेषता यह है कि दोनों के प्रेम में विल्कुल भी भिन्नता नहीं होती। दोनों को एक जैसा ही प्रेम करता है। इसकी काफी सन्तानें होती हैं किन्तु अभाग्यवश मर जाती हैं और यह प्रायः सन्तानों के दुःख से दुःखी होता है। इसका प्रायः दो औरतों से संयोग होता है अथवा दो सम्बन्ध होते हैं। इसका एक भाई प्रतिष्ठावाला और मानी होता है। यह घरेलू झगड़ों से चिन्तातुर रहता है। हो सकता है कि इसका जीवनसाथी किसी कष्ट से मृत्यु को प्राप्त हो जाय और फिर से पाणिग्रहण करे। इसके गुप्त शत्रु भी होते हैं जो कि इसकी गृहस्थी में कलह-कंकास और खटास उत्पन्न कर देते हैं। यह अपने आन्तरिक भाव प्रायः गुप्त रखता है और गाढ़ मित्र को ही बताता है। इसके प्रत्येक १० वर्ष के पश्चात् जीवन में एक विशेष परिवर्तन

होगा। यदि यह १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग, १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग अथवा १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग के समय में उत्पन्न कन्या से विवाह करे तो इसकी गृहस्थी सुखदायक और शान्तिदायक व्यतीत होगी। यदि कोई कन्या १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग के बीच में उत्पन्न हो तो वह ऐसे वर से पाणिग्रहण करे जो कि जब कि चन्द्रमा मिथुन, तुला, धन और कुम्भ राशि में हो, उत्पन्न हो तो वैवाहिक जीवन आनन्दमय गुजरेगा।

मिथुन राशि में उत्पन्न युवक या युवती को ऐसे का पाणिग्रहण करना चाहिये जोकि जबकि चन्द्रमा—विशाखा, पुनर्वसु, अश्लेषा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद या रेवती में हो। अथवा शुक्र—पुनर्वसु, विशाखा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद रेवती नक्षत्र में हो। अथवा बुध—पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, अश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में हो, उत्पन्न हो तो गृहस्थी सुखमय और सन्ततियुक्त होगी।

जीवनसाधनः—यह विद्यालयों, कॉलेजों में कार्य कर सकता है। तर्क-वितर्क करने में निपुण होने से वकील, बैरिस्टर, जज, जर्नलिस्ट बन सकता है और यह प्रत्येक विषय को शीघ्रता से समझाने की शक्ति रखता है और मनुष्य के आचार-विचार का निरीक्षण भी बड़ी खूबी से कर सकता है अतः यह सब बातें इसके जीवनसाधन में लाभदायक होती हैं। यह एक अच्छा ऑफिसर, सेक्रेटरी अथवा दलाल इत्यादि का भी कार्य कर सकता है। यह एक लेखक भी बन सकता है। यह रेलवे में भी एक उत्तरदायित्व वाले पद पर रह कर कार्य कर सकता है।

८ अष्टम अध्याय

१५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग

हिन्दी मास :—श्रावण

यदि कोई मनुष्य इस समय के बीच में उत्पन्न हो अथवा श्रावण मास में उत्पन्न हो तो उस पर चन्द्र ग्रह और कर्क राशि का प्रभाव होता है। इसका चिह्न जल है। यह भावनाशील होता है और किसी के दुःख से एकदम दुःखी हो जाता है। यह परिश्रमी और तन्मय हो कर कार्य करने वाला होता है। यह प्रत्येक स्थान पर घर में और बाहर भी शान्ति देखना चाहता है। यह कलह-कंकास तो बिल्कुल भी पसन्द नहीं करता। यह जिसको प्रेम करता है, उससे भी उतना ही प्रेम चाहता है। यह यात्रा करने का बहुत शौकीन होता है अथवा इसे अपने जीवन में बहुत सी यात्रायें करनी पड़ती हैं। इसे प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त रुचिकर लगते हैं। हो सकता है इसे बहुत लम्बी २ यात्रायें भी करनी पड़े, फिर भी इसे जलयात्रा से सावधान रहना चाहिये। यात्रा करने से पूर्व किसी अच्छे विज्ञ से मन्त्रणा करके ही यात्रा करने का प्रयास करे तो अत्यन्त शुभ होगा।

यह पुत्र, पौत्र, स्त्री, मित्र इत्यादियों से सुखी, पिता की आज्ञा न मानने वाला, विख्यात, कफी, दाता, गुणी, सुजनता से रहित, समय देखकर कार्य करने वाला, धनी होते हुए भी निर्धनों की तरह फिर भी दोनों में माननीय होता है।

यह वहमी और अस्थिर विचारों का होता है। यद्यपि वह घर में रहना पसन्द करता है, फिर भी रमणीय दृश्यों को देखने की और देशाटन की लालसा इसे दूर खींच ले जाती है। यह अपने कार्य में किसी की रुकावट पसन्द नहीं करता। यदि यह कार्य कर रहा हो और कोई आकर रोड़ा अटकाये अथवा टीका-टिप्पणियां करना शुरु करे तो इसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है, किन्तु यदि इसे प्रोत्साहना दी जाय तो यह आश्चर्यजनक विधियों से उस कार्य को सम्पूर्ण करता है।

यह रोमाञ्चक कार्यों को करने का बहुत इच्छुक होता है, और इसे रोमाञ्चक घटनायें देखने का और पढ़ने का बहुत शौक होता है। यह डिटैक्टिव (गुप्तचर) का भी कार्य करने में प्रवीण हो सकता है। यह एक शिकारी अथवा पुलिस में किसी अच्छे पद पर रह कर कार्य करने में समर्थ हो सकता है। यह प्रेतात्मविद्या, दिव्यज्ञान, हिप्नोटिस्म इत्यादि से अपनी शक्तियों का विकास कर सकता है और मध्यस्थ का कार्य कर सकता है।

यह अस्थिर, शीघ्र निर्णय पर न आने वाला होता है और इसमें आत्मविश्वास की न्यूनता पाई जाती है। यह भक्ति करनेवाला, भद्र, कल्पनाशील, सहानुभूति रखने वाला, भावनाशील, योग्य, बुद्धिमान्, रोमाञ्चक, साहसी, मानसिक विचारों में भ्रमण करने वाला और शारीरिक अवस्था में निर्बल होता है।

स्वास्थ्यः—इसे प्रायः मानसिक विचारों में तल्लीन रहने से नसें सम्बन्धी रोग के होने का भय रहता है, और धन पर भी इसका काफी

प्रभाव पड़ता है। इसके पेट में, गले में, हृदय और फेफड़ों में खराबी होने का भय रहता है। सर्दी, खांसी, जुखाम, दमा, न्यूमोनिया इत्यादि होने का भी भय रहेगा अतः इसे बहुत सावधान रहना चाहिये। इसे वहमी विचार और चिन्ता अपने मन से निकाल फेंकने चाहिये। इसे तरबूज, शलगम, पत्तागोभी, सलाद इत्यादि अपनी खुराक में प्रचुर मात्रा में खाना चाहिये।

यदि यह पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न हो तो इसे रोगों में कल्केटिया फोस्फोटिका नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि पुष्य नक्षत्र में हो तो नेट्रम सल्फरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि अश्लेषा नक्षत्र में हो तो कल्केटिया सल्फरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। २ रा, ११ वां, २७ वां, २९ वां, १४ वां, १८ वां, २२ वां, २४ वां, ४३ वां, २५ वां, ३८ वां, ५६ वां, ६५ वां वर्ष स्वास्थ्य के लिये सावधानी वाले हैं। २५ दिसम्बर से २४ फरवरी तक लगभग, २५ जून से २४ जुलाई तक लगभग का समय खराब रहेगा।

जीवनसाधन:—यह जेल, स्कूल (विद्यालय), औषधालय, पानी के जहाज पर, नाविक, कैमिस्ट, ड्रगिस्ट, कम्पाउण्डर, डाक्टर, नर्स, वैटरनरी में, प्रोफेसर अथवा अध्यापक का कार्य कर सकता है। यह पुलिस में गुप्तचर का भी कार्य कर सकेगा। जनता की सहायता करने वाली किसी भी संस्था में कार्य कर सकता है। यह प्रेतात्मविद्या, हिप्नोटिस्म और मध्यस्थ आदि के कार्यों में भी लग सकता है। चाहे यह किसी भी काम में क्यों न पड़ा हो, इसे प्रोत्साहित करने से ही अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हो और यह

उस कार्य को वहुत बुद्धिमानी से नई २ विधियों से उसे सम्पूर्ण करके आपको सन्तुष्ट करने का प्रयास करेगा, किन्तु इसके कार्य की टीका-टिप्पणी करना कार्य को व्यर्थ वनाना होगा। यह प्रशंसा का इच्छुक होता है।

भाग्यः—यह एक अच्छा परिश्रमी, साहसी, तन्मय हो कर कार्य करने वाला होने से अपने भाग्य को चमका सकता है। इसके भाग्य में कई तरह के परिवर्तन होते हैं। प्रायः इसके जीवन में प्रत्येक १२ वर्ष पश्चात् परिवर्तन होता है। इसके लिये १५ नवम्वर से १४ दिसम्वर तक लगभग, १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग, और १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग के दिन प्रत्येक वर्ष में शुभदायक हैं। इसमें इसका स्वास्थ्य, मन और भाग्य भी अच्छा रहेगा। इन्हीं दिनों में अच्छा परिश्रम करने से यह अपने भाग्य को चमका सकता है।

यदि यह किसी भी कार्य को २, ११, २० और २९ वें दिनों में, किसी भी मास के चाहे वे क्यों न हो, प्रारम्भ करे तो काफी लाभ होगा। किसी से मिलना, पत्र इत्यादि लिखना, यात्रा इत्यादि सव इन्हीं दिनों में करने से लाभ होगा। यदि इन्ही तिथियों में रविवार, सोमवार और शुक्रवार पड़े तो और भी शुभदायक होगा, वैसे ये दिन प्रत्येक सप्ताह में अच्छे हैं। १, ४, ७, १०, १३, १६, १९, २२, २५, २८ और ३१ तिथियां भी कार्य के लिये अच्छी हैं। भाग्यशाली नं. २ है।

इसे अपना स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिये और मन की शान्ति के लिये मक्खन के रंग के, श्वेत, फीका नीला और फीके हरे रंग के कपड़े

पहनने चाहिये, और गुलदस्तों, चादरों, पर्दों इत्यादियों में भी इन्हीं रंगों का उपयोग करना बहुत लाभदायक होगा।

इसको अंगूठी, गले के हार इत्यादि में मोती, चन्द्रमा की तरह शुभ्र पत्थर अथवा हीरा लगवा कर पहनना चाहिये, इससे इसके भाग्य में काफी शुभ परिवर्तन होगा।

मित्रः—इसे अपने मित्र बनाने में बहुत सावधानी रखनी चाहिये। इसके मित्र प्रायः १५ जनवरी से १४ फरवरी, १५ मार्च से १४ एप्रिल, और १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक लगभग के समय में उत्पन्न होने वालों में से होते हैं। अथवा १, २, ४, ६, ७, ८, ११, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २८, ३०, ३१ और १३ वीं तिथियों में चाहे वह किसी भी मास की क्यों न हो, उत्पन्न मनुष्य से मित्रता हो सकती है। यद्यपि इसके मित्र तो बहुत होते हैं, किन्तु गाढ़ और अच्छा मित्र कोई विरला ही होता है।

पाणिग्रहणः—इसे अपनी छोटी आयु में और शीघ्र विवाह नहीं करना चाहिये। जबतक कि यह पूर्णरूपेण उस कन्या से अथवा कन्या उस मनुष्य से सन्तुष्ट न हो जाय, विवाह नहीं करना चाहिये, और न विवाह करने के लिये स्वीकृती ही देनी चाहिये, अन्यथा पीछे पछताना पड़ेगा। यदि यह शीघ्र विवाह करना भी चाहे तो इसे अपने अस्थिर, भावनाशील, और सहानुभूति के विचारों को दूर करके की विवाह करने की स्वीकृति देनी चाहिये अथवा विवाह करना चाहिये। खूब सोचविचार कर पाणिग्रहण

करना इसके लिये लाभदायक होगा। इसके लिये अच्छा तो यह होगा कि यह १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग, १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग अथवा १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक लगभग के मध्य के समय में उत्पन्न व्यक्ति से पाणिग्रहण करना बहुत ही शुभप्रद होगा और इसकी गृहस्थी सुखमय व्यतीत होगी। और जो कन्या १५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग के समय में उत्पन्न हो उसे ऐसे वर से विवाह करना चाहिये जब कि चन्द्रमा कर्क, वृश्चिक, मकर अथवा मीन राशि में हो और वर इस समय में उत्पन्न हुआ हो तो इनकी गृहस्थी बहुत ही सुखमय और सन्तानयुक्त होगी।

यदि युवक या युवती कर्क लग्न में उत्पन्न हों तो उसे ऐसे से प्रणय करना चाहिये जोकि जबकि गुरु—रोहिणी, हस्त या श्रवणा नक्षत्र में हो। या शुक्र—पुनर्वसु, विशाखा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो। अथवा चन्द्रमा या सूर्य—रोहिणी, हस्त, विशाखा, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपद, श्रवणा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हो, उत्पन्न हो तो गृहस्थ जीवन आनन्दमय और उल्लास युक्त होता है।

9 नवम अध्याय

१५ अगस्त से १४ सेप्टेम्बर तक लगभग

हिन्दी मास :—भाद्रपद

यदि कोई मनुष्य इस समय के बीच के दिनों में उत्पन्न हो तो सूर्य ग्रह और सिंह राशि के प्रभाववाला होता है। यह अग्नि चिह्न और अस्थिर होता है। यह प्रत्येक स्थान पर अपना उच्च पद ही देखना चाहता है। यह वड़ी २ आशाओं वाला होता है। यह वहादुर, उत्साही, इच्छुक, उच्च विचारों वाला और उच्च आशाओं वाला होता है। यह सीधी, सच्ची वातें करना पसन्द करता है। यह सर्वदा सत्य कथन ही करता है और दूसरों से भी उसी तरह की आशा रखता है। यही कारण है कि इसके वहुत से शत्रु होते हैं। यह प्रत्येक कार्य को गम्भीरता से और तन्मय होकर करने वाला होता है। यह दूसरों पर अपना शासन भी चला सकता है क्योंकि इसकी शासनशक्ति अच्छी होती है। यह एक अच्छा अग्रिणी भी वन सकता है। यह जोशीला, प्रेम करने वाला होता है, अभिप्राय यह है कि जव यह किसी को प्रेम करता है तो उसकी गहराई तक पहुँचने का प्रयास करता है और दूसरों से भी उसी तरह के प्रेम की आशा रखने वाला होता है। यह जिससे प्रेम करता है, उसके लिये सव कुछ न्योछावर कर देता है।

यह स्थिर बुद्धि वाला, पराक्रमी, पराक्रम से यशस्वी, राजा का प्रिय, परोपकारी, धनवान्, दाता, स्त्री, पुत्र के सुख से युक्त, सुख-दुःख में समान

रूप वाला, जिद्दी, निर्दयी, मजबूत, विज्ञापनकर्ता, संस्थापक, सुजन और अतिथिसत्कार करने वाला होता है।

यह अपनी अच्छाई और बुराई की पसन्दगी में दृढ़ होता है। यह मुँह पर बात करना पसन्द करता है और इसीलिये इसके कई विरोधी हो जाते हैं। यदि कोई इसके दिल को चोट लगा दे और फिर भी सत्य कथन न करे तो जल भुन कर राख हो जाता है फिर यह उस पर कभी भी सहानुभूति नहीं करता। कभी कभी तो ऐसा हो जाता है कि सबको एक जैसा ही समझ बैठता है और एक ही डण्डे से सबको हांकने लगता है।

यह एक अच्छा ऑफिसर बन सकता है। यह कार्यशील, उत्साही, परिश्रमी, दृढ़निश्चयी, कम रुकावटों वाला होता है। यह जिससे प्रेम करता है तो उसके अपराधों को भी क्षमा कर देता है। यह भावनाशील होता है। यह प्रत्येक मनुष्य पर शीघ्र ही विश्वास कर लेता है। यही कारण है कि शीघ्र ही ठगा जाता है। किन्तु यदि इसे कोई एक बार ठगले और इसकी सहानुभूति अथवा विश्वास का दुरुपयोग करे तो यह निर्मम, कठोर और निष्ठुर हो जाता है।

यह क्लबों, सोसाइटियों, सिनेमाघरों इत्यादि का शौकीन होता है। यह सरकार के किसी भी ऑफिस में अच्छा कार्य कर सकता है। यह किसी की चुभने वाली बातें और असत्य कथन नहीं सहन कर सकता। यह बुद्धिमान्, चालाक, योग्य, दृढ़निश्चयी और उच्च अधिकारों की प्राप्ति की आशा वाला होता है। यह स्वच्छ और खुले व्यवहार की प्रशंसा करने वाला होता है।

यह कार्यशील, साहसी, विद्याभ्यासी और सहृदयी होता है। यह राजनैतिक कार्यों में भी भाग ले सकता है और एक अच्छा नेता बन सकता है।

स्वास्थ्यः—इसे हृदय की बीमारियां, पाचनशक्ति की कमी, गुर्दे की तकलीफ, आंखों, फेफड़ों और चमड़े की बीमारियां होने का भय हो सकता है। यदि यह रोगी भी हो जाय तो शीघ्र ही ठीक (स्वस्थ) होकर चलने फिरने लगता है। इसे पांचवें, १० वें, २० वें, २७ वें, ३० वें, ४० वें, ४७ वें, ४१ वें, ३१ वें, ५५ वें, ३७ वें और ४३ वें वर्षों में सावधान रहना चाहिये।

यदि यह मघा नक्षत्र में उत्पन्न हो तो इसे सिल्का नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि पूर्वाफाल्गुनी में हो तो फेरम फोस्फोटिकम नामक नमक का उपयोग रोगों में करना चाहिये। यदि उत्तराफाल्गुनी में हो तो मॅग्नेशिया फोस्फोटिका नामक नमक का उपयोग होना चाहिये। इसे अपनी खुराक में सन्तरा, मौसम्बी, सेव, निम्बू, शहद, जौ, अद्रक इत्यादि प्रचुर मात्रा में खाना चाहिये। २५-नवम्बर से ५ फरवरी तक लगभग और २८ सेप्टेम्बर से २७ अक्तूबर तक लगभग के समय में सावधानी रखनी चाहिये।

मित्रः—इसके बहुत से मित्र होते हैं। इसे अपने मित्र बनाने में बहुत सावधानी रखनी चाहिये। इसके अच्छे मित्र २, ४, ६, ११, १३, १६, २०, २२, २५, २९, ३१ वीं तिथियों में, चाहे वह किसी भी इंग्लिश मास में क्यों न हो, उत्पन्न होने वालों में से हो सकते हैं। अथवा १५ मार्च

से १४ एप्रिल तक लगभग, १५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग या १५ अगस्त से १४ सेप्टेम्बर तक लगभग के समय में उत्पन्न होने वालों से अच्छी मित्रता हो सकती है। यह प्रत्येक को विश्वास और प्रेम की निगाह से देखने वाला होता है अतः दूसरों से भी उसी तरह का व्यवहार करवाना पसन्द करता है।

भाग्य :—इसकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है, क्योंकि यह परिश्रमी, दृढ़निश्चयी और एक कार्य पर लगकर बैठने वाला होता है और उसे सम्पूर्ण करने का प्रयास करता है। फिर भी इन सबके होते हुए इसकी जमा पूंजी बहुत मामूली सी ही होती है। यह खर्चीला होता है। इसे अपने पिछले जीवन में भाग्य चमकाने के बहुत अवसर मिलेंगे। इसके लिये प्रत्येक वर्ष के १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग, १५ अगस्त से १४ सेप्टेम्बर तक लगभग और १५ फरवरी से १४ मार्च तक के दिन अच्छे रहेंगे। प्रत्येक १० वर्ष पश्चात् इसके जीवन में कुछ विशेष परिवर्तन होगा। भाग्य चमकाने के लिये १, १०, १९ और २८ किसी भी इंग्लिश मास की तिथियों में और यदि इन तिथियों में रविवार और सोमवार आ जाय और उस दिन कोई कार्य प्रारम्भ किया जाय तो बहुत शुभ है। इसे वैसे भी अपने जीवन में बहुत से ऐसे अवसर मिलेंगे जिससे कि इसका भाग्य चमक सके, फिर भी इसे बहुत सावधानी से, अपने मन को स्थिर रखकर और दृढ़ निश्चय करके ही कदम उठाना चाहिये। भाग्यशाली नं० १ है।

इसके लिये लाल, आकाशी, पीले, सुनहरे रंग के पहनने के कपड़े, चादरें, मेजपोष, पर्दे, गुलदस्ते इत्यादि घर में रखना शुभप्रद होगा।

जीवनसाधनः—यह एक अच्छा अग्रिणी, मैनेजर, डायरेक्टर, संस्थापक, सलाहकार, सरकारी ऑफिस में एक अच्छी पदवी पर कार्य कर सकता है। यह प्रोफेसर, अध्यापक अथवा विद्यालय के किसी भी कार्य में सफल हो सकता है। यह एक अच्छा संस्थापक, पुलिस, मिलिट्री इत्यादि में भी कार्य कर सकता है क्योंकि इसमें शासन करने की अच्छी शक्ति होती है। यह सिनेमा, थियेटरों इत्यादि में भी कार्य कर सकता है। यह डाक्टर, वैद्य, हकीम, कम्पाउण्डर, नर्स, केमिस्ट–ड्रगिस्ट इत्यादि के कार्यों में भी सफल हो सकता है। यह किसी भी लिमिटेड कम्पनी में अथवा सरकारी नौकरी में एक प्रमुख अथवा उच्च पद पर रहकर कार्य कर सकता है।

पाणिग्रहणः—इसे अपना जीवनसाथी चुनने के लिये बहुत ही सावधान रहना चाहिये। यदि यह १, २, ४, ७, ११, १३, १०, १७, २०, २२, २५, २९ और ३१ वीं तिथि में उत्पन्न कन्या से विवाह करे तो शुभ है अथवा १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक लगभग, १५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग, १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग और १५ अगस्त से १४ सेप्टेम्बर के समय उत्पन्न कन्या का पाणिग्रहण करे तो भी शुभप्रद है और गृहस्थी सुखमय व्यतीत होगी। यदि कोई कन्या १५ अगस्त से १४ सेप्टेम्बर तक लगभग के समय में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे वर से विवाह करना चाहिये जोकि जबकि चन्द्रमा मेष, सिंह, धन और कुम्भ में हो पैदा हो तो दम्पति की गृहस्थी बहुत ही सुखमय व्यतीत होगी। इसकी काफी सन्तानें होंगी, किन्तु उनसे सुख की आशा नहीं

होगी। हो सकता है कि इसकी पहली सन्तान मर जाय अतः शान्ति करवाना चाहिये।

यदि कन्या अथवा लड़का सिंह लग्न वाला हो तो वे ऐसे से विवाह कर सकते हैं जो कि पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद, अथवा उत्तराषाढ़ा में उत्पन्न हों, जब कि सूर्य या गुरु इन नक्षत्रों में हो या चन्द्रमा पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद अथवा उत्तराषाढ़ा में हो या बुधग्रह पुनर्वसु, विशाखा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो तो पाणिग्रहण करने से गृहस्थी जीवन स्वर्गमय बन सकता है।

10 दशम अध्याय

१५ सेप्टेम्बर से १४ अक्तूबर तक लगभग

हिन्दी मास :—आश्विन

यदि कोई इस समय के दिनों में उत्पन्न हो तो वह राहु और बुध ग्रह और कन्या राशि के प्रभाव वाला होता है। इसके आचार-विचार हलन-चलन में भी इन्हीं का प्रभाव होता है। इसका अस्थिर और पृथ्वी चिह्न है। यह निश्चयी, शीघ्र ही किसी निर्णय पर आ जाने वाला, बुद्धिमान्, दूरदर्शी, विचारक, प्रेतात्मविद्या में रुचि रखने वाला, थियोसोफी की तरफ झुकाव रखने वाला, दिव्य ज्ञान और अध्यात्मविद्या की तरफ रुचि रखने वाला होता है। यह प्रत्येक विषय को बहुत ही शीघ्र समझ जाता है। यह तर्क-वितर्क अथवा वाद-विवाद करने से पूर्व उस विषय के दोनों पहलुओं का पूर्णतया निरीक्षण कर लेता है। यद्यपि यह जनता के लिये कोई बहुत लगन नहीं रखता, किन्तु फिर भी कई अच्छे कार्य प्रजाजन के लिये कर जाता है। यह किसी मनुष्य को देखकर उसके आचार-विचार को अच्छी तरह भांप जाता है। यह ज्योतिष विद्या, हस्तरेखा विज्ञान, रमलशास्त्र, तन्त्र-मन्त्र विद्या इत्यादियों में रुचि रखने वाला होता है। यह गर्वीला और थोड़ा टेढ़े दिमाग का होता है। प्रत्येक मनुष्य इसे आसानी से नहीं ठग सकता। यह स्वच्छता को बहुत पसन्द करता है। यह फैशनेबल विचारों वाला भी हो सकता है। यह अपनी चीजें अपने आप ही ठीक सुसज्जित रखना बहुत पसन्द करता है। यह बहुत सम्भल सम्भल कर कार्य करने वाला होता है।

यह धनी, राजकुल के प्रिय, अच्छे काम करने वाला, बहुत नौकरों से युक्त, दाता, गुणज्ञाता, बहुत पुत्र वाला, घोड़ा आदि सम्पत्ति से युक्त, राजा से धनलाभ, करने वाला कोमल बोलने वाला, संगीतप्रेमी, अत्यन्त सामर्थ्य से शत्रु का नाश करने वाला, कविताप्रेमी, विद्याभ्यासी, कलाप्रेमी, अच्छी स्मरणशक्ति वाला, खुले दिल का, धार्मिक विचारों वाला, गणितशास्त्र में रुचि रखने वाला और साहित्यप्रेमी होता है।

यह कोई भी कार्य शुरू करता है तो पहले उसका अच्छी तरह से अध्ययन करता है, उसके दोनों पहलुओं (अन्धकार और चमकीला भाग) को देखता है और सोचता है, उसकी गहराई तक पहुँच कर सन्तुष्ट होता है। यह शान्ति का इच्छुक है अतः इसे घर के कलह-कंकास बिल्कुल भी पसन्द नहीं होते। यह कोई भी कार्य नियम विरुद्ध नहीं करना पसन्द करता। यह अपने विचारों में और इच्छा में दृढ़ होता है। यह प्रत्येक कठिनाई का सहनशीलता और गम्भीरता से सामना करता है। यह इमानदार, आज्ञापालक, नियमानुसार चलने वाला, चतुर, चालाक, तीव्र स्मरण शक्ति वाला और सावधान होता है। यह बहुत ही चालाक, दिल्लगीबाज और नये नये तरह के खाना खाने का शौकीन होता है। इसे अपनी आदतों और भोजन में साधारण होना चाहिये।

इसके मानसिक और शारीरिक कार्यों के लिये खुली हवा का होना बहुत ही आवश्यक है। साधारणतया यह भाग्यशाली है। अपना भाग्य चमकाने के लिये इसे सख्त परिश्रम करना पड़ेगा। यह विद्याभ्यासी होता

है। यह गणित, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र, औषधियों के कार्यों में काफी रुचि रखने वाला होता है। इसे गायन और नृत्य का भी शौक होता है।

स्वास्थ्य :—इसे पेट की खराबी, पाचनशक्ति की कमी, चमड़े की बिमारी, संग्रहिणी, खून की टट्टियाँ, हैजा, नर्वस में खराबी, पीठ में दर्द, कमर में दर्द, अण्डकोष की खराबी, औरतों की अन्दरुनी बिमारियां होने का भय रहेगा। इसे कई वार ऑपरेशन करवाने के लिये जाना पड़े ऐसा अन्देशा होता है। इसे अपना स्वास्थ्य ठीक रखने के लिये अच्छी तरह से नींद लेनी चाहिये, खुली हवा में भ्रमण करना चाहिये, खाने-पीने में सावधानी रखनी चाहिये और शराब इत्यादि तो भूल कर भी नहीं लेनी चाहिये।

यदि यह उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न हुआ है तो नेट्रम सल्फरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि हस्त में हो तो काली फोस्फोटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि चित्रा में हो तो फेरम फोस्फोटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। इसे जीरा, अजवायन, गाजर, मूली, मूंगफली, बादाम इत्यादि खुराक में लेना चाहिये। २५ मई से २४ जून तक लगभग, २५ अगस्त से २४ सेप्टेम्बर तक लगभग और २५ नवम्बर से २४ दिसम्बर तक लगभग का समय स्वास्थ के लिये अच्छा नहीं है।

जीवनसाधन :—यह विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के किसी भी कार्य में अच्छा सफल हो सकता है। यह दिव्यज्ञान, प्रेतात्मविद्या, ज्योतिष, वायुविद्या अथवा आकाश विज्ञान के कार्यों में भी सफल हो सकता है।

यह एक अच्छा व्यापारी भी बन सकता है। इसके लिये नौकरी से व्यापार अधिक लाभदायक होगा। यह कैमिस्ट, ड्रगिस्ट, नर्स, कम्पाउण्डर इत्यादि का भी कार्य कर सकता है। यह एक अच्छा जनरल मर्चेन्ट भी बन सकता है। पुलिस के किसी कार्य में भी लग सकता है। यह छापेखाने में भी कार्य कर सकता है। यह जज, वकील, बैरिस्टर, दैनिक पत्र का सम्पादक, गुप्तचर, दलाली के कार्यों में भी सफल हो सकता है। यह गणित के प्रत्येक कार्यों में सफल हो सकता है। यह समझदार, बुद्धिमान्, चतुर, चालाक, इमानदार, रक्षक और विश्वासी होने से किसी भी सरकारी दफ्तर में एक अच्छी पदवी पर लग सकता है।

मित्र:—इसके कई मित्र होते हैं। इसके अच्छे मित्र ५, १४, २३ तिथियों में उत्पन्न होने वालों में से अथवा १५ मई से १४ जून तक लगभग, १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग या १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग के समय में उत्पन्न होने वालों में से हो सकते हैं। इसे अपने मित्र बहुत सोच-विचार कर बनाने चाहिये। यद्यपि यह दूसरों के आचार-विचार को अच्छी तरह से पहचान सकता है, किन्तु बुरी संगति में पड़ने से खराब भी हो सकता है। भाग्यशाली नं० ५ है।

भाग्य:—इसके लिये ५, १४, २३ तिथियां प्रत्येक मास की शुभ हैं। बुधवार और शुक्रवार का दिन भी शुभ है। यदि ये दिन ऊपर कही तिथियों में आ जाय तो और भी फलप्रद होगी। सख्त परिश्रम से यह अपने भाग्य को चमका सकता है। १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग, १५ मई से १४ जून तक लगभग, १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग

के दिन प्रत्येक वर्ष में भाग्य चमकाने के लिये शुभ रहेंगे और इसे बहुत से स्वर्ण अवसर भी मिलेंगे। इसके जीवन का पहला भाग कष्टमय व्यतीत होगा और पिछला भाग सुखमय होगा। इसे श्वेत, हलका नीला, हलका हरा, आकाशी और चांदी के रंग के कपड़े पहनने चाहिये। घर के पर्दों, चादरों, मेजपोश, गुलदस्तों इत्यादियों में भी इन्हीं रंगों का उपयोग मानसिक शान्ति और भाग्योदय के लिये शुभप्रद होगा। इसे अङ्गुठियों अथवा हार में मणि, पुखराज, पीला नीलम इत्यादि उपयोग में लाना चाहिये।

पाणिग्रहण:—इसे अपना जीवनसाथी ढूँढ़ने के लिये खूब सोच-विचार कर ही आगे कदम बढ़ाना चाहिये। यह विषय इसके लिये बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शान्ति का इच्छुक है। यह कलह-कंकास को बिल्कुल भी पसन्द नहीं करता। यह स्वच्छता का पुजारी होता है। अतः इसे अपनी गृहस्थी सुखमय बनाने के लिये ऐसी कन्या का पाणिग्रहण करना चाहिये जो कि १५ जनवरी से १४ फरवरी तक लगभग, १५ मई से १४ जून तक लगभग अथवा १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग के समय में उत्पन्न हो तो स्वर्गमय गृहस्थी चलेगी। अथवा ५, १४, २३ तिथियों में उत्पन्न कन्या से विवाह करे तो भी शुभप्रद होगा। यदि कोई कन्या १५ सेप्टेम्बर से १४ अक्तूबर के मध्य में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे वर से वरना चाहिये जो कि जब कि चन्द्रमा वृष, कन्या, मकर और मीन राशि में हो तो दम्पति का गृहस्थीजीवन सुखपूर्ण, सन्ततियुक्त, अच्छी सन्तानों वाला और भाग्यशाली होगा। यह हार्दिक प्रेम करने वाला होता है किन्तु बच्चों के लिये सख्त स्वभाव वाला होता है। हो सकता है

कि एक जवान लड़का मर जाय और दो सम्बन्ध अथवा दो विवाह हों। ३२ वां और ४० वां वर्ष जरा मुख्य होगा।

यदि कन्या अथवा वर कन्या लग्न में उत्पन्न हों तो उन्हें ऐसे से विवाह करना चाहिये जब कि बुध अथवा शुक्र पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो अथवा बुध भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हो अथवा शुक्र रेवती, अश्लेषा या ज्येष्ठा नक्षत्र में हो। अथवा मंगल या बुध अश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में हो या शनि पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हो तो उनकी गृहस्थी स्वर्गमय बन सकेगी।

11 एकादश अध्याय

१५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग

हिन्दी मास :–कार्तिक

इस समय के दिनों में यदि कोई उत्पन्न हो तो वह शुक्र ग्रह और तुला राशि के प्रभाव वाला होता है। हवा इसका चिह्न है। यह शान्ति का चाहक होता है। इसकी मानसिक शक्ति प्रवल होती है, किन्तु शारीरिक शक्ति का इतना विकास नहीं हो पाता। यह किसी भी वस्तु को या विषय को अधिक या कम पहचानने की शक्ति रखता है। यह अजीव तर्क–वितर्कों को सुनना पसन्द नहीं करता। यह मनुष्य की बातचीत, से हरकतों से, उठने–बैठने इत्यादि से उसको बहुत ही शीघ्र पहचान जाता है। यह किसी विषय को सोचते हुए उसका अच्छा–बुरा, हानि–लाभ इत्यादि अच्छी तरह से सोचकर उसकी गहराई तक पहुँचने का प्रयास करता है।

यह मदिरा इत्यादि के बनाने वाला भी हो सकता है। यह विख्यात, शरावी, गन्दे चरित्र का, दुष्ट, खुले दिल का, वैभव और भोगी, राजा से भयभीत, विपरीत चलने वाला, पापी, झगड़ालू, दूसरों का कार्य करने वाला, मणि–धन आदि से युक्त, अधिक वोलने वाला, अच्छे कामों को भी करने वाला, सुन्दर केश वाला, कामी और क्रय–विक्रय में चतुर होता है।

यह लड़ाई–झगड़े से सर्वदा दूर भागता है। यह अपने घर में भी शान्ति देखना पसन्द करता है। यह वुद्धिमान् और योग्य होता है। यह क्लब, सिनेमा, थियेटर इत्यादि स्थानों पर जाना पसन्द करता है। यह

अच्छे और खुले दिल वाला होता है। यह कलाप्रेमी होता है। यह शान्त स्वभाव और मौजशौख का शौकीन होता है। प्रायः तर्क-वितर्क करने से इसकी गृहस्थी बिगड़ जाती है। यह खुली हवा में रहना पसन्द करता है और व्यायाम करने का भी शौकीन होता है।

यह अपना कार्य करने में बहुत दृढ़ निश्चयी होता है और बहुत सावधानी से उसके अच्छे और बुरे पहलुओं को देखता है। यह आकर्षक होता है। यह जिससे प्रेम करता है, उसे हर तरह से खुश रखने का प्रयास करता है। वह भी इसकी पूजा अथवा मान करता है। यह ईर्ष्या-द्वेषभाव को बिल्कुल पसन्द नहीं करता। यह संगीत, नृत्य, चित्र इत्यादि कलाओं में और खुद काम करने का शौकीन होता है। वैसे यह शान्त स्वभाव का होता है और हमेशा शान्ति ही देखना चाहता है, परन्तु जब यह क्रोधित होता है तो आगा-पीछा नहीं देखता।

स्वास्थ्यः—इसे मधुमेह, नस सम्बन्धी खराबी, पेशाब की बिमारी, कमर के दर्द, आंखों में खराबी, मस्तिष्क की खराबी और गले की बिमारी होने का भय रहता है। हो सकता है कि नाक में अथवा फेफड़ों में तकलीफ हो। औरतों की छातियों में दर्द, प्रसूतिज्वर, खून में खराबी होने का भय रहता है। हृदय में भी किसी तरह की खराबी का भय हो सकता है। इसे १५ वें, १८ वें, ४१ वें, ३१ वें, ४३ वें, ४२ वें, ६९ वें वर्षों में सावधान रहना चाहिये।

यदि यह चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न हो तो फॅरम फॉस्फोटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि स्वाती नक्षत्र में हो तो काली

मरियेटिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि विशाखा नक्षत्र में हो तो सिल्का नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। इसे अपनी खुराक में अञ्जीर, तरबूज, सेव, नाक, लोकाट, बादाम इत्यादि का उपयोग प्रचुर मात्रा में करना चाहिये। २५ एप्रिल से २४ मई तक लगभग, २५ सेप्टेम्बर से २४ नवम्बर तक लगभग का समय स्वास्थ्य के लिये खराब रहेगा।

भाग्यः—इसके लिये मंगलवार, वीरवार और शुक्रवार के दिन शुभ हैं। यदि ये दिन ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७ और ३० किसी भी मास की तिथियों में आ जाय तो और भी शुभ होता है। इसके लिये १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग, १५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग और १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग के दिन प्रत्येक वर्ष में बहुत लाभप्रद हैं। इसमें यह अपना भाग्य भी चमका सकता है। इसे अपने भाग्य को चमकाने के लिये बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इसे औरतों से लाभ होता है और लौटरी इत्यादि से भी पैसा मिलने का अन्देशा रहता है। भाग्यशाली नं० ६ हैं।

इसे अपने पहनने के कपड़ों के लिये, चादरों, पर्दों, मेजपोशों और गुलदस्तों इत्यादि के लिये नीला, फीका हरा रंग उपयोग में लाना चाहिये। इससे इसके मन की शान्ति बढ़ेगी और भाग्योदय होगा। इसको अंगूठी में अथवा हार में हीरा, दुधिया पत्थर इत्यादि का उपयोग करना चाहिये।

जीवनसाधनः—यह प्रोफेसर, अध्यापक, संपादक, जर्नलिस्ट, लेखक, वकील, मैजिस्ट्रेट, तर्कशास्त्री, कलात्मक कार्यों में जैसे नृत्यकला, चित्रकला, गायन इत्यादियों में सफल हो सकता है। यह खानों के कामों

में, खोद काम के कार्यों में भी सफल हो सकता है। यह भूतत्वविद्या के कार्यों में भी कार्य कर सकता है। यह सिनेमा, थियेटर और नाटक कम्पनियों अथवा प्रदर्शनियों में भी कार्य कर सकता है।

मित्र :—इसे अपने मित्र बनाने में बहुत सावधानी रखनी चाहिये। वैसे इसमें दूसरों की आदतों, हलन-चलन को देखकर पहचानने की शक्ति होती है, परन्तु फिर भी ठोकरें खा सकता है। अथवा आचर-विचार बुरी संगत से बिगड़ने का भय रहता है। इसके मित्र प्रायः ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तिथियों में उत्पन्न होने वालों में से होते हैं।

पाणिग्रहण :—वैवाहिक जीवन इसके लिये एक मुख्य विषय है अतः बहुत ही सावधानी के साथ पाणिग्रहण करे, क्योंकि यह तर्क-वितर्क अथवा वाद-विवाद करने से परस्पर मतभेद प्रकट कर देता है। दूसरी बात यह है कि यह दूसरों की बुराइयां देखने का आदी होता है, अतः अपनी गृहस्थी को कष्टमय बना लेता है। इन सब कारणों से इसे बहुत सोच-विचार कर ही गृहस्थी जीवन में पदार्पण करना चाहिये। यदि यह १५ फरवरी से १४ मार्च तक लगभग, १५ एप्रिल से १४ मई तक लगभग और १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग के समय में उत्पन्न होने वाली कन्या से विवाह करे तो इसकी गृहस्थी सुखमय हो सकती है। यह ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७ और ३० वीं तिथियों में उत्पन्न कन्या का पाणिग्रहण करे तो भी बहुत शुभप्रद होगा। यदि कन्या १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग के समय में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे वर से वरना चाहिये जो कि जब कि चन्द्रमा कुम्भ, मेष, मिथुन और तुला राशि

में हो, उत्पन्न हो तो गृहस्थी स्वर्णमय होगी। सन्ततियुक्त, कलह-कंझट से दूर और भाग्यपूर्ण गृहस्थ जीवन होगा। इसके भाई बहिन भी काफी होंगे, किन्तु सुख नहीं मिलेगा। पिता से भी इसको कष्ट उठाना पड़ेगा। सन्तति भी काफी होगी।

यदि वर अथवा कन्या तुला लग्न में उत्पन्न हों तो उन्हें ऐसे वर से विवाह करना चाहिये जब कि चन्द्रमा रोहिणी, हस्त या श्रवणा नक्षत्र में हो अथवा मंगल ज्येष्ठा, अश्लेषा या रेवती नक्षत्र में हो। या बुध अश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में हो तो भी गृहस्थी आनन्ददायक व्यतीत होगी।

द्वादश अध्याय

१५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक लगभग

हिन्दी मास :—अग्रहण

इस समय में उत्पन्न मनुष्य वृश्चिक राशि और मंगल ग्रह से प्रभावित होता है। वृश्चिक का चिह्न जल है, यह स्थिर है और मंगल ग्रह का चिह्न अग्नि है।

यह चालाक, बुद्धिमान्, दृढ़ इच्छाशक्ति वाला, उत्साह और निर्भयता से कठिनाइयों का सामना करने वाला, आराम से सोच-विचार कर कार्य करने वाला, अपने विचारों को गुप्त रखने वाला, दूसरों से शीघ्र नहीं हिलने-मिलने वाला, शीघ्रता और शरारतों को न पसन्द करने वाला, अच्छी आध्यात्मशक्ति वाला, प्रेतात्मविद्या में रुचि रखने वाला, दिव्य ज्ञान को सीखने की इच्छा वाला, सावधानी से कार्य करने वाला, स्वार्थी, सन्देह की निगाह से देखने वाला, दूसरों को उत्तर देने में ऊटपटांग सी बातें करने वाला, अपनी पसन्दगी में दृढ़ विचारों वाला, बड़ी २ आशाओं वाला, चिड़चिड़े स्वभाव वाला, रोबीला, गठीले शरीर वाला, गर्म स्वभाव वाला, बड़े २ कार्यों को करने की इच्छा वाला, कठोर हृदय वाला और शिकार-लड़ाई इत्यादि की तरफ रुचि रखने वाला होता है।

यदि सूर्य वृश्चिक राशि में हो तो यह स्वयं प्रत्येक कार्य को करना पसन्द करता है। यह बहुत ही सावधानी से, आराम से, निर्भयता से और

उत्साह से प्रत्येक कार्य को करता है किन्तु थोड़ा शनैः शनैः करने वाला होता है। यह कठिनाइयों को बड़े साहस से सुलझाने वाला होता है।

यह तीर्थ यात्रा करने वाला, सुशील, कलाओं में कुशल, विलासी, परोपकारी, सज्जन मार्गानुगामी, धन-धान्य से युक्त, कृपण, झगड़ालू, क्रोधी, विष, अग्नि और अस्त्र से भय पाने वाला, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाला, साहसी, वीर, निर्भय, निर्दयी, जिद्दी, नियमों की पर्वाह न करने वाला, विचारों में भ्रमण करने वाला और चीरा-फाड़ी के कार्य में सफल होने वाला होता है।

यदि चन्द्रमा मकर राशि में अभिजित् नक्षत्र के साथ हो तो उसका भाग्य बहुत ही अच्छा होता है। वह अच्छे पैसे वाला और एक अच्छा कार्यकर्ता होता है। अपनी जिम्मेदारी को समझने वाला होता है। यह दिव्य शक्ति की खोज में भी लग सकता है। यह इमानदार, भाग्यशाली, योग्य, बुद्धिमान्, अच्छा कार्यकर्ता, परिश्रमी, साहसी, हिम्मती, विद्याभ्यासी, चालाक, चतुर और सहानुभूति प्रकट करने वाला होता है।

यह प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उसकी तह तक पहुँचने का प्रयास करता है। यह जिस कार्य को प्रारम्भ करता है उसे बीच में ही नहीं छोड़ देता अपितु सम्पूर्ण करके ही दम लेता है। यह दृढ़ निश्चयी, आस्तिक, कठिनाइयों का सामना करके अपने भविष्य को सुधारने वाला, सबको सन्देह की दृष्टि से देखने वाला, स्वार्थी, उत्साही और इच्छुक होता है। इसे अपने आचार-विचार का बहुत ध्यान रखना चाहिये। यह एक

अच्छी मन्त्रणा देने वाला होता है। इसके २८ वें और ४० वें वर्ष में विशेष परिवर्तन होंगे। यह ज्योतिष विद्या, मन्त्रशास्त्र और तान्त्रिक विद्या की तरफ भी रुचि रखने वाला होता है।

स्वास्थ्य:—यदि यह रोगी भी हो जाय तो बहुत शीघ्र स्वस्थ हो जाता है। इसे दुर्घटनाओं से चोटें लगने का भय रहता है। इसे खून की खराबी हो सकती है। सर्कुलेटरी सिस्टम में खराबी होने का भय हो सकता है। अतिसम्भोग से और जननेन्द्रिय में भी किसी तरह की बिमारी के होने का भय रहता है। दुर्घटनायें होने का भय रहता है। मलेरिया, विषमज्वर, शीतज्वर इत्यादियों के होने का भी भय हो सकता है। इसे चेचक भी हो सकती है। इसे सिगरेट-शराब इत्यादि से बचना चाहिये और भारी भोजन भी नहीं करना चाहिये। गाजरें, प्याज, अद्रक खाना अच्छा है। एप्रिल, मई, अक्तूबर और नवम्बर के महीने इसके स्वास्थ्य के लिये अच्छे नहीं होते। यह प्रायः इन्हीं महीनों में रोगी रहता है। इसे १८ वें, २० वें, २७ वें, ३० वें, ३६ वें, ४२ वें, ४१ वें, १२ वें, १० वें, ५ वें, २ सरे, ४५ वें, ४३ वें, ५४ वें, ६३ वें, ८६ वें और ७२ वें वर्षों में विशेष घटनायें होने का अन्देशा रहेगा।

भाग्य:—इसे अपने भाग्य को चमकाने के लिये बहुत से ऊँचाव-नीचाव और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि यह अपने भविष्य को उज्वल बनाना चाहता है तो इसे सख्त परिश्रम, लगन से और उत्साह से कार्य करना चाहिये। इसे अपने जीवन में काफी परिश्रम और कठिनाइयों के बाद सफलता प्रदान होगी।

लाल और नीला रंग इसे अपने पहनने के कपड़ों, चादरों, मेजपोष, पर्दों, गुलदस्तों इत्यादि के लिये उपयोग करना चाहिये, जिससे कि इसके मन की शान्ति हो और भाग्योदय हो सके। मंगलवार का दिन इसके लिये शुभ है। प्रत्येक १५ वर्ष के पश्चात् इसमें मुख्य परिवर्तन होंगे और कई विशेषतायें दृष्टिगोचर होंगी। वह समय इसके लिये चिरस्मरणीय होगा। भाग्यशाली नं० ९ है।

इसको अपना प्रत्येक कार्य किसी भी मास की ९, १८, २७ अथवा अपने जन्मतिथि वाले नम्बर पर करना चाहिये। जैसे एक मनुष्य १७ ता० को उत्पन्न हुआ है तो उसे ८, १७, २६ तिथियों में काम करना लाभदायक होगा। यह तारीखें यदि मंगलवार के दिन पड़े तो और भी फलप्रदायक होगा। पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, रोहिणी, हस्त, श्रवणा, उत्तरा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र अच्छे रहेंगे।

जीवनसाधनः—यह एक अच्छा गुप्तचर बन सकता है क्योंकि इसमें यह शक्ति अधिकता से पाई जाती है। यह डाक्टर, कम्पाउण्डर, नर्स, इत्यादि के कार्यों में भी सफलता प्राप्त कर सकता है। यह प्रेतात्मविद्या, मध्यस्थ और जनता के किसी कार्य में भी लग सकता है। यह अध्यात्म विद्या का ज्ञाता, आविष्कारक अथवा अन्वेषक भी बन सकता है। यह खानों के काम में, मिलिट्री में, शिकार पार्टी में, पुलिस में अथवा सरकार के किसी भी विभाग में अच्छी नौकरी पर लग सकता है। यह इन्श्योरेन्स कम्पनी के किसी भी कार्य में लग सकता है।

मित्रता :—इसके बहुत ही थोड़े मित्र होते हैं, क्योंकि यह अधिक मेल-जोल नहीं पसन्द करता। इसे अपने मित्रों को चुनने में बहुत सावधान रहना चाहिये अन्यथा अपने आचार-विचार खराब कर बैठेगा। इसकी मित्रता १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग और १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक लगभग के समय में उत्पन्न होने वालों में से हो सकती है अथवा ३, ६, १२, १५, २१, ९, १८, २४, २७, २४ और ३० वीं तिथियों में उत्पन्न मनुष्यों से हो सकती है। इसे इसी समय में उत्पन्न होने वालों में से अच्छे मित्र मिल सकेंगे और वे इसके सहायक भी होंगे।

पाणिग्रहण :—इसका वैवाहिक जीवन कई वार खराब हो जाता है। क्योंकि यह अपने जीवनसाथी की अशुद्धियों और अपराधों-दोषों को ही देखता है, तर्क-वितर्क करता है और कई वार चुभने वाली बातें भी कह देता है, जिससे की घर में कलह-कंकास होने का भय रहता है। कई कई वार तो एक दूसरे को त्यागने तक की नौबत आ जाती है। इसे शान्ति रखने के लिये आराम और धैर्य से काम लेना चाहिये। यदि यह १५ मार्च से १४ एप्रिल तक लगभग, १५ मई से १४ जून तक लगभग अथवा १५ जुलाई से १४ अगस्त तक लगभग के समय में उत्पन्न कन्या से विवाह करे तो इसकी गृहस्थी स्वर्णमय, सन्ततियुक्त और सुखमय व्यतीत होगी। अथवा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तिथियों में चाहे वह किसी भी मास की क्यों न हो उत्पन्न होने वालों से विवाह करने पर सुखी जीवन व्यतीत कर सकेगा विशेषतया ९, १८ और २७ तिथियों में। यदि कोई कन्या १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक

लग्नभंग के समय में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे वर को वरना चाहिये जोकि जबकि चन्द्रमा वृष, कर्क. वृश्चिक या मीन राशि में हो और उत्पन्न हो तो बहुत ही शुभ, भाग्यशाली, सुखपूर्ण गृहस्थी होगी। ऊपर कहीं तिथियाँ वर और कन्या के लिये एक समान ही हैं और शुभदायक हैं। किन्तु स्मरण रहे कि अपने जन्मदिवस पर कभी विवाह न करें अन्यथा बुरा परिणाम होगा। अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा और श्रवणा नक्षत्रों में भी भूलकर भी पाणिग्रहण न करें।

भाई-बहिन बहुत ही कम होंगे और सन्तानें अधिक होने पर भी सुख नहीं मिलेगा।

13 त्रयोदश अध्याय

भाग्यशाली अङ्क, तिथि और दिवस

यद्यपि मैंने महीनों के अनुसार प्रत्येक मास की ज्योतिष में भाग्यशाली अंक, तिथि और दिवस उद्धरित किया है, किन्तु मेरे कई मित्रों, हितेच्छुकों और बहुत से पृच्छकों के पूछने पर मैंने इस पुस्तक में ही एक अध्याय बढ़ाकर लिखने का विचार कर लिया, क्योंकि सबको पृथक् २ उत्तर देने से मेरा बहुत सा समय इसीमें ही निकल जाता था और इस प्रकार लिखने से सर्वसाधारण की भी शंका का निवारण सरलता से हो सकेगा।

इस अध्याय में मैंने कई पुस्तकों को पढ़ने के उपरान्त और प्रतिदिन के अनुभव के पश्चात् इस विषय को समझाने का प्रयास किया है। आप जिस तिथि में उत्पन्न हों, उस अंक को जन्मांक कहते हैं। यही अंक हमारे जीवन में एक विशेष महत्व रखता है। यद्यपि मासांक और वर्षांक भी हमारे जीवन में कुछ भाग भजते हैं, किन्तु हमारे ऋषि-महर्षियों से रचित अंकशास्त्रानुसार और हम अपने प्रतिदिन के सांसारिक कार्यों में जन्मांक को ही अधिक महत्वपूर्ण भाग भजते देखते हैं।

उदाहरणतया:—एक मनुष्य १५ जनवरी, १९२० के दिन उत्पन्न हुआ है तो हमें प्रतिदिन अपने कार्यों के लिये मासांक और वर्षांक को छोड़कर तिथि का ही अंक लेना चाहिये। यहां १५ नम्बर (१० + ५ या १ + ५=६) के मिश्रण से बना है। अंकशास्त्र में ० का कोई मूल्य नहीं है अतः हम भी यहां (०) शून्य को छोड़कर एकाकी नम्बर ही ग्रहण करेंगे। एकाकी नम्बर १-९ तक ही हैं। अतः यहां १५ का एकाकी अंक ६ हुआ तो इस

मनुष्य का जन्मांक ६ है। इसी तरह मान लो कि एक मनुष्य २८ मार्च, १९२८ में उत्पन्न हुआ है तो उसका जन्मांक (२ + ८ = १० = १) १ हुआ। जन्मांक के लिये हमेशा एकाकी अंक ही लेना चाहिये। इस छोटी सी पुस्तक में मैं अंकशास्त्र का विस्तृत उल्लेख नहीं कर सकता, फिर भी संक्षिप्त विवरण देकर अंकशास्त्र की महत्ता को समझाने का प्रयास करूंगा।

भाग्यशाली अंक वास्तव में कुण्डली के ग्रहों के बलाबल के अनुसार जाना जाता है। यथा:—कुण्डली में जो भी ग्रह सबसे बलवान् होगा उसका नम्बर उस मनुष्य का भाग्यशाली नम्बर होगा। सूर्य का नम्बर १ और ४ है। चन्द्र = २ और ७, मंगल=९, बुध = ५, गुरु=३, शुक्र = ६, और शनि = ८ है। किन्तु सर्वसाधारण के व्यवहार के लिये जन्मांक को ही भाग्यशाली अंक मानना ठीक रहेगा। यथा:—१४ मार्च, १९३५ के दिन एक कन्या का जन्म हुआ तो उसका जन्मांक ५ हुआ। यदि यह कन्या अपने नम्बर की तिथियों ५ वीं, १४ वीं और २३ वीं किसी भी इंग्लिश मास की तिथियों में प्रत्येक कार्य करे तो इसे काफी मात्रा में सफलता दृष्टिगोचर होगी।

यदि हम दिनों को अंको में विभाजित करें तो नीचे लिखे अनुसार विभाजित किया जा सकता है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९
रविवार	रविवार	मंगलवार	शनिवार	बुधवार	मंगलवार	रविवार	शनिवार	मंगलवार
सोमवार	सोमवार	वीरवार	रविवार	शुक्रवार	वीरवार	सोमवार	रविवार	वीरवार
	वीरवार	शुक्रवार	सोमवार		शुक्रवार		सोमवार	शुक्रवार
			शुक्रवार					

ऊपर के उदाहरण के अनुसार कन्या का जन्मांक ५ है। यदि ५ वीं,

१४ वीं अथवा २३ वीं तिथि को बुधवार या शुक्रवार पड़े तो वह तिथि और भी महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार से आप यदि अंकशास्त्र के अनुसार चलें तो थोड़े समय में ही अपने भाग्य में आश्चर्यजनक परिवर्तन होता देखेंगे।

मि० कीरो जो कि यूरोप का एक प्रसिद्ध अंकशास्त्री हो गया है। उसने भी अपने भारतीय ऋषिमहर्षियों से रचित अंकशास्त्र का अध्ययन करके ही अपनी पुस्तक लिखी थी। उसने अपनी पुस्तक में मनुष्य के जन्मांक से तिथि निकालने की एक अच्छी विधि उद्धरित की है जो कि मैं भी लोकोपकारार्थ यहां संक्षिप्त रूप में उद्धरित करता हूँ।

मान लो कि अपने नौकरी अथवा किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिये भाग्यशाली तिथि का ज्ञात करना है। सर्वप्रथम हमें जन्मांक, नामांक और उस तिथि का जिसको कि हम देखना चाहते हैं, ज्ञान होना चाहिये। इन सबका योगफल यदि अच्छे नम्बर वाला हो तो वह तिथि भाग्यशाली होगी।

मि० कीरो के अनुसार अक्षरों के नम्बर :—

A (अ) = 1 (१)	I or J (इ या ज)=1 (१)	R (र) = 2 (२)
B (व) = 2 (२)	K (क) = 2 (२)	S (स) = 3 (३)
C (स) = 3 (३)	L (ल) = 3 (३)	T (ट) = 4 (४)
D (द) = 4 (४)	M (म) = 4 (४)	U (उ) = 6 (६)
E (इ) = 5 (५)	N (न) = 5 (५)	W (व) = 6 (६)
F (फ) = 8 (८)	O (ओ) = 7 (७)	X (क्ष) = 6 (६)
G (ग) = 3 (३)	P (प) = 8 (८)	Y (य) = 1 (१)
H (ह) = 5 (५)	Q (क्यू) = 1 (१)	Z (ज़) = 7 (७)

अच्छे नम्बर :—१, २, ३, ५, ६, १०, १५, १७, १९, २१, २३, २४, २५, २७, ३२, ३३, ३४, ३६, ३७, ४१, ४२, ४५, ४६ और ५० अच्छे हैं। इनके सिवाय सब नम्बर छोड़ देने चाहिये।

उदाहरणतया:—२१ जुलाई, १९४० के दिन सुमन नामक कन्या उत्पन्न हुई। इसको अपने विवाह की अच्छी तिथि मालूम करना है। इसका जन्मांक (२ + १ = ३) ३ हुआ। नामांक ऊपर दिये के अनुसार (स = ३, उ = ६, म = ४, अ = १, न = ५; = १९ = १० = १) १ हुआ। मानों कि इसका विचार २७ दिसम्बर, १९५४ को विवाह करने का है तो तिथि अंक (२ + ७ = ९) ९ हुआ। अब जन्मांक, नामांक और तिथि अंक का योगफल करने से (३ + १ + ९ = १३) १३ हुआ। १३ नम्बर ऊपर दिये गये टेबल (चक्र) में नहीं है अतः अच्छा न होने के कारण यह तिथि ठीक नहीं है। अतः हमें अब कोई दूसरी तिथि का विचार करना चाहिये। यथा ६ जनवरी, १९५५ तो (६ + १ + ३ = १०) १० नम्बर आया। चक्र में इसे अच्छा नम्बर कहा गया है अतः यह तिथि विवाह के लिये शुभदायक होगी। इसी प्रकार से आप दूसरे विषयों का भी पता कर सकते हैं। भारतीय अंकशास्त्र के अनुसार यह वर्ष १९५५ विवाह के लिये इसे ठीक जंचेगा। यह १९४० में उत्पन्न हुई तो वर्षांक १ + ९ + ४ + ० = १४ आया। वर्ष १९४० + वर्षांक मिश्र १४ = १९५४ गत वर्ष हुआ अतः विवाह १९५४ अथवा १९५५ में हो सकता है। १ + ९ + ५ + ४ = १९ हुआ तो १९५४ वर्ष में वर्षांक १९ का योगफल किया तो १९७३ का वर्ष इसके जीवन में महत्वपूर्ण भाग अजेगा।

यह विधि थोड़ी टेढ़ी और सर्वसाधारण के लिये कठिन है अतः जन्मांक वाली तिथि ही लेना सरलतम होगा। यथा जन्मांक १ है तो १, १० वीं, १९ वीं और २८ वीं यदि २ हो तो २, ११, २०, २९ तिथियां लेना। इसी तरह से दूसरे अंकों का भी कर लेवें।

38)

आज की मांग...
उत्तम पुस्तकें !

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, देहली-110006
टेलीफ़ोन-2610[illegible]